ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमति ज्ञान

वैसाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५४४
वर्ष ५ अंक ६ मई 2012

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. एम. सी.*

चंदा	
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार २
संपादकीय ३
सेवा तथा नम्रता के पुंज श्री गुरु अमरदास जी ५
-डॉ. कुलदीप सिंघ 'हउरा'
महान जरनैल बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा . . ७
-डॉ. अनूप सिंघ
छोटा घल्लूघारा ११
-डॉ. गुरबचन सिंघ
स. हरी सिंघ नलूआ : जीवन परिचय १५
-डॉ. शमशेर सिंघ
सच्चा प्रेम (कविता) २०
-श्री प्रशांत अग्रवाल
साका पाउंटा साहिब का ऐतिहासिक वृत्तांत २१
-सिमरजीत सिंघ
आज़ाद भारत के श्रमिक वर्ग का खसता हाल क्यों? ३२
-स. सुरिंदर सिंघ निमाणा
पंजाबी गीत ३५
-स. सतिनाम सिंघ कोमल
भगत तेरै मनि भावदे . . . ३६
-स. रमेश सिंघ
ज़िंदगी बिन मोल जाये (कविता) ३९
-श्री प्रशांत अग्रवाल
नशों के सेवन के घातक प्रभाव ४०
-स. सुरजीत सिंघ
रक्त दान करो रक्त दान! (कविता) ४३
-स. बिकरमजीत सिंघ 'जीत'
गुर सिखी बारीक है . . . १३ ४४
-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ
गुरबाणी चिंतनधारा : ५८ ४८
-डॉ. मनजीत कौर
दशमेश पिता के बावन दरबारी कवि-५२ ५३
-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
खबरनामा ५५

गुरबाणी विचार

पुरा थाटु बणाइआ पूरै वेखहु एक समाना ॥
इसु परपंच महि साचे नाम की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥१॥
सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥
इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥१॥रहाउ॥
चहु जुगा का हुणि निबेड़ा नर मनुखा नो एकु निधाना ॥
जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति हरि नामा ॥२॥
जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ॥
गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि जगि ते पूरे परवाना ॥३॥
कहत नानकु सचे सिउ प्रीति लाए चूकै मनि अभिमाना ॥
कहत सुणत सभे सुख पावहि मानत पाहि निधाना ॥४॥ *(पन्ना ७९७)*

बिलावल राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में श्री गुरु अमरदास जी प्रभु-नाम-सिमरन की महिमा का बखान करते हुए फरमान करते हैं कि हे जीव! उस अकाल पुरख ने नाम-सिमरन की युक्ति सब जीवों को एक समान बताई है। यह युक्ति प्रत्येक युग में एक समान चली आ रही है। इस जगत में प्रभु-नाम-सिमरन करने से ही मान-सम्मान प्राप्त होता है। कहीं कोई इसका घमंड न कर ले। सतिगुरु के उपदेश को हृदय में ग्रहण कर जिसे इसकी समझ आ जाती है वो अपने सतिगुर के जैसा ही हो जाता है अर्थात् वो भी नाम-सिमरन की कमाई करने लग जाता है। जो जीव गुरु की बाणी, गुरु की शिक्षा के साथ सांझ पा लेता है उसके हृदय में प्रभु-नाम सदा टिका रहता है। गुरु जी का आगे फरमान है कि गुरु की शरण में जाने से जीव को यह समझ आ जाती है कि युग चाहे कोई भी हो, सब में प्रभु-नाम-सिमरन ही श्रेष्ठ है। भले ही किसी युग में जत, संयम, तीर्थ-स्नान आदि प्रमुख रहे हों, मगर कलयुग में परमात्मा का नाम-सिमरन ही सर्वोपरि कर्म है। जत, संयम, तीर्थ-स्नान आदि के बावजूद भी यदि गहनता से विचार किया जाए तो पता चलता है कि जिन्होंने हरि-सिमरन किया है वे ही गुरमुख हैं, वे ही सम्पूर्ण हैं, स्वीकार हैं। गुरु जी के शबद की अंतिम पंक्तियों में फरमान है कि जो जीव सदा स्थिर रहने वाले परमात्मा के साथ प्यार पाता है, उसके अंदर से अभिमान खत्म हो जाता है। जो जीव 'नाम' जपते हैं, जो 'नाम' सुनते हैं, वे सब आत्मिक आनंद की अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं और ऐसे ही श्रद्धामयी जीव प्रभु-नाम का खज़ाना पा लेने में सफल हो जाते हैं।

किरत विरत करि धरमु दी . . .

सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने तीन प्रमुख सिद्धांतों पर सिक्ख धर्म की स्थापना की। "नाम जपो, किरत (श्रम) करो तथा वंड (बांट कर) छको" के ये तीन सिद्धांत समाज में वर्णनयोग्य क्रांति लाए। नाम जपने के सिद्धांत पर गहराई से विचार करते हुए भक्ति लहर में आई क्रांति सहजता से ही अनुभव होती है। श्री गुरु नानक देव जी के लिए नाम जपने का सिद्धांत घर-बार त्याग कर जंगलों में विचरण करना, कर्मकांड करना या किसी भी रूप में समाज पर बोझ बनना नहीं है। श्री गुरु नानक देव जी के नाम जपने के सिद्धांत की जड़ें उत्तरी भारत में उत्पन्न भक्ति लहर में हैं। भक्ति लहर की उत्पत्ति मुख्यत: बाहरी हमलावरों एवं कथित धर्म-अगुओं द्वारा जनता की की जाती लूट-खसूट के विरोध के रूप में हुई है। लूटी जाती जनता को जागृत करने के लिए कुछ चेतन एवं संवेदनशील शख़्सियतें सामने आईं। ये शख़्सियातें लोगों के प्यार एवं सत्कार से लबरेज़ भक्तों के रूप में प्रसिद्ध हुईं। इन्होंने जनता के दुख-दर्द दूर करने के लिए परमात्मा की प्रेमा-भक्ति की ओट प्रदान करवाकर, किरत करने की प्रेरणा से समाज-सुधार लाने में सफलता प्राप्त की। यह कोई आसान राह नहीं थी। भक्ति लहर के संचालकों को इस राह पर चलते हुए कदम-कदम पर अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस लहर के संचालक जात-पात, ऊंच-नीच तथा आराम भरी ज़िंदगी से कोसों दूर थे। तथाकथित स्वर्ण जातियों, साधन-सम्पन्न लोगों एवं स्थापित तथाकथित पुजारी वर्ग का सख़्त विरोध करना इनके लिए मुख्य चुनौती था। आखिर में विजय मेहनती वर्ग के इन भक्त साहिबान की ही हुई और चारों ओर जय-जयकार फैल गई। इन भक्त साहिबान में से भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी की बाणी में से ठोस हकीकतें प्रकट होती देखी-सुनी जा सकती हैं। भक्ति लहर के संचालक भक्त साहिबान हमें कभी भी निठल्ले वर्ग की बात करते नज़र नहीं आते। ये हर समय अपने व्यवसाय में मस्त एक अकाल पुरख की प्रेमा-भक्ति में लीन ही प्रतीत होते हैं। ये तथाकथित पुजारी वर्ग की दिखावा-मात्र पूजा-उपासना तथा दान-दक्षिणा पर टेक रखने की प्रवृत्ति का डट कर विरोध करते हैं। भक्त साहिबान जनता के लिए उच्च एवं आदर्श मॉडल पेश करके किरत (श्रम) की महानता को दर्शाते हैं। भक्त कबीर जी ताना बुनते हुए, भक्त नामदेव जी कपड़े रंगते हुए, भक्त रविदास जी जूते गांठते हुए नाम-रंग में रंगे रहते हैं। उनकी किरत-कमाई उनके भक्ति-साधनों में कोई विघ्न नहीं डालती बल्कि समाज-निर्माण में अहम योगदान डालती है।

गुरु साहिबान खुद गृहस्थी थे। उनको इस बात का पूर्ण ज्ञान था कि मनमुख वैराग्य की मामूली-सी लहर के वश में पड़ कर, अपना गृहस्थी जीवन त्याग कर पेट भरने के लिए अन्य पर बोझ बन जाता है। गुरबाणी का फरमान है :

मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के घर हेरै ॥ ग्रिह धरमु गवाए सतिगुरु न भेटै दुरमति घूमन घेरै ॥ दिसंतरु भवै पाठ पड़ि थाका त्रिसना होइ वधेरै ॥ काची पिंडी सबदु न चीनै उदरु भरै जैसे ढोरै ॥

गुर साहिबान ने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए किरत-कमाई को गुरमति

जीवन-दर्शन का प्रधान तत्व बना दिया। गुरु साहिबान ने गुरबाणी में साधक के लिए नियम कायम कर दिये :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥

भक्त कबीर जी ने भी भक्त नामदेव जी तथा भक्त त्रिलोचन जी के साथ विचार-विमर्श करते हुए यही स्पष्ट किया है :

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥ हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥

गुरमति-भक्ति का उद्देश्य किसी तरह के निठल्लों का दल खड़ा करना नहीं था। गुरमति-भक्ति समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझती थी, इसलिए गुरु साहिबान ने समाज से भगौड़ा करने वाली वृत्ति को समाप्त करके किरत-कर्म के सिद्धांत की स्थापना की। श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥

श्री गुरु नानक देव जी तथा अन्य गुरु साहिबान ने समाज को युगों-युगांतरों तक दिशा देने के लिए इन सिद्धांतों को अपने जीवन में धारण किया। श्री गुरु नानक देव जी ने व्यापार, नौकरी, खेती आदि किरत को जीवन में धारण किया। गुरु साहिबान ने अपनी बाणी के साथ अन्य महापुरुषों की बाणी भी संभाली। यह बाणी अब श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में सारी दुनिया को प्रकाश बांट रही है। नाम जपते हुए की आदर्श किरत को बांटकर छकने अर्थात् अपनी कमाई में से वित्त के अनुसार जरूरतमंदों की आवश्यकता पूरी करना भी सिक्ख धर्म का प्रमुख सिद्धांत है। सिक्ख धर्म में किरत करने के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि आवश्यकता से अधिक धन-सम्पत्ति इकट्ठी नहीं करनी चाहिए। आवश्यकता से अधिक सामग्री जरूरतमंदों में बांट देनी उचित है। ऐसा करने से ही मनुष्य वास्तविकता के भेद को समझ सकता है। लंगर-प्रथा *"घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥"* के सिद्धांत की पुष्टि करती है। बाबा बंदा सिंघ बहादर तथा मिसलों के समय किसानों को ज़मीन के मालिकाना हक देना भी इसी सिद्धांत की पुष्टि करता है। आज हमें आवश्यकता है कि हम सिक्खी के इन सिद्धांतों को समझें। किरत से दूर होती जा रही जनता को नाम जपते हुए, सच्ची किरत करते हुए, बांट कर छकने के सिद्धांत पर पहरा देने की विशेष आवश्यकता है। लोगों की माया (धन) पर टेक रखने वाले निठल्ले एवं भेसधारी तथाकथित संतों का विरोध करके गुरु-भक्तों द्वारा बख्शे अमीर सिद्धांत पर डटकर पहरा देना समय की आवश्यकता है।

एक बार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का दरबार लगा हुआ था। गुरु जी संगत को सिक्खी का उपदेश दे रहे थे। विचार-विमर्श करते हुए अचानक गुरु जी को प्यास महसूस हुई तो उन्होंने पानी पीने की इच्छा प्रकट की। पास में बैठा एक सुंदर नौजवान आया और गिलास को अच्छी तरह साफ करके स्वच्छ शीतल जल भर लाया। जब उसने बड़े ही सम्मान से गुरु जी के आगे जल का भरा गिलास पेश किया तो अचानक गुरु जी की नज़र उसके हाथों पर पड़ी। गुरु जी ने उस नौजवान से पूछा कि "वो क्या काम करता है? नौजवान ने उत्तर दिया, जी काम करने की कभी जरूरत ही नहीं पड़ी, घर में नौकर-चाकर हैं, काफी जमीन-जायदाद है।" नौजवान का उत्तर सुनकर गुरु जी ने उसके हाथ से पानी पीने से मना कर दिया और कहा, जो हाथों द्वारा किरत नहीं करते उनके हाथों से खाना-पीना हराम है।"

सेवा तथा नम्रता के पुंज श्री गुरु अमरदास जी

-डॉ. कुलदीप सिंघ 'हउरा'

श्री गुरु अमरदास जी के कठिन परिश्रम, सेवा तथा धैर्य को देखकर श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरिआई की दात जब उनकी झोली में डाली तो दातू जी एवं दासू जी चकित रह गए। उनका विचार था कि गुरु-पुत्र होने के नाते यह अधिकार उनका है, जो श्री गुरु अमरदास जी ने उनसे छीन लिया है। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरगद्दी पर विराजमान होकर किसी भी झगड़े में न पड़ते हुए नम्रता सहित ब्यास के किनारे (गोइंदवाल) जा डेरा लगाया। श्री गुरु अमरदास जी गर्मी-सर्दी में पहर रात रहते अमृत वेले जागते, स्नान करते स्वच्छ वस्त्र पहनकर समाधि में लीन हो जाते। अमृत वेले भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी रबाबी आकर कीर्तन करते; कीर्तन-समाप्ति के बाद गुरु साहिब संगत को उपदेश करते। इस तरह सवा पहर दिन चढ़ने तक वे जिज्ञासुओं का कल्याण करते और फिर दोपहर के समय संगत के साथ मिलकर परशादा छकते। लंगर में संगत के लिए तरह-तरह के भोजन तैयार होते, मगर गुरु जी सादा भोजन ही छकते।

लंगर में सब वर्णों के लोग एक ही पंगत में बैठकर परशादा छकते। यहां राजा-रंक समान थे, ऊंच-नीच का कोई भेदभाव नहीं था, सामाजिक समानता की यह एक अति उत्तम मिसाल थी। संध्या के समय कथा होती, फिर कीर्तन के बाद लगभग पहर रात रहते गुरु साहिब आराम करते।

श्री गुरु अमरदास जी तथाकथित वर्ण-आश्रम के पक्ष में नहीं थे। उनका कथन है :

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥
(पन्ना ११२७-२८)

श्री गुरु अमरदास जी की सहनशीलता भी कमाल की थी। गोइंदवाल साहिब में शेख़ वर्ग के लड़कों ने गुलेल मारकर सिक्खों के पानी भरने वाले घड़े तोड़ दिए तो गुरु साहिब ने मशकों को प्रयोग में लाने की आज्ञा की। जब मशकें भी तीरों से बिंधी जाने लगीं तो गुरु साहिब ने गागरों को प्रयोग में लाने के लिए कहा। जब लड़कों ने पत्थर मारकर गागरें भी अवट कर दीं तो भी गुरु साहिब ने क्षमा की खड़ग हाथ से नहीं छोड़ी। उन्होंने फरमान किया :"क्षमा ऐसी खड़ग है जो मारना नहीं, बल्कि सहना सिखाती है।"

सिक्खों के पूछने पर कि अहंकार से छुटकारा कैसे हो सकता है, गुरु साहिब ने फरमाया :"केवल कहिण विच नहीं सगों निमरता अमल विच लिआओ। कठोर बचन ना बोलो। जे कठोर बचन सुणो तां वी सहिणशीलता रखो। सरबत दा भला चितवो, किसे दा बुरा न करो। आपणे मन विचों ईरखा हटाओ। सभ दा भला चितवीए तां वितकरा घटदा है। वितकरा घटेगा तां अंदरों हउमै घटेगी, खुदगरज़ी घटेगी। खुदगरज़ी हउमै दा ही सरूप है, जो वरतों विच प्रगट हुंदी है।"(*अशट गुर चमतकार, पृष्ठ १६३*)

सुलतानपुर का भट्ट भिक्खा गोइंदवाल साहिब आया। लंगर में से परशादा छका, गुरु जी के दर्शन किए। उसने गुरु जी को मन के भ्रम बताए। गुरु जी का उत्तर सुनकर वह प्रभावित हुआ। कुछ समय गुरु जी के पास टिका, फिर वापिस अपने घर चला गया। उसको जो निजी तजुर्बा हुआ, उसका वर्णन उसने दो सवैयों में किया, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। दूसरे सवैये में उसको गुरु जी से जो प्राप्त हुआ, उसका वर्णन किया है :

गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥
सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥
काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥
निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥
कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीअउ ॥
गुरु मिल्यिउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥ *(पन्ना १३९५)*

दरिया ब्यास का पानी पीने योग्य न रहने के कारण गुरु साहिब ने गोइंदवाल साहिब में एक बाउली बनवाई। उसकी एक तरफ कुएं की भांति रहंट चलता था, दूसरी तरफ सीढ़ियां बनी हुई थीं, जो नीचे बाउली के जल तक पहुंच जाती थीं।

(सांझा) लंगर एवं (सांझी) बाउली तथाकथित उच्च-जातीय लोगों को अच्छे न लगे। उन्होंने अकबर बादशाह के पास शिकायत की कि गुरु साहिब सामाजिक रस्मों को न खुद मानते हैं और न ही लोगों को मानने देते हैं। अकबर उन दिनों लाहौर आया हुआ था। इन शिकायतों का उत्तर देने के लिए गुरु साहिब ने भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को लाहौर भेजा। जब अकबर को पता चला कि गुरु साहिब का मत सर्व-सांझा तथा एक परमात्मा की बंदगी करना है तो वह बहुत प्रभावित हुआ।

श्री गुरु अमरदास जी ने 'अनंदु' नामक बाणी की रचना की। इस बाणी में उन्होंने वाहिगुरु तथा गुरु की प्राप्तियों की खुशियां तथा आनंद लिखे हैं। इसी बाणी में अमर-आनंद के बारे में विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार सिक्खों में हर खुशी-गमी के मौके पर इस बाणी का पाठ करने का रिवाज है। "जब सतिगुरु की प्राप्ति हुई तो सहज-अवस्था के रंग में मन में बधाइयां बजीं। आनंद की अवस्था उन भाग्यशाली प्राणियों को प्राप्त होती है जिनके शुभ कर्मों के कारण सारे उद्देश्य पूरे होते हैं तथा उनको प्रभु की प्राप्ति होती है।" यह है 'अनंदु' बाणी का सार अथवा निष्कर्ष।

'तवारीख गुरू खालसा' के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी ने बाबा बुड्ढा जी तथा कुछ अन्य प्रमुख सिक्खों को भाई जेठा जी के साथ भेजकर हुक्म किया कि गांव तुंग, गिलवाली तथा सुलतानविंड की सीमा में जाकर एक नया नगर आबाद करो। इस नगर का नाम 'गुरु का चक्क' (बाद में श्री अमृतसर) प्रसिद्ध हुआ। कुछ मकान आदि का निर्माण हो जाने के बाद यहां 'संतोखसर' नामक सरोवर तैयार किया गया। उसके उपरांत 'अमृत सर' सरोवर तैयार हुआ। इसी सरोवर के मध्य बाद में श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करवाया।

एक दिन श्री गुरु अमरदास जी ने अपने परिवार के मुखी सदस्यों को पास बुलाकर कहा, "हमें अकाल पुरख से बुलावा आ गया है और अब हमने देह त्यागकर पुन: अपने प्रभु के चरणों में जाकर निवास करना है।" उस समय के गुरु साहिब के कहे वाक्य बाबा सुंदर जी द्वारा उच्चारण की गई *'सदु'* नामक बाणी में इस तरह दर्ज हैं :

मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो
मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥
हरि भाणा गुर भाइआ
मेरे हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ (पन्ना ९२३)

आप जी ने आज्ञा की कि गुरगद्दी पर अब भाई जेठा जी अर्थात् श्री गुरु रामदास जी विराजमान होंगे। आप जी ने अंतिम शिक्षा यह दी :

अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ *(पन्ना ९२३)*

इस प्रकार आयु में वृद्ध किंतु युवा विचारों वाले सतिगुरु जी हमारे लिए जीवन सफलता से गुजारने के लिए अपने पद-चिन्ह छोड़कर शारीरिक रूप से इस संसार को त्याग कर परमज्योति में विलीन हो गए तथा गुरु-ज्योति की प्रभुता श्री गुरु रामदास जी को सौंप गए।

(अनुवादक : स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

महान जरनैल बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा ज़मींदारी-प्रथा खत्म करने का ऐतिहासिक कारनामा

*-डॉ. अनूप सिंघ**

सिक्ख दर्शन तथा इतिहास का एक प्रमुख सरोकार तथा पासार विहीन तथा पीड़ित पक्ष के हक में खड़े होना; हक, सच तथा न्याय की रखवाली के लिए सिर हथेली पर रखकर जूझना, ज़ोर, जुल्म एवं जब्र का अंतिम समय तक डटकर मुकाबला करना है। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब सहज अवस्था का एक पासार बताते हुए उच्चारण करते हैं:

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

सिक्ख इतिहास तथा विरासत शहीदों के सिरताज श्री गुरु अरजन देव जी की लासानी शहादत से लेकर इंग्लैंड में बसते एक सिक्ख नौजवान द्वारा वर्ष २०१० के आरंभ में किसी स्त्री के नारीत्व की उल्लंघना बर्दाश्त न करते हुए शहादत का जाम पीने तक भरपूर है।

सिक्ख दर्शन के पासार सम्बंधी दो तथ्य मुझ जैसे साधारण पाठक को आश्चर्य भरपूर खुशी देते हैं :

एक जर्मन चिंतक के अठारहवीं शताब्दी के मध्य में पेश एक सिद्धांत को बेहद प्रचारा गया है कि सरवहारा ही सामाजिक परिवर्तन के लिए मात्र एक जमात है, जबकि यह सिद्धांत मौलिक रूप में सिक्ख गुरु साहिबान सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी में पेश कर चुके हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तो १७५६ बिक्रमी में खालसे की सृजना के समय इसको जत्थेबंदक स्तर पर लागू कर चुके हैं। यह सिद्धांत था सामाजिक परिवर्तन के लिए, ज़ोर-जुल्म के विरोध के लिए, हक, सच एवं न्याय की रखवाली के लिए सामाजिक रूप से सताये हुए वर्ग ही प्रमुख रूप में जांबाज बहादुरों की तरह लड़-मर सकते हैं। गुरुद्वारा रवालसर साहिब (हिमाचल प्रदेश) में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पहाड़ी राजाओं के एक समूह के साथ हुई बातचीत इस समझदारी का अकट प्रमाण है।

दूसरा, बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में रूस में जमीन किसानों को देकर धरती की उपजाऊ क्षमता का लाभ ज्यादा से ज्यादा लोगों को देने का ऐतिहासिक कदम उठाया गया, जबकि यह महान कारनामा तो बाबा बंदा सिंघ बहादर इससे २१० वर्ष पहले मई, १७१० ई में सरहिंद फतहि करने के बाद ही लागू कर गए हैं। इस संक्षिप्त पृष्ठभूमि में हम बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा अपने राज्य-काल के समय इस ऐतिहासिक कारनामे को विचारने का यत्न करेंगे।

मुगल बादशाहों के दमन-चक्र तथा गैर-मुसलमान आम भारतीय लोगों और विशेषत: निम्न-जातीय लोगों की दयनीय स्थिति के बारे में नांदेड़ में 'माधोदास बैरागी' को अवगत

**१४२, अरबन असटेट, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५, मो. ९८७६८-०१२६८*

करवाकर, दार्शनिक योद्धा तथा महामानवीय शख़्सियत के मालिक श्री गुरु गोबिंद सिंघ ने अपने के थापड़े (थापी) एवं आशीर्वाद से 'सिंघ' सजाकर 'बंदा सिंघ बहादर' में परिवर्तित कर दिया। गुरु साहिब ने उसके मौलिक गुणों को पहचानते हुए, उसमें वीरता एवं जुझारूपन जगाकर उसको पंजाब के सिक्खों के नाम हुकमनामा दिया, जिसमें उनको बाबा बंदा सिंघ बहादर को अपना अगुआ समझने तथा दुष्टों को सोधने के लिए खालसे के केसरी ध्वज तले इकट्ठे होने का आदेश दिया। उन्होंने एक नगाड़ा, निशान साहिब, अपने तरकश में से पांच तीर तथा कुछ अन्य शस्त्र भी बख़्शिश किए। सलाहकार कौंसिल के पांच प्यारों के रूप में पांच सिंघ-- १. भाई बिनोद सिंघ, २. भाई कान्ह सिंघ, ३. भाई बाज सिंघ, ४. भाई दइआ सिंघ, ५. भाई रण सिंघ साथ भेजें। इनके अलावा अन्य बीस सिंघ भी साथ भेजे। इस तरह बाबा बंदा सिंघ बहादर २५ सिंघों समेत पंजाब की ओर रवाना हुए। पंजाब के नज़दीक पहुंचने पर उनके समर्थकों की संख्या हज़ारों तक पहुंच गई। खाफ़ी खां के अनुसार २-३ महीनों में ही बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ चार हज़ार घुड़सवार तथा ७८०० पैदल लड़ाकू आकर मिल गए। डॉ. गोकुल चंद नारंग के अनुसार, "जल्द ही पैदल सैनिकों की संख्या ८९०० हो गई और अंत में चालीस हज़ार तक पहुंच गई।" बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ वे मिले जो सदियों से आर्थिक लूट तथा सामाजिक शोषण का शिकार थे। सोधा उनको गया जो लूट के माल पर सरदारी स्थापित करके विलासिता भरी तथा भोगमयी ज़िंदगी जीते थे तथा समूचे समाज के लिए एक लाहनत साबित होते थे।

दशम पातशाह के आदेश पर व बाबा जी की चुंबकीय तथा प्रभावशाली शख़्सियत के प्रभाव के कारण हज़ारों लोग उनके साथ आ मिले। मुगल हकूमत तथा विशेषत: सूबा सरहिंद के जुल्म अभी लोक-मानसिकता में तरो-ताज़ा थे। बंदा सिंघ बहादर अमृत छकने के बाद सिक्ख दर्शन का निष्ठावान तथा सच्चा-सूचा पैरोकार तथा गुरु साहिबान द्वारा दर्शाए मार्ग पर दृढ़ता सहित चलने वाला श्रद्धालु बन गया। वे आत्मविश्वास से भरपूर तथा निश्चय कर अपनी विजय हासिल करने वाले थे। बाबा जी गरीबों एवं दलितों के समर्थक थे और राजनीतिक लालसाओं से पूर्णत: मुक्त थे। वे लासानी शख़्सियत के मालिक थे, स्वतंत्र खालसा राज्य की नींव रखने वाले थे। वे युद्ध-कला में बेहद प्रवीण थे। स. करम सिंघ हिस्टोरीअन के अनुसार, " वो इतना ज़ोरावार नहीं था जितना कि फुर्तीला था तथा तीर व खंजर के बिना अन्य कोई हथियार उसके मन को भाता नहीं था। वो तगड़ा सवार तथा शरीर का सख़्त था और लगातार कई दिनों की मंज़िलें उस पर जरा-भी असर नहीं करती थीं।

सरहिंद पर हमला करने के पीछे एक महत्वपूर्ण मंतव्य था ज़ालिम राज्य की जगह (पंजाब के) साधारण लोगों का राज्य स्थापित करना तथा सिक्ख लहर का अग्रणी विकास करना। बाबा बंदा सिंघ बहादर का संघर्ष आत्म-रक्षा तक ही सीमित न रहा, उन्होंने जाबिर राज्य से ज़ोरदार टक्कर ली। उन्होंने साधारण लोगों और तथाकथित निम्न जातीय लोगों को जीते हुए अलग-अलग इलाकों का हाकिम बना दिया तथा ज़मींदारी/जागीरदारी प्रथा खत्म करके ज़मीन आम किसानों के हवाले कर दी। उन्होंने सांप्रदायिक जुनून तथा धार्मिक रूढ़ियों से ऊपर उठकर सबके साथ समानता वाला व्यवहार किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादर की उपरोक्त जीतों तथा पेश अमानवीय व्यवस्था में उठाए लोक-भलाई के कदमों से परिश्रमी किसान एवं तथाकथित दलित वर्ग उनके साथ जुड़ गया। यह घटनाक्रम पहले सिक्ख गुरु साहिबान के समय और विशेषत:

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय घटित होना शुरू हुआ था। बाबा जी की नांदेड़ से पंजाब में आमद से उक्त वर्गों ने उनके साथ मिलना शुरू कर दिया। बाबा बंदा सिंघ बहादर दिल्ली से उत्तर-पश्चिम दिशा में ५० किलोमीटर दूर स्थित खरखोदा में पहुंचे तो इलाके के छोट-छोटे ज़मींदारों ने उनको अपना अगुआ प्रवान कर लिया। बाद में ब्यास एवं रावी के दोनों किनारों पर बसे छोटे ज़मीन-मालिक भी आप जी के साथ मिल गए। सरहिंद के सूबे में भी ऐसा ही घटित हुआ। इरविन अपनी पुस्तक 'Later Mughals' के प्रथम भाग के पृष्ठ ९८ पर लिखता है-- "जो ज़मींदार बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ कदम मिलाकर चले वे ज्यादातर जट्ट या जाट थे। ये गांव स्तर के ज़मींदार तथा किसान थे। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने जागीरदारों को हटाकर इन कथित छोटे लोगों को उनके इलाकों में ज़मीन के मालिक बनाया। जो लोग बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ मिले, वे ज़मीन के मालिकाना हक लेकर अपने गांवों में लौटे तथा मालिकी प्राप्त कर गए।

बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सात सौ वर्ष की विदेशी हकूमत को एक अति ज़ोरदार झटका दिया तथा उसकी जड़ें पूरी तरह से हिला दीं। उनके जीते-जी मुगल बादशाह बहादुर शाह, फरुख्सियर तथा तीन-चार सूबों के गवर्नर एक भी रात अमन-चैन से नहीं सो सके। मुगल हाकिमों की कुल फौज का दो-तिहाई हिस्सा बाबा बंदा सिंघ बहादर को काबू करने में छः वर्ष लगा रहा। इस समय के दौरान लगभग ३५ हज़ार सिक्ख स्वाभिमान तथा स्वै-शासन की खातिर जूझते हुए शहादत का जाम पी गए। उन्होंने यह रक्त-रंजित संघर्ष आम किसानों, छोटे ज़मींदारों तथा निम्न-जातियों के समझे जाते लोगों पर थोपे गए अत्याचारी तथा अन्यायपूर्ण राज्य के विरुद्ध था। सेना एवं शक्ति के मालिक इस संघर्ष को दबाने में असफल हुए। बाबा बंदा सिंघ बहादर की अगुआई में आम लोगों के बुनियादी अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष की शुरूआत थी। जब भी, जहां भी ऐसा संघर्ष ज़ालिमों के विरुद्ध चलेगा और चलता रहेगा बाबा बंदा सिंघ बहादर का नाम प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

औरंगजेब के समय मनसबदारी तथा जागीरदारी प्रबंध में भी राजनैतिक-आर्थिक पक्ष से बहुत बड़े बिगाड़ आए। चाहे यह प्रबंध आम किसानों तथा दलितों की क्रूर लूट पर आधारित था, परंतु इन बिगाड़ों ने आम लोगों की आर्थिकता को बर्बाद कर दिया। प्रत्येक मनसबदार को नकद तनख्वाह की जगह जागीर ही प्रायः मिला करती थी। दूसरा, एक जागीरदार ज्यादा समय के लिए एक जागीर पर नहीं रहने दिया जाता था। हाकिम जागीरदारों को इधर-उधर करते ही रहते थे। इस अनिश्चितता के कारण जागीरदार अपने इलाके के किसानों की ज्यादा से ज्यादा लूटमार करने के यत्न जारी रखते थे। जागीरदारों तथा मनसबदारों की संख्या बढ़ने के कारण जागीरों की अलाटमेंट भी पैसे तथा पहुंच का सदका ही होती थी। कई बार अलाटमेंट हो जाती थी परंतु कब्ज़ा नहीं मिलता था। जागीर-प्राप्ति के लिए जागीरदारों के दरमियान आपसी तनाव तथा टकराव भी बना रहता था, परंतु क्लेश हमेशा आम लोगों का ही होता था। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने मनसबदारी प्रबंध तथा किसानों की समस्याओं को बारीकी से समझा तथा सरहिंद फतहि के बाद ज़मीन किसानों को देने का ऐतिहासिक फैसला लिया। इस तरह किसान तथा छोटे जमींदार अपने आप को सुरक्षित महसूस करने लगे और उन्होंने पूरी तरह से प्रेरित होकर बाबा जी की मदद की। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने जो भी इलाका जीता उसकी ज़मीन जागीरदारों से छीनकर किसानों तथा छोटे ज़मींदारों में बांट दी। आज यदि पंजाब में जागीरदार प्रबंध तथा

जागीरदारी प्रथा नहीं है तो इसका श्रेय बाबा बंदा सिंघ बहादर को ही जाता है। ज़मीन किसानों को देने की नीति सिक्ख दर्शन तथा गुरबाणी के उद्देश्यों को लागू करने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम समझना चाहिए।

बाबा बंदा सिंघ बहादर समय के शासकों तथा उनके चौधरियों से प्राप्त हुए धन-माल को जरूरतमंद लोगों के दरमियान स्वयं बांटते या अपनी निगरानी तले उसकी बांट करवाते थे। घुड़ाम पर किए हमले के समय बाबा जी ने हुक्म दिया था कि गाय तथा भैंसें आदि जो आम लोगों की थीं, वापिस कर दी जायें। भाई रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार, जो भी भूखा बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास आया उसकी उन्होंने भूख दूर कर दी। छोटी-बड़ी सारी लड़ाइयों के बाद जाबिरों से प्राप्त धन-माल आदि अपनी सेना तथा आम लोगों में बांट दिया जाता। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने अपने कार्यकाल मात्र पौने आठ वर्ष में ही दबे-कुचले लोगों की आंखों में आत्म-विश्वास, स्वाभिमान तथा स्वतंत्रता के न बुझने वाले चिराग जगा दिए। भारतीय इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब किसानों को उनकी खोई ज़मीन वापिस दिलाकर उन्हें ज़मीनों के मालिक बना दिया गया। ये वे भू-स्वामी थे जिनकी ज़मीन बड़े जागीरदारों एवं ज़मींदारों ने छीनकर उनको भूमिहीन बना दिया था। बाबा बंदा सिंघ बहादर का अल्प समय का राज्य वास्तव में वक्ती सैनिक कब्ज़ा था। डॉ. गंडा सिंघ लिखते हैं, "एक ही खास बात जो बाबा बंदा सिंघ बहादर कर सके, वो थी मुगलों के जमींदारी ढंग को ख़त्म कर देना। व्यक्तिगत व्यवहारिक तजुर्बों से सिंघों को पता था कि जनता इससे बहुत दुखी है और उनको सुख केवल इसके मिटा देने से ही प्राप्त हो सकता है।" 'सही-उल-अख़बार' का कर्ता लिखता है कि "बादशाहों के समय हर वो आदमी, जो पुराने समय कई परगनों का मालिक चला आता था, ज़मींदार कहलाता था। यह मनमर्जी से किसानों को रख एवं निकाल सकता था। ये ज़मींदार आम तौर पर बड़े सरकारी अफ़सर होते थे जो अपने आप में मनमौजी बादशाह की तरह होते थे और किसी अन्य की कम ही परवाह किया करते थे। सरकारी हाकिम भी तब तक इनके अंदरूनी प्रबंध में दख़ल नहीं देते थे, जब तक ये नियत सरकारी मामला देते रहते थे। सरकार इस बात की परवाह नहीं करती थी कि ज़मींदार लोग खुद कितनी एवं कैसे उगराही करते हैं। परिणाम यह होता था कि किसान लोगों की दशा धीरे-धीरे पराधीन दासों जैसी हो जाती थी। . . सिक्ख ज्यादातार, चूंकि देहाती किसानों में से बने हुए थे, इसलिए वे अच्छी तरह जानते थे कि दर्द कहां और कैसे हो रहा है। ज़मींदारी प्रबंध तले लोगों पर हो रहे जुल्म की ओर कोई भी ध्यान नहीं दे रहा था, इसलिए हाथ में ताकत आ जाने से जो काम प्राकृतिक रूप से उनको करना चाहिए था या उन्होंने किया, वो था इस ज़मींदारी निज़ाम को जड़ से उख़ाड़ फेंकना। सिक्ख इस प्रशंसा के सबसे ज्यादा हकदार हैं कि उन्होंने अपने सीमित समय में इस पहलेठी राज्य में एक बहुत बड़ा सुधार करके रख दिया। असली किसान (हलवाह) भूमि के मालिक बन गए तथा उनके इलाके में से यह सदैव बहता मवादयुक्त फोड़ा हट गया।"(बंदा सिंघ बहादर, पृष्ठ ४५)

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

छोटा घल्लूघारा

*-डॉ. गुरबचन सिंघ**

अठारहवीं शताब्दी का इतिहास दो घल्लूघारों का गवाह है। १७४६ ई में हुए घल्लूघारे को 'छोटा घल्लूघारा' के नाम से जाना जाता है।

स. रतन सिंघ (भंगू) द्वारा रचित 'प्राचीन पंथ प्रकाश' में छोटे घल्लूघारे की पृष्ठभूमि अंकित की गई है। कुछ फारसी स्रोतों से भी इस सम्बंधी बिखरी हुई सामग्री मिलती है। जकरिया ख़ान की मृत्यु के उपरांत उसके दो पुत्र-- यहीआ ख़ान तथा शाह निवाज़ ख़ान मिलकर सिक्खों के विरुद्ध नीतियां बनाने लगे। तुर्कों तथा सिक्खों के विरुद्ध आपसी वैर बढ़ता गया। तुर्कों को जहां भी सिंघों का खुराखोज प्राप्त होता वे तुरंत गिरफ़्तार कर लेते।

फारसी स्रोत, जैसे बूटे शाह द्वारा रचित 'तारीख-ए-पंजाब', खुशवकत राय कृत 'तवारीख-ए-सिक्खां' तथा अहमद शाह बटालीआ की रचना 'ज़िकर-ए-गुरुआं' स. रतन सिंघ (भंगू) के कथनों की पुष्टि करते हैं कि सिक्ख जंगलों एवं पहाड़ों की घाटियों में छिपकर गुजारा करते तथा दुख को सुख समझा जाता था। कई सिक्ख जंगलों में शेरों एवं बाघों की गुफाओं में निवास करते थे। इस प्रकार जंगलों, पहाड़ों तथा गुफाओं में छिपकर वे दिन काट रहे थे। उनमें पंथ-प्यार की भावना उफान पर थी। वे मुगलों को खत्म करना ही अपना उद्देश्य समझने लगे।

ज्ञानी गिआन सिंघ 'शमशेर खालसा' में लिखते हैं कि बटाला, जलंधर, बिजवाड़ा, मंजकी, फगवाड़ा आदि स्थानों को वीरान कर दिया गया था। सिंघों की इस सफलता के फलस्वरूप उनका एक दल मुगल सिपाहियों के भेस में लाहौर में मोरी दरवाज़े के रास्ते जनवरी, १७४६ ई में दाख़िल हुआ तथा शहर की तबाही का कारण बना। इसके उपरांत रावी के किनारे जंगलों में निवास करते सिंघ एकत्र हुए, जिनका पीछा मुगल घुड़सवार लाहौर गवर्नर यहीआ ख़ान के हुक्म से कर रहे थे।

यहीआ ख़ान की हिदायत अधीन दीवान लखपत राय भी सिंघों के विरुद्ध कार्यवाही कर रहा था। उसकी भेजी मुगल फौज के एक दसते ने सिक्खों का छिपे हुए डेरों में पीछा किया तथा उनका एक दल ऐमनाबाद की तरफ बढ़ा। गोंडावाला गांव के निवासियों ने ऐमनाबाद के फौजदार जसपत राय, जो दीवान लखपत राय का भाई था तथा ऐमनाबाद से लगभग २५ किलोमीटर की दूरी पर ठहरा हुआ था, को शिकायत की कि लगभग २००० सिक्ख घुड़सवार रोड़ी साहिब के गुरुद्वारे में ठहरे हुए हैं। दीवान ने उनको संदेशा भेजा कि वे फौरन उस स्थान से चले जायें। सिक्खों द्वारा यह विनती की गई कि वे कई दिनों से भूखे हैं, कसबे में से कुछ रसद खरीदकर अपनी भूख मिटाना चाहते हैं, उनका किसी को क्षति पहुंचने का कोई विचार नहीं। सिक्खों के इस उत्तर से जसपत राय क्रोधित हो गया। स. रतन सिंघ (भंगू) ने इस घटना का कलम-चित्र इस प्रकार खींचा है :

सिंघ सु बहुते दिनन के भूखे अंन के त्रास।
लिख भेजी इम खालसे जसपत को अरदास।. . .

जसपत को इम लिख पठाया।
हमरा तुमरा बैर सु नांही।
बैर हमारा तुरकन तांई।
रसत मोल हम लैपी चाहैं।
शहिर तुमारो खरीद कराहैं।

जसपत राय ने हाथी पर चढ़कर जितने घुड़सवार उसके पास उस समय मौजूद थे, उनको साथ लेकर सिंघों पर चढ़ाई की, जिसके फलस्वरूप वह मारा गया। स. रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार एक रंघरेटा सिक्ख, जिसका नाम भाई निबाहू सिंघ था, जसपत राय के हाथी की पूंछ को पकड़कर बिजली की तरह तेज़ी से हाथी पर चढ़ गया और जसपत राय का सर धड़ से अलग कर दिया, जिससे मुगल फौज के दसते में भगदड़ मच गई।

रिवायत है कि जसपत राय की मृत्यु के उपरांत लखपत राय बहुत गुस्से में आया और उसने यहीआ ख़ान के पैरों में अपनी पगड़ी रखकर सिक्खों की तबाही के लिए विनती की। नवाब ने लखपत राय को सिक्खों के विरुद्ध फौज का सरदार बनाकर भेजा। स. रतन सिंघ (भंगू) इस सम्बंध में लिखते हैं:

यही बात लखपित सुनी ढिग नवाब दई पर डार।
फेर आन मैं बधोंगो सिंघन को पंथ गार।
यह परतग्गया खत्री करी।
मारों सिंघ चढ़ इत ही घरी।
ऐस बचन सुन नवाब उचारा।
खरचो दरब लै मेरा सारा।
यह पंथ फदूल फदूलीए खत्री जात सु कीन।
मैं अब खत्री तौ रहां पंथ रलावों दीन ॥६॥
यह उशटंड इक खत्तरी कयो।
नाम खालसो जगत सुनयो।
मैं भी खत्री तऊ कहावों।
पंथ खालसो दूर करावों ॥७॥
नवाब पास यौ कीयो हंकार।
नवाब कहयो यह अच्छी कार।
मुखतयार फौजन का लक्खू कीओ।
लशकर सभ तांके संग दीओ ॥८॥

उपरोक्त वर्णन किए विस्तार के अनुसार सिक्खों का पीछा करने से पहले लखपत राय ने लाहौर के बहुत सारे सिक्खों को शहीदगंज नामक स्थान पर कत्ल करवा दिया था। लाहौर के मुखी शहरियों ने एक प्रतिनिधिमंडल की शक्ल में लखपत राय के पास विनती की थी कि वो इस प्रकार मासूमों के लहू के दरिया न बहाये, परंतु उसने सिक्खों के पावन ग्रंथों को जलाया तथा उनके कई गुरुद्वारों को ढह-ढेरी कर दिया। भारी गिनती में सिक्खों ने रावी दरिया के किनारे जंगल में पनाह ली। इस दौरान उनकी कई मुठभेड़ें मुगल घुड़सवार दसते के साथ हुईं। सिक्ख गोलाबारी के आगे असमर्थ थे, जिसके फलस्वरूप वे गुरदासपुर से कुछ दूरी पर पुराने ब्यास दरिया के किनारे स्थित काहनूवान गांव की ओर गुरिल्ला युद्ध करते हुए आगे बढ़े। दिन के समय वे अपने आप को छुपा लेते थे तथा रात को मौका देखकर वैरी पर धावा बोलते थे।

यहां यह बात वर्णनयोग्य है कि धीरे-धीरे उनकी गिनती कम होती गई, क्योंकि उनके पास न ही लड़ाई का सामान अर्थात् गोला-बारूद था और न ही खुराक का कोई आसरा था। इस प्रकार बहुत सारे निडर सिक्ख योद्धा भूख एवं जख़्मों का शिकार बनकर परलोक गमन कर गये। कहा जाता है कि बेचारा-ओ-बेमददगार होने की स्थिति में कुछ गिनती में सिक्ख विखंडित हो गए। कुछ सिक्ख वैरी के साथ मुठभेड़ करते हुए परोल कदूए की ओर चले गए।

लखपत राय ने चौधरियों तथा नंबरदारों को फरमान जारी किए कि वे सिक्खों का रास्ता रोकें एवं उनको पहाड़ी इलाके की तरफ मैदानों में धकेलने का यत्न करें। सिक्खों के सभी रास्तों को रोकने तथा बंद करने के प्रबंध किए गए। जिसके फलस्वरूप वे पठानकोट तथा डलहौज़ी के मध्य स्थित बसोली की पहाड़ियों पर पड़ाव करने के लिए मजबूर कर दिए गए, क्योंकि उन पर हमला करने वालों ने दरिया तथा पहाड़ों के सम्मुख उनको बेबस कर दिया था।

खुशवकत राय सिक्खों के दुख तथा मुसीबतों का वर्णन करता हुआ लिखता है कि बहुसंख्या में सिक्ख कष्ट सहते हुए अकाल चलाणा कर गए तथा बहुतों को बंदी बना लिया गया। उनमें से कई दरिया रावी में गिर गए।

बहत सारे सिक्खों को यातनाएं देकर मार दिया गया। लखपत राय ने एक सिक्ख के सिर का दाम ५ रुपये घोषित किया। इसके फलस्वरूप सिक्खों की गिनती दिन-प्रतिदिन कम होती चली गई।

सिक्खों का वो दसता जो घल्लूघारे से बच गया था, ब्यास दरिया की तरफ चढ़ाई कर गया। स. रतन सिंघ (भंगू) ने सिक्खों के सामने आने वाली मुसीबतों का भयानक दृश्य पेश किया है। जून के माह की शिखर दोपहर को लखपत राय ने सिक्खों के दसते का पीछा किया। पहाड़ पर बर्फ़ पिघलने के कारण ब्यास दरिया में बाढ़ आई हुई थी। सिक्खों ने वाहिगुरु का आश्रय लेते हुए गोइंदवाल के स्थान पर दरिया में छलांगें लगा दीं। वे सिक्ख जो दरिया पार करने में सफल रहे, उनको दरिया पार करने के उपरांत लगभग ३ किलोमीटर की दूरी तक गर्म रेत पर चलना पड़ा। उन्होंने अपनी दसतारें फाड़कर पैरों पर बांध लीं। वे भूखे एवं प्यासे थे। इस मौके सिक्खों का बहुत भारी जानी नुकसान हुआ। यह घटनाक्रम अभी भी जारी था। जलंधर के पास अदीना बेग के नेतृत्व में मुगल फौजी दसते ने मुसीबत में घिरे सिक्खों पर धावा बोल दिया। कई झड़पों के बाद कुछ सिक्ख सतलुज को पार करके तिहारा गांव तक पहुंचने में सफल हो गए। स. रतन सिंघ (भंगू) लिखता है कि माझे के इन सिक्खों की आवभगत मालवा क्षेत्र के सिक्खों द्वारा की गई। घरों में उनकी देखभाल की गई तथा जख़्मों को ठीक करने की ओर ध्यान दिया गया। कई सिक्ख अगुओं ने अपने सिपाहियों सहित अलग-अलग गांवों में कुछ देर के लिए ठहराव किया। नवाब कपूर सिंघ कुछ समय के लिए वनीके में ठहरे। स. जस्सा सिंघ कोटकपूरा तथा सुक्खा सिंघ ने जैतों को अपने निवास का स्थान बनाया। स. रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार भाई दीप सिंघ अपने कुछ साथियों सहित लक्खी जंगल की तरफ चले गए।

पड़ोल कठूये के बीहड़ों तथा जंगलों में खालसे की तुर्कों के साथ हुई ऐतिहासिक टक्कर में खालसे का भारी नुकसान होने का मुख्य कारण यही था कि तुर्क फौज के मुकाबले सिक्खों की गिनती तथा उनके पास गोली-सिक्का आदि काफी कम था। स. रतन सिंघ (भंगू) लिखता है कि लड़-लड़कर सिंघों के शस्त्र भोथरा हो गए। नेज़ों की फाल घड़ने के लिए जंगल में कोई नहीं थी। घोड़े अनाज के बिना थे और शरीर शस्त्रहीन थे, यहां तक कि पानी भी प्राप्त न था:

नेजे फल रहे दुशमन तन में।
घाड़ू लभै सु नाही बन में।
बिन दाने भए घोड़े माड़े।
बिन बसतर तन धुप सु साड़े।

स. रतन सिंघ (भंगू) ने निम्नलिखित पंक्तियों में घल्लूघारे के दौरान खालसे की यथार्थ

रूप में तसवीर खींची है :

अधी मौत मुसाफरी सारी मौत सु भुक्ख।. . .
ऊहां आइ दोऊ मिली भयों खालसे दुक्ख।

स. रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार जसपत राय की मृत्यु पर जो भी दुख प्रकट करने आया वह लखपत राय से मिलकर खालसे का सामना करने के लिए गया। कई अन्य स्थानीय सिपाही तुर्की फौज में भर्ती किए गए। स. रतन सिंघ (भंगू) के साथ लगभग समूह लेखक तथा इतिहासकार सहमत हैं कि इस स्थिति में खालसे ने पहले की तरह गुरिल्ला लड़ाई का आश्रय लिया, क्योंकि खालसा गिनती में बहुत कम था:

तुरक सु आटा सिंघ सु लूण।
तुरक घटा सिंघ बिज्जल ऊन।

स. रतन सिंघ (भंगू) पड़ोल कठूए के बीहड़ में हुए खालसे के तुर्कों के साथ इस संघर्ष में डल्लेवालिया मिसल के सरदार गुरदिआल सिंघ के दो भाइयों की दरिया में डूब जाने से मृत्यु का जिक्र भी करता है। स. रतन सिंघ (भंगू) के विवरण में पहाड़ पर तुर्की सेना से खालसे का संघर्ष तथा हुई क्षति बयान करने का विषय है। पहाड़ पर चढ़ी तुर्क फौज से बचने हेतु ज़मीन खोदकर छिपने से खालसे ने एक स्थिति में बचाव किया।

छोटे घल्लूघारे में स. सुक्खा सिंघ माड़ी कंबोज़ द्वारा की गई अगुआई का स. रतन सिंघ (भंगू) ने विस्तार में वर्णन किया है। बंदूक की गोली लगने से स. सुक्खा सिंघ की टांग चाहे जख़्मी हो चुकी थी और ऐसे में लड़ाई में पहले की तरह व्यस्त रहना असंभव था, परंतु स. सुक्खा सिंघ अपने हठ एवं तप का सदका दुश्मन के विरुद्ध जूझता रहा।

स. रतन सिंघ (भंगू) घल्लूघारे में एक गुरमते का जिक्र भी करता है। खालसे ने निर्णय लिया कि तुर्कों की संख्या ज्यादा होने के कारण तथा खालसे को भोजन एवं उनके घोड़ों को चारा न मिलने के कारण चारों ओर फैल-जाना योग्य था। यह काम पूरी बहादुरी से स. सुक्खा सिंघ की अगुआई में किया गया तथा इसके बाद खालसे ने लखपत राय की फौज पर पूरे ज़ोर से धावा बोल दिया। सिंघों ने गर्म तवी जैसी रेत की भी परवाह न की। लड़ाई में भारी संख्या में सिंघ शहीद हुए।

स. रतन सिंघ (भंगू) ने छोटे घल्लूघारे में शहीद हुए सिंघों की गिनती का ब्यौरा भी दिया है। वे लिखते हैं कि इस सम्बंध में अलग-अलग राय दी जाती है :

कोऊ कहै मोए चाली हज़ार।
कोऊ कहै सिंघ बहु भए मार।
कोऊ कहै सिंघ चाली (चालीस हज़ार) सारे।
तिंन सै बचे छे सत (छः- सात हज़ार) सारे।

ज्ञानी गिआन सिंघ ने यह गिनती ७,००० के लगभग वर्णन की है जो यथार्थक प्रतीत होती है।

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

स. हरी सिंघ नलूआ : जीवन परिचय

*-डॉ. शमशेर सिंघ**

जन्म तथा बचपन :

सरदार हरी सिंघ नलूआ का जन्म १७९१ ई को स. गुरदिआल सिंघ (उप्पल) के घर गुजरांवाला में माता धरम कौर की कोख से हुआ। वे अभी मात्र सात वर्ष के थे कि १७९८ ई को उनके पिता का देहांत हो गया। पांच वर्ष की उम्र में गुरमुखी की पढ़ाई गुरुद्वारे के भाई (ग्रंथी) से करने का रिवाज़ था। स. हरी सिंघ नलूआ को इस क्षेत्र में क्रमश: जपु, जापु, रहरासि, बाई वारां, भक्त-बाणी का अध्ययन कराया गया। इसके बाद अन्य धर्म-ग्रंथ, जैसे दसम ग्रंथ, वारां भाई गुरदास जी तथा सिक्ख इतिहास गुरुद्वारों में ही पढ़ाया जाता था। इस तरह की पढ़ाई का इम्तहान भी कोई नहीं लिया जाता था। आठ वर्ष की आयु में उनको मौलवी से फारसी पढ़ाने का इंतजाम किया। उनके जीवन-चरित्र से पता चलता है कि वे पशतो भी अच्छी तरह बोल-लिख तथा पढ़ लेते थे। शुकरचक्कीआ मिसल के स. रणजीत सिंघ, जो बाद में शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ बने, उस समय १९ वर्ष के थे। पिता की मृत्यु के बाद स. हरी सिंघ नलूआ के जीवन की प्रारंभिक अवस्था महाराजा रणजीत सिंघ की निगरानी तले गुजरी।

महाराजा रणजीत सिंघ दरबारियों के बच्चों से बहुत प्यार करते थे। सरदारों के बहुत-से बच्चे महाराजा की निगरानी में पढ़ते थे। महाराजा ने इनको घुड़सवारी तथा अन्य शस्त्र-विद्या सिखाने का इंतजाम किया हुआ था। महाराजा ने स. हरी सिंघ नलूआ को होनहार बच्चा देखकर अपनी निगरानी में ले लिया था। महाराजा ने एक 'बच्चा पलटन' बनाई। उसमें स. हरी सिंघ को भर्ती कर लिया तथा प्रारंभिक शिक्षण देने का इंतजाम करवाया। इसका जिक्र डॉ. मैकग्रीगर ने अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ दी सिक्खज़', भाग पहला, पृष्ठ २२७ पर किया है।

मैकग्रीगर के कथन के अनुसार, महाराजा हर वर्ष अपने योद्धाओं समेत रावी-सतलुज दरिया के मध्य पहाड़ों की तरफ शिकार खेलने जाया करते थे। शेर के शिकार के लिए तीर या गोली चलाने की बजाय तलवार द्वारा मुकाबला करने का आदेश दिया जाता था। जब कोई जवान शेर को मार लेता तो उसको ऊंचा दर्जा दिया जाता था। महाराजा ने कितने ही योद्धाओं को उच्च खिताब दिए थे, जिन्होंने इस तरह शेरों का शिकार किया था। स. हरी सिंघ नलूआ १९ वर्ष के थे जब उनको शेर का शिकार करने का हुक्म हुआ था। उन्होंने बड़ी बहादुरी से शेर को मार दिया। स. हरी सिंघ को 'सरदारी' का रुतबा तथा जागीर की भी बख़्शिश की। इसका जिक्र दीवान अमरनाथ अकबरी ने 'जफ़रनामा रणजीत सिंघ' (फारसी) के पृष्ठ ३१-३३ पर किया है कि महाराजा श्री अमृतसर आए श्री दरबार साहिब के दर्शन किए तथा अपने सरदारों को ऊंचे पद दिए। स. हरी सिंघ नलूआ को खिदमतकारी से हटाकर 'सरदारी' के खिताब समेत ८०० सवार तथा पैदल फौज

***VPO** शेखूपुरा, जिला पटियाला-१४७००२*

दी। स. हरी सिंघ जवानी में अद्वितीय बहादुर, शस्त्र-विद्या में निपुण, अच्छे राज्य-प्रबंध की सूझबूझ रखने वाले, दूरदेशी रुचि के मालिक बन गये थे। स. हरी सिंघ नलूआ स्वभाव, बोलचाल, चरित्रवान जैसे अच्छे गुणों का सदका महाराजा रणजीत सिंघ की निगाहों में सत्कार प्राप्त कर चुके थे।

गुज़रांवाले की जागीर : उपरोक्त सारे गुणों के कारण स. हरी सिंघ नलूआ की शख़्शियत बड़ी प्रभावशाली बन चुकी थी। महाराजा के वे अति विश्वास वाले तथा भरोसेयोग्य जरनैल थे। महाराजा पड़ोसी हकूमतों से बातचीत आदि के समय स. हरी सिंघ को भरोसे में लेते थे। इन सभी बातों, गुणों तथा दूर-अंदेशी का मालिक होने के कारण महाराजा उन पर बहुत खुश थे। स. हरी सिंघ को गुज़रांवाले की जागीर दे दी थी।

स. हरी सिंघ नलूआ को लाहौर से जब फुर्सत मिलती तो वे कुछ समय गुज़रांवाले में गुजारते। इससे पहले गुज़रांवाले में अच्छे मकान भी नहीं थे और आबादी भी इक्का-दुक्का थी। स. हरी सिंघ नलूआ ने यहां पर एक किला जो पहले कच्चा था, पक्का करवाया तथा एक पश्चिमी ढंग की बारांदरी एवं अच्छी हवेली बनवाई; गुज़रांवाला की गलियां एवं कूचे पक्के करवाये, लोगों को उत्साह देकर यहां बसाया, हर परिवार को ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं देने का यत्न किया।

लाहौर दरबार के रोज़नामचे के अनुसार स. हरी सिंघ ने १८०५ से १८१५ ई तक लंबा समय महाराजा की खिदमत में गुज़ारा। राजनैतिक उलझनों तथा जंगी मोर्चों को फतहि करने के लिए उनको भेजा जाता था। इन जिम्मेदारियों से स. हरी सिंघ की ऊंची शख़्शियत का पता चलता है। १४ मार्च, १८१२ ई को स. हरी सिंघ को पश्चिमी कश्मीर के इलाके से दस हज़ार रुपये मालगुजारी एकत्र कर लाना भी उनकी राज्य-प्रबंध के प्रति कुशलता का पता चलता है।

३० जून, १८१५ ई को कुछ सिक्ख घुड़सवार कुंडागढ़ (अटक) गए तो यहां के नवाब शेरबाज़ ख़ान ने उन सिपाहियों पर हमला कर दिया। अचानक हमला होने के कारण सिक्ख फौजों का नुकसान हुआ। जब स. हरी सिंघ नलूआ ने जवाबी कार्यवाही की तो शेरबाज़ ख़ान मैदान छोड़कर भाग गया। आखिर, स. हरी सिंघ नलूआ मोर्चा फतहि करके लाहौर वापिस पहुंच गए।

मुलतान की विजय : मुजफ्फर ख़ान मुलतान का हाकिम चाहे महाराजा रणजीत सिंघ के अधीन था, परंतु अंदरखाते अफ़गानों का वफ़ादार था। उसकी एक आंख काबुल की ओर तथा दूसरी आंख अंग्रेजों की तरफ थी। महाराजा ने इस दुविधा वाले इलाके को पक्की तरह से अपने अधीन लाने के लिए एक एकत्रता बुलाई, जिसमें स. हरी सिंघ नलूआ, अकाली फूला सिंघ, दीवान मोती राम, मिसर दीवान चंद हाज़िर थे। इस मामले के बारे में सलाह करने के लिए स. हरी सिंघ को अटक पार से विशेष हुक्म भेजकर बुलाया गया था।

जनवरी, १८१७ ई को दीवान मोतीराम, भवानीदास, स. हरी सिंघ नलूआ तथा अन्य सरदारों सहित एक भारी फौज मुलतान की ओर भेजी। मुजफ्फर ख़ान ने पहले मुकाबला किया। जब देखा कि मुकाबला ज्यादा देर तक नहीं हो सकता तो भवानीदास को अंदरखाते मिलकर कुछ देने की बात तय कर ली, जिस पर भवानीदास ने मुलतान का घेरा उठा लिया। यह सब कुछ पता चलने पर दीवान भवानीदास को

महाराजा ने दस हज़ार रुपये जुर्माना किया तथा हमले की तजवीज़ अगले वर्ष पर डाल दी।

जनवरी, १८१८ ई को शहज़ादा खड़क सिंघ को २५००० जवानों सहित मुलतान की मुहिम पर भेजा। स. हरी सिंघ नलूआ, मिसर दीवान चंद, अकाली फूला सिंघ, जनरल इलाही जरनैलों सहित एक बढ़िया तोपखाना, जिसको भंगियों का तोपखाना कहा जाता था, देकर मुलतान की ओर भेजा। इस तोपखाने में जमजम तोप भी शामिल थी।

स. हरी सिंघ नलूआ इस मुहिम का मुखिया था। इन सिपाहियों ने पहले हमलें में ही मुजफ्फरगढ़, ख़ानगढ़ आदि इलाके सहजता से ही अपने कब्जे में कर लिए। लड़ाई से पहले एलची मुजफ्फर ख़ान के पास भेजे कि समझौते से किला खालसे के हवाले कर दे तथा खालसा सरकार से वाजिब जागीर लेकर अमल वाली ज़िंदगी जीए। मुजफ्फर ख़ान न माना। उसने मुकाबला किया। उसकी फौज की गिनती केवल दो हज़ार थी। उसकी फौज लड़ती हुई किले के गेट पर पहुंच गई। किला बड़ा मजबूत था। राशन, गोला-बारूद, पहले ही जमा था। आखिर, सिंघों ने जमजम तोप का प्रयोग शुरू किया, जिससे किले की दीवारें गिरनी शुरू हो गईं। यह गोलाबारी जून माह तक चलती रही, जिसने मुजफ्फर ख़ान को हथियार फेंकने को मजबूर कर दिया। आखिर, भाई साधू सिंघ निहंग सिंघ ने किले पर हल्ला बोल दिया। मुजफ्फर ख़ान अपने आठ पुत्रों सहित किले के दरवाजे के आगे लड़ता हुआ मर गया। गणेश दास के 'फतहिनामा गुरू खालसा', जो सीताराम कोहली ने संपादित किया है, के पृष्ठ १४६ के अनुसार, सिक्ख फौजें २ जून, १८१८ ई को किले में दाख़िल हो गईं। अंग्रेजों ने इस विजय को बुरा माना क्योंकि मुजफ्फर ख़ान अंदरखाते अंग्रेजों से मिला हुआ था।

कश्मीर पर चढ़ाई : दुर्रानी हाकिम कश्मीरी हिंदुओं को तंग करते थे कि वे मुसलमान बन जाएं। पंडित बीरबल कश्मीर से भागकर महाराजा के पास लाहौर आया। उसकी कहानी सुनकर बड़ा दुख हुआ। उसके परिवार को कैद में डाल दिया था तथा बहू को काबुल भेज दिया था। खालसा को हुक्म हुआ कि कश्मीर पर लड़ाई की जाए। इस फौज में तीस हज़ार जवान थे। इनमें हिंदू, सिक्ख तथा मुसलमान थे। इस मुहिम की तीन टुकड़ियां थीं। पहली टुकड़ी की कमांड शहज़ादा खड़क सिंघ, स. हरी सिंघ नलूआ तथा अकाली फूला सिंघ के हाथ में दी। पहाड़ी रास्ता बड़ा टेढ़ा था। रईस सुलतान ख़ान भिंबर सात वर्षों से खालसा सेना के पास कैद था। उसको रिहा करके इस रास्ते की जान-पहचान के लिए उसको भेजा, क्योंकि वह इस रास्ते से वाकिफ़ था। पहाड़ी इलाका होने के कारण खालसा फौज़ की मदद के लिए दस हज़ार वीर सिपाहियों को राशन, गोला-बारूद देकर गुजरात, भिंबर राज़ौरी तथा शाहबाद के रास्ते भेजा। खालसा फौज की पठानों के साथ टक्कर हुई। पठान मुकाबला न कर सके।

दूसरी टक्कर सराय अली गवर्नर कश्मीर के साथ हुई। सिक्ख फौज को नुकसान पहुंचा, परंतु हाथों-हाथ लड़ाई में सिक्ख फौज भारी हो गई। शेरगढ़, श्रीनगर आदि जगहों पर सिक्खों ने कब्जा कर लिया। आखिर, ६ जुलाई, १८१९ ई को सिक्खों की पूर्ण विजय हो गई। महाराजा को पता चला तो उन्होंने बहुत खुशी मनाई; लाहौर तथा श्री अमृतसर में दीपमाला की गई।

स. हरी सिंघ नलूआ की कश्मीर पर हकूमत: कश्मीर की हालत सभी तरफ से खराब थी। अच्छे, योग्य, प्रभावशाली शासकों की जरूरत

थी, इसलिए स. हरी सिंघ को चुना गया। दीवान मोतीराम की नर्मदिली के कारण पहला प्रबंध अच्छा न था। स. हरी सिंघ नलूआ को जब प्रबंध सौंपा गया तो जल्दी ही ठीक-ठाक होना शुरू हो गया। स. हरी सिंघ ने महाराजा की इजाज़त से अपने नाम का सिक्का कश्मीर में चलाया। यह सिक्का ६ मासे चांदी तथा ६ मासे तांबे का था। यह सिक्का हरी सिंघीआ रुपईया के नाम से मशहूर हुआ। इसकी कीमत आज पचास पैसे के बराबर है। 'हरी सिंघीए पैसे' भी टकसाल में ढाले गए। रुपए के ऊपर श्री अमृतसर तथा लाहौर की टकसाल नानकशाही सिक्के की तरह फारसी वर्णों में थी:

देगो तेगो फतहि नुसरत बेदरंग।
याफत अज़ नानक गुरू गोबिंद सिंघ।

इसका अर्थ है : "देग-तेग-फतहि की बख़्शिश बिना देर श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्राप्त हुई।"

स. हरी सिंघ नलूआ ने सालाना कर की उगराही करके लाहौर दरबार को कश्मीर के राज्य-कर की पहली किश्त भेज दी। कुछ विरोधी लोगों ने स. हरी सिंघ नलूआ को नाइंसाफ़ी, धक्केशाही करने वाला प्रबंधक साबित करने की कोशिश की। इन शिकायतों में डोगरा मीआं सिंघ का हाथ था।

हिंदुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया जाता था। हिंदुओं को तंग करने वाले गुलाम अलीख़ान को कैद करके लाहौर भेज दिया। स. नलूआ की नीति निष्पक्ष थी। कश्मीर में क्षत्रिय तथा ब्राह्मण, जो मुसलमान बने थे, तंग करते थे। उनमें से कुछ को बंद कर दिया तथा शेष को लाहौर भेज दिया। नए मुसलमान बने हुए लोगों को दोबारा हिंदू बनने की छूट दी। अच्छे प्रबंध के लिए व्यापारिक क्षेत्र, खेतीबाड़ी, दस्तकारी तथा अन्य कला-पक्षों में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित किया। सरकारी मालिया उगराह कर प्रजा की मुश्किलों को हल करना शुरू किया तथा एक कुशल राज्य बन गया। स. हरी सिंघ ने कश्मीर में कर बिलकुल खत्म कर दिया।

वार्षिक राज्य-कर साठ लाख रुपये था। सिक्ख राज्य कायम होने पर, मोतीदास के समय इक्कीस लाख रुपए था। इसमें से आठ लाख रुपए घटाकर तेरह लाख रुपए वार्षिक रहने दिया। इसके अलावा फसलों के भाव, दुकानों के तोल, गज़ों के नाम को कुशल बनाया। यह सब अच्छा प्रबंध स. हरी सिंघ नलूआ की समझदारी भरी नीति के कारण ही बना था। इसके बदले में महाराजा रणजीत सिंघ ने स. हरी सिंघ नलूआ को पखली तथा धमतोड़ के इलाके जागीर के रूप में दिए।

१८२२ ई में महाराजा रणजीत सिंघ ने हज़ारों रुपयों की नज़ामत स. हरी सिंघ नलूआ के हवाले कर दी। स. हरी सिंघ ने पहुंचते ही स. अमर सिंघ मजीठिए के कातिलों को पकड़कर तोपों से उड़ा दिया। महाराजा ने इस इलाके का अच्छा प्रबंध देखकर हरी सिंघ सराय सालह तथा श्रीकोट के इलाके जागीर के रूप में दे दिये, जहां श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के नाम पर नया किला बनाया। अपने नाम पर स. हरी सिंघ नगर की नींव रखी; हिंदू, सिक्ख, मुसलमान बसाये।

मुलतान, कश्मीर तथा पेशावर की जीतों से महाराजा का तप-तेज और बढ़ गया था। उधर ईस्ट इंडिया कंपनी महाराष्ट्र, मद्रास, बंगाल के राज्यों पर कब्जा करती हुई सतलुज तक पहुंच चुकी थी। १८२७ ई में लार्ड ऐमरसट गवर्नर अपनी दूरदेशी से कोलकाता से दिल्ली तक सैर-सपाटा करता हुआ शिमला आ पहुंचा।

महाराजा रणजीत सिंघ ने १८०९ ई की संधि के मुताबिक अंग्रेजी हकूमत के साथ मित्रता बनाई हुई थी। गवर्नर जरनल के स्वागत के लिए शिमला सिक्ख मिशन भेजना था। उसमें दीवान मोतीराम, फकीर अजीजुद्दीन तथा स. हरी सिंघ नलूआ शामिल थे। बहुत सारे सिक्ख नहीं चाहते थे कि १८०९ ई की संधि की मौजूदगी में अंग्रेजी सरकार से कोई और अहिदनामा किया जाए परंतु स. हरी सिंघ नलूआ राजनीति की बारीकियों से वाकिफ़ था।

रोपड़ की मुलाकात के समय महाराजा ने अनुभव कर लिया था कि अंग्रेज सिक्खों पर अधिकार जमाने के कई तरीके अपना रहे हैं। रूस तथा ईरान को रोकने के लिए अफ़गानिस्तान पर काबू करना सीख लिया है। पेशावर चाहे सिक्खों के कब्जे में था, परंतु बारकज़यी सरदारों के हाथों में होने के कारण उनका रवैया ठीक नहीं था। पेशावर पर पक्की तरह से कब्ज़ा करने के लिए महाराजा को स. हरी सिंघ नलूआ ही भरोसेयोग्य जरनैल दिखाई देता था। स. हरी सिंघ को महाराजा ने बुलाया तथा खिलअत, घोड़ा व किरच पेश की और हुक्म दिया कि दरिया रावी पार करके चिनाब, उसके बाद रावलपिंडी पहुंच कर वहां अटक पार करके पेशावर को पूरी तरह से अपने कब्ज़े में लिया जाये। इसका जिक्र मुंशी सोहन लाल ने 'उमदात तवारीख' के पहले भाग पन्ना ११४ पर किया है। मुहिम की यह स्कीम स. हरी सिंघ नलूआ को समझा दी। इस मुहिम के लिए स. नौनिहाल सिंघ जरनैल बैनतूरा तथा बहुत-सी फौज भेजी गई।

दिसंबर, १८३४ ई की बात है। अंग्रेज यात्री बर्नज़ ईस्ट इंडिया कंपनी के हुक्म से अटक पहुंचा। स. हरी सिंघ नलूआ ने महाराजा के हुक्म से उसका स्वागत किया तथा किला अटक दिखाया। यह अंग्रेज यात्री स. हरी सिंघ नलूआ की दिलेरी, राजनीतिक सूझबूझ, दूरंदेशी, हाज़िरज़वाबी तथा मेहमाननिवाजी देखकर बहुत प्रभावित एवं प्रसन्न हुआ।

१८३४ ई को स. हरी सिंघ नलूआ ने खानगढ़, गंडगढ़ आदि इलाकों के छोटे-मोटे किले काबू करके होती मरदान के पास पंजतार पठानों के इलाके पर चढ़ाई की तथा फतहि पाई। इसके बाद स. हरी सिंघ नलूआ ने पेशावर के बारकज़ई सरदारों के हाथों संदेश भेजा कि सुलतान मुहम्मद ख़ान, उसके भाई पीर मुहम्मद ख़ान, भतीजा अब्दुल ग्यास पेशावर खाली करके अली मरदान ख़ान के बाग में चले जायें, क्योंकि स. नौनिहाल सिंघ शहर देखने के इच्छुक हैं। इस तरह पेशावर पर कब्ज़ा हो गया। किला बाला हिसार पर केसरी निशान झुला दिया। यह घटना ६ मई, १८३४ ई की है।

सूबा सरहिंद का राज्य-प्रबंध ठीक करना आवश्यक था। यूसफजई पठान वाचाल तथा आज़ाद ख़्यालों के थे। पहले हथियार उठाये, जब स. हरी सिंघ सामने आया तो सब ने लाचार होकर हथियार फेंक दिए तथा राज्य-कर पेशावर पहुंचाना शुरू कर दिया। इस इलाके के पठान स. हरी सिंघ में बहुत डरते थे। इस इलाके की पठानियां अपने बच्चों को स. नलूआ का नाम लेकर चुप करा देती थीं : "चुप शा बचिआ, हरीआ रागले।"

स. हरी सिंघ नलूआ ने अक्लमंद तथा समझदार पठानों को (जो अमन के इच्छुक थे) महाराजा से जागीरें दिलवा दीं। ये पठान ख़ानदान होती मरदान, पंजतार तथा पेशावर के रहने वाले थे, जिनको जागीरें दीं।

१८३६ ई को सरहिंद पर युद्ध के बादल मंडराने लगे। पता चला कि दोस्त मुहम्मद ख़ान

चढ़ाई कर रहा है। हज़ारों में गखड़ा कुलां दी गड़बड़ तथा मुजफ्फराबाद में भी लोगों द्वारा बगावत करने की खबरें पहुंची। पेशावर से आगे किला मिलनी, किला बड़ा, बुर्ज हरी सिंघ, कच्ची गढ़ी आदि सन् १८३५-३६ ई में तैयार करवाये थे।

जमरौद की लड़ाई का आरंभ २१ अप्रैल, १८३७ ई को किले से बाहर दुश्मन की अनगिनत फौजें थीं। दूसरा हमला २८ अप्रैल, १८३७ ई को हुआ। स. महां सिंघ के ८०० जवानों ने बड़ी बहादुरी दिखाई। दुश्मन चाहे आंधी की भांति आगे बढ़ा, परंतु किले में पांव न रख सका। लाहौर से अभी कोई सहायता नहीं मिली थी।

२८-२९ अप्रैल, १८३७ ई को पेशावर पर स. हरी सिंघ नलूआ ने चढ़ाई की। १००० घुड़सवार, ६००० पैदल, ६००० फौज, २० तोपें, गोला-बारूद, स. हरी सिंघ ने खुद कमांड संभाल। उनके हौसले बुलंद थे। दुश्मन का हमला बड़ी दिलेरी से हुआ। सिक्ख फौज ने दूसरा हमला ३० अप्रैल, १८३७ ई को किया; 'सति श्री अकाल' के जैकारे गजाते हुए अफ़गानों को पीछे हटा दिया। दर्रा खैबर तक का मैदान साफ़ कर दिया। फतहि के बाद कुछ मनचले पठानों ने छुपकर स. हरी सिंघ नलूआ पर हमला किया। पहली गोली जांघ में और दूसरी वक्ष (छाती) में लगी। स. नलूआ जख़्मी हो गए और फिर शहीद हो गए।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

कविता

सच्चा प्रेम

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

प्रेम की गहराइयों में शब्द, जा सकते नहीं। प्रेम का सागर है गहरा, थाह पा सकते नहीं।
प्रेम-सागर की सतह पर, शब्द हैं बस डोलते। प्रेम का स्पर्श पा, तसवीर धुंधली खोलते।
प्रेम ऐसा भाव जो, मन की सरलता में बसे। प्रेम में यदि घाव मिलता, आह भी मीठी लगे।
प्रेम की मंजिल न होती, राह में सब रस बरसते। प्रेम हो सच्चा अगर तो, शांति से प्रेमाश्रु झरते।
प्रेम की यह है कसौटी, स्वार्थ या दुर्भाव न हो। प्रेम है ऊंचा वही, जिसमें न कोई चाहना हो।
प्रेम में निज त्याग को, प्रेमी सदा तैयार रहते। मीत का ही हित सधे, यह सोचकर सब कष्ट सहते।
चाह पूरी या अधूरी, प्रेम न घटता कभी। फल लगें मीठे या खट्टे, प्रेमतरु मरता नहीं।
प्रेम पाने में नहीं है, प्रेमरस देने में मिलता। त्याग की मरु भूमि पर, सत्प्रेम का बादल बरसता।
गुरमति में प्रेम का, स्थान है बड़ा ऊंचा। गुरमुख वही जिसका, जीवन है सचा-सूचा।
गुरमुख प्रेमी प्रभु को, प्रेम द्वारा पा लेते हैं। खुद मुक्त होकर औरों को, जीने की राह बता देते हैं।

**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.), मो. : ०९४११६०७६७२*

साका पाउंटा साहिब का ऐतिहासिक वृत्तांत

*-सिमरजीत सिंघ**

१८२३ ई में छोटे मंजी साहिब वाले स्थान पर गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब की नई इमारत का निर्माण भाई बिशन सिंघ के वंशज बाबा कपूर सिंघ जी ने करवाया। इस गुरधाम के नाम लगभग सवा सौ एकड़ ज़मीन भी लगी हुई थी। गुरुद्वारा पाउंटा साहिब का महंत भाई लहिणा सिंघ बहुत ही ईमानदार तथा नेकदिल इंसान था। जलियां वाले बाग के खूनी साके के समय वो बाग में था तथा गोलीकांड में शहीद होने से बच गया था। पंथ में उसका बहुत मान-सत्कार था। जब महंत भाई लहिणा सिंघ को गुरुद्वारों के प्रबंध के लिए बनी 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' के बारे में पता चला तो उसने खुद ही चाबियां लेकर श्री अमृतसर पहुंचकर प्रबंध पंथक हाथों ले लेने के लिए विनती की। पंथ ने महंत की कुर्बानी तथा नम्रता देखकर उसको सेवा-संभाल सौंपे रखने का अलग प्रस्ताव पारित किया। महंत के अकाल चलाणे के बाद उसके पुत्र गुरदिआल सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब पर अपना हक समझते हुए कब्जा कर लिया तथा अपनी मनमानियां एवं कुरीतियां करनी शुरू कर दीं।

१९५०-५१ ई में निहंग सिंघ तरना दल हरीआं वेलां के जत्थेदार बाबा हरभजन सिंघ जी अपने जत्थे के साथ गुरुद्वारा पाउंटा साहिब के दर्शन के लिए गए। उस समय गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध गुरदिआल सिंघ के पास था। उसने गुरु-स्थान को अपनी निजी जायदाद बना लिया हुआ था तथा गुरुद्वारा साहिब की बहुत सारी ज़मीन अपने नाम पर तबदील करवा ली थी।

जब बाबा हरभजन सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब का बुरा प्रबंध देखा तथा इलाके की संगत ने बाबा जी को गुरदिआल सिंघ के कारनामों से वाकिफ़ करवाया तो बाबा जी ने संगत से सलाह करके महंत को गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध ठीक करने के लिए कहा। बाबा जी ने इस कार्य के लिए २१ सिंघों की एक कमेटी बना दी, जिसका सदस्य महंत गुरदिआल सिंघ को भी बनाया गया। बाबा जी ने महंत गुरदिआल सिंघ को रहित मर्यादा में जीवन बिताने की सख़्त ताड़ना की। कुछ समय तक तो महंत ठीक रहा। गुरुद्वारा साहिब की आमदन कमेटी संभालने लगी जो कि नाममात्र थी तथा गुरुद्वारा साहिब की सारी ज़मीन की आमदन महंत संभालता था। कमेटी बनने से महंत भीतर से बहुत दुखी था क्योंकि अब उसको मनमानी करने का मौका नहीं मिलता था। बाबा जी के चले जाने के बाद महंत गुरदिआल सिंघ ने फिर कुरीतियां करनी शुरू कर दीं। इलाके की संगत ने फिर बाबा हरभजन सिंघ के पास जाकर गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध में सुधार करने की विनती की।

जब बाबा जी दल समेत पाउंटा साहिब पहुंचे तो महंत बाबा जी को लेने के लिए आया

**संपादक, गुरमति ज्ञान/ गुरमति प्रकाश*

तथा कमेटी के बारे में झूठी शिकायत की। दल के गुरुद्वारा साहिब में रहने तथा रसद-पानी के प्रबंध करने में अपनी असमर्थता जताई तथा कहा, मेरे बस में कुछ नहीं, आमदन तो कमेटी के पास होती है। बाबा जी ने उसको ताड़ना की कि संगत के इंतज़ाम की ही केवल बात नहीं, हम तेरे साथ गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध ठीक न होने तथा गुरुद्वारा साहिब की जायदाद अपने निजी स्वार्थों के लिए प्रयोग करने एवं बर्बाद करने के बारे में तथा रहित मर्यादा में जीवन बिताने के बारे में पूछताछ करने आए हैं।

महंत बहुत चालाक था। वह समझ गया था कि बाबा जी को सब कुछ मालूम पड़ गया है। उसने बड़ी चालाकी से कहा कि बाबा जी अगर कमेटी आई हुई संगत की सेवा नहीं कर सकती तो कमेटी क्यों बनाई है? यह कमेटी तोड़ दें। मैं खुद ही सारी संगत का बंदोबस्त (प्रबंध) कर देता हूं। बाबा हरभजन सिंघ ने कमेटी के सदस्यों को बुलाकर बुरे प्रबंध के बारे में बात की तो कमेटी के सदस्यों ने कहा कि यह प्रबंध करना हमारे वश की बात नहीं। हम यह प्रबंध आपको लिखकर देते हैं। कृपा करके आप ही इस स्थान के प्रबंध में सुधार करें। कमेटी ने सारा हिसाब-किताब लिखकर बाबा जी को दे दिया।

महंत ने इस समय एक नई चाल चली। उसने बाबा जी के पास आकर विनती की कि मुझे खंडे की पाहुल बख्श कर सिंघ सजाकर अपने दल में भर्ती कर लो। बाबा जी ने पांच प्यारों में शामिल होकर खंडे की पाहुल का बाटा तैयार किया तथा इलाके की संगत समेत महंत तथा उसके परिवार को अमृत छकाया। बाबा जी ने कुछ दिन वहीं रहकर पंजाब वापिस जाने की तैयारी की तो महंत ने फर्जी तौर पर बाबा जी को विनती की कि उसके पांच सिंघों को छोड़ दिया जाये और साथ ही कहा कि कहीं फिर आपके जाने के बाद यहां की संगत मुझे काबू करके कमेटी न बना ले। बाबा जी ने भरोसा दिया कि अब तेरे साथ जत्थेबंदी है। तू गुरु के भय में रहकर सेवा कर। आमदन का सारा हिसाब-किताब ठीक रख। तुझे कोई कुछ नहीं कहेगा। बाबा जी कुछ समय वहां रहकर वापिस पंजाब आ गए। बाबा जी के पंजाब आ जाने के बाद महंत एक वर्ष ही रहित मर्यादा में रहा। बाबा जी चाहे उसकी ख़बरसार रखते रहे किंतु पाउंटा साहिब न जा सके। महंत ने फिर पहले की तरह कुरीतियां करनी शुरू कर दीं। इलाके की संगत फिर से दुखी होकर बाबा हरभजन सिंघ जी के पास गई तथा रो कर निकम्मे प्रबंध के बारे में जानकारी दी।

१९५३ ई में बाबा जी अपने दल समेत फिर पाउंटा साहिब पहुंचे ताकि महंत की सोध-सुधाई की जा सके। अपनी करतूतों से डरता महंत गुरुद्वारा का प्रबंध छोड़कर दौड़ गया तथा सरकारी अफ़सरों से अट्टी-सट्टी करने लगा। सरकारी अफ़सरों ने इसमें अपनी मजबूरी दर्शायी कि वे धर्म के काम में दख़लंदाजी नहीं कर सकते तो महंत निराश हो गया। सरकारी अफ़सरों ने उसको कहा कि आपस में मिल-बैठकर मसला सुलझाने में ही भलाई है।

निराश होकर महंत ने आखिरी दांव खेला। वह दौड़कर बुड्ढा दल के जत्थेदार बाबा चेत सिंघ जी के पास पहुंच गया। बाबा चेत सिंघ के आगे महंत ने रोते हुए नाक रगड़कर वादा किया कि वह आगे से कोई कुरीति नहीं करेगा, बस, इस बार वे बाबा जी को कहकर माफ़ करवा दें। उसने सिंघ साहिब बाबा चेत

सिंघ जी को पाउंटा साहिब साथ चलने के लिए मना लिया। उसको विश्वास था कि बाबा चेत सिंघ जी की कोई भी बात बाबा हरभजन सिंघ जी नहीं मोड़ेगें। बाबा चेत सिंघ जी ने पाउंटा साहिब आकर बाबा हरभजन सिंघ जी को गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध महंत के हवाले करने तथा बाबा जी को अपने साथ पंजाब चलने पर राजी कर लिया। बाबा हरभजन सिंघ जी गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध महंत के हवाले करके पंजाब वापिस आ गए।

एक वर्ष के लगभग महंत बुड्ढा दल के साथ रहा तथा गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध व हिसाब-किताब भी ठीक-ठाक रखता रहा। महंत फिर अपनी पहले वाले लक्षणों पर आ गया। अब महंत की खबरें बाबा चेत सिंघ जी के पास भी पहुंचने लगीं। इसी तरह ४-५ वर्ष बीत गए। आखिर एक दिन बाबा चेत सिंघ जी ने बाबा हरभजन सिंघ को कहा कि महंत फिर से अपने पहले वाले लक्षणों पर आ गया है, आप अपने दल समेत वहीं जाओ और सुधार करो। गुरुद्वारा साहिब को महंत की कुरीतियों से मुक्त करवाने के लिए बाबा जी ने अरदास की। बाबा हरभजन सिंघ ने पाउंटा साहिब जाने से पूर्व बाबा चेत सिंघ जी को हरीआं वेलां आकर सलाह-मशविरा करने के लिए विनती की ताकि पाउंटा साहिब के प्रबंध के बारे में सारी विचार-चर्चा कर ली जाये। १९६४ ई में श्री अनंदपुर साहिब में होला महल्ला मनाने के बाद गुरमता सोधकर अरदास करके, श्री गुरु ग्रंथ साहिब से हुक्म लेकर तरना दल हरीआं वेलां ने पाउंटा साहिब की ओर प्रस्थान कर दिया।

जिस समय निहंग सिंघों का दल पूरी शानो-शौकत से काला अंब कसबे में पहुंचा तो महंत को उसके गुप्तचरों ने खबर दी कि निहंग सिंघों का दल हिमाचल प्रदेश की हद में प्रवेश कर गया है। महंत ने भाग-दौड़ करके सरकारी अफ़सरों के पास जाकर झूठी शिकायत की कि हमारा इलाका बहुत गरीब है। वह निहंग सिंघों की फौज का ख़र्चा बर्दाश्त नहीं कर सकता। यह जंगी फौज है तथा यहां इलाके में लूटमार करेगी, लोगों के खेतों की फसलें उजाड़ देगी। गरीबों को तंग-परेशान करेगी, इसलिए इनको इस इलाके में नहीं आने देना चाहिए। महंत ने इस प्रकार की गलत शिकायतें लिखकर दे दीं जब कि बाबा हरभजन सिंघ द्वारा सिंघों को सख़्त हिदायतें थीं कि सिंघ घोड़ों के लिए चारा तथा लंगर के लिए लकड़ी बिना पूछे नहीं लेंगे, क्योंकि सिंघों की आदत होती है कि घोड़े को भूखा नहीं देख सकते। महंत की बातों में आकर सरकार ने पुलिस को हिदायत कर दी कि सिंघों को काला अंब के पास ही रोक लिया जाये। पुलिस ने निहंग सिंघों को रोकने की बहुत कोशिश की किंतु जब निहंग सिंघों की फौज बिना किसी खौफ़ के आगे बढ़ती गई तो पुलिस हिम्मत हारकर एक तरफ रुक गई।

निहंग सिंघों का दल रास्ते में पड़ाव करता हुआ नाहन शहर से पूरोवाल गांव पहुंच गया। यह गांव पाउंटा साहिब से चार मील पीछे है। इस गांव में निहंग सिंघों की फ़ौजें एक दिन रहीं, गांववासियों ने निहंग सिंघों की बहुत सेवा की। रात को १० बजे के लगभग चार पुलिस अफ़सर बाबा हरभजन सिंघ जी के पास आए। बाबा जी को मिलने से पहले उन्होंने गांव-वासियों को बाबा जी के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाने के लिए कहा, परंतु नगर-निवासियों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया।

पुलिस अफ़सर बाबा जी के पास आए तथा बाबा जी को पाउंटा साहिब न जाने के लिए

मनाने लगे। बाबा जी ने कहा कि इतना सफर (यात्रा) करके आए हैं, अब निकट आकर गुरु-घर के दर्शन किए बिना कैसे वापिस मुड़ जायें? इस पर अफ़सरों ने और शर्त लगा दी कि ड्योढ़ी के बाहर तक ही जाएं, अंदर न जाना। बाबा जी का उत्तर स्पष्ट था कि हम पंजाब से यहां गुरु जी की चरण-छोह प्राप्त स्थान पर नत्मस्तक होने के लिए आये हैं, इससे हमें कोई रोक नहीं सकता।

बाबा जी से हुई बातचीत पुलिस अफ़सरों ने महंत को जा बताई कि वे यहां अवश्य आएंगे। महंत ने डी. सी., एस. एस. पी. तथा अन्य अफ़सरों को पैसे देकर गुरुद्वारा साहिब का कब्ज़ा अपने पास रखने के लिए मना लिया। साथ ही अफ़सरें ने यह भी कह दिया कि अगर गुरु की लाड़ली फ़ौज निहंग सिंघ आ गए तो हम उनको यह नहीं कह सकते कि गुरुद्वारे के भीतर दाख़िल न हों। महंत को यह भरोसा जरूर दे दिया कि पुलिस इर्द-गिर्द रहेगी और तेरी मदद करेगी।

बाबा हरभजन सिंघ जी ने पूरोवाल गांव से कुछ सिंघ भेजकर सारे हालात का पता किया। बाबा जी को महंत की सारी तैयारी का पता चल गया था। बाबा जी ने सारी फौज को तरतीब दी कि पहले घोड़ों वाली फ़ौज जायेगी, शेष सिंघ बाद में जायेंगे। सिंघ घोड़ों पर सवार थे। सबसे आगे नगाड़े वाला घोड़ा था।

१० मार्च, १९६४ ई को जैकारों की गूंज में शस्त्रधारी सिंघों का दल पाउंटा साहिब पहुंच गया। पुलिस सारे बाज़ार में खड़ी थी। ड्योढ़ी के सामने महंत और उसका भाई खड़ा था। महंत यह देखकर घबरा गया। उसने लगभग १०० बदमाश इकट्ठा करके शराब आदि पिलाकर उन्हें अपने साथ मिला लिया तथा एक-दो गांवों के बंदे पैसे के बल पर खरीद लिये। अपनी पहुंच के अनुसार उसने पुलिस का भी प्रबंध कर लिया। चढ़दी कला से आती फ़ौज को देखकर सिंघों को हाथ डालने की किसी की भी हिम्मत न पड़ी। पुलिस की पाबंदियों के बावजूद गुरुद्वारा साहिब में पहुंचकर सिंघों ने घोड़ों से काठियां उतारकर, अपने आसन लगाए, स्नान करके दरबार साहिब में माथा टेकने के लिए चल पड़े। इसके बाद कुछ सिंघ घोड़ों की सेवा में व्यस्त हो गए। महंत वहां पर हाज़िर था। उसने अपने शराबी साथियों को साथ लेकर दो पीपों (काठ) में आटा, १० किलो चीनी तथा थोड़ा-बहुत और सामान लेकर कहने लगा कि रसद ले लो। यह रसद एक वक्त के लिए भी पूरी नहीं थी। महंत ने ऊपरी मन से बाबा जी से मंगल-कुशलता पूछी तथा कहा कि बाहर आसन क्यों लगाया है, भीतर कोठड़ी में आसन लगा लो, बाबा जी ने कहा कि हम तो वृक्षों तले रहने वाले हैं, कोठड़ियों में हमने क्या करना! हम तो तेरे साथ कुछ वचन करने आए हैं। तुम्हें सिंघ सजाया था! क्या तुम रहित मर्यादा पर पूरा पहरा दे रहे हो? आमदन-खर्च का सारा हिसाब-किताब ठीक-ठाक रख रहे हो कि नहीं?

महंत बहुत चालाक था। उसने बाबा जी से कहा कि आप बात को उलझायें न, यह तो हमारी जद्दी जायदाद है। हमारे बिना यहां किसी अन्य को कोई अधिकार नहीं, परंतु फिर भी आपने रसद लेनी है तो ले लें और यहां से चले जायें। यहां का यह उसूल है कि तीन दिनों से ज्यादा यहां कोई नहीं रह सकता। यह सुनकर बाबा हरभजन सिंघ ने कहा कि तू यहां से चला जा। अगर यह हमारे गुरु का घर होगा तो हम तीन दिनों से ज्यादा रह लेंगे, अगर तेरा होगा तो हमें यहां से भेज देना।

महंत बाबा जी का बदला रूप देखकर चला गया और चार दिन तक न आया, न घोड़ों को चारा और न सिंघों को परशादा। सिंघ यमुना नदी में जाकर स्नान कर आते और गुरबाणी पढ़ते रहते। बर्तन मांझकर उल्टे रख दिए। कुछ दिन इसी तरह रहा, किंतु जब शहर की संगत को मालूम पड़ा तो हाहाकार मच गई। इतनी दूर से संगत आई हो और लंगर-पानी का प्रबंध न हो! संगत को यह बात बहुत महसूस हुई। संगत ने मिलकर घोड़ों के लिए चारा और सिंघों के लिए लंगर का प्रबंध किया। संगत ने बाबा हरभजन सिंघ से विनती की कि हम महंत द्वारा की भूलों की माफ़ी मांगते हैं। आप दीवान सजायें तथा लंगर पानी का प्रबंध शहर की संगत करेगी। गुरु के लंगर एवं गुरुद्वारा साहिब में गुरबाणी व कीर्तन का प्रवाह शुरू हो गया। गुरुद्वारा पाउंटा साहिब में पहले उसूल बना हुआ था कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश वाली जगह पर एक ग्रंथी के बिना दूसरा कोई नहीं जा सकता। बाबा हरभजन सिंघ जी ने कहा कि अगले अंदर जाकर अरदास करो। बाबा निहाल सिंघ जी के हाथ में बाटा था तथा उनके साथ एक और सिंघ हाथ में जल का बाटा लेकर जा रहा था। जिस समय वे दोनों अंदर जाने लगे तो ग्रंथी सिँघ ने बाहें फैलाकर इनका रास्ता रोक लिया कि आप अंदर नहीं जा सकते। दोनों सिंघों ने उसको एक तरफ कर दिया तथा अंदर जाकर अरदास की। जब इन सिंघों ने अंदर के हालात देखे तो हैरान रह गए तथा मन बहुत दुखी हुआ। अंदर बेअंत गर्द एवं मिट्टी चढ़ी हुई थी जैसे सफ़ाई की हुई को मुद्दतें हो गई हो। ग्रंथी सिंघ वहां से चला गया। बाबा जी के दल के साथ कीर्तनी जत्था भी था जो सुबह-शाम कीर्तन करता था। गुरुद्वारा साहिब में सुबह-शाम कीर्तन शुरू हो गया। महंत का एक लांगरी लंगर में था। उसको बाबा जी ने कहा कि अगर तूने बाबा जी का सिंघ बनकर रहना है तो ठीक है, नहीं तो तू भी वहां चला जा जहां महंत गया है।

महंत के आदमियों ने कई बार सिंघों से हाथापाई करने की कोशिश की परंतु सिंघों ने समझदारी से काम लिया। एक दिन शाम का कीर्तन हो रहा था। बाबा निहाल सिंघ जी अंदर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज की सेवा में हाज़िर थे। महंत ६०-७० आदमियों को साथ लेकर आ गया जिन्होंने शराब पी रखी थी। ये कीर्तन की सेवा में विघ्न डालने के लिए हाज़िर होने लगे। महंत का विचार था कि वो कीर्तन कर रहे सिंघों के आगे से साज़ उठा लेगा और अपना जत्था बिठा लेगा एवं पहरे पर खड़े सिंघों से शस्त्र छीन लेगा। उसको आशा थी कि निहंग उससे डरकर भाग जायेंगे। पहरे पर खड़े सिंघों को इस बात का एहसास हो गया था कि यह शराबी टोला कुछ शरारत करने वाला है। महंत, उसका भाई एवं ग्रंथी सिंघ भीतर जाने लगे तो बाबा निहाल सिंघ जी ने उनको भीतर आने से रोक दिया और कहा कि तुम लोगों ने खुद ही उसूल बना रखा है कि भीतर कोई नहीं जा सकता। यह सुनकर वे पीछे हट गए तथा कीर्तन कर रहे सिंघों के आगे से साज उठाने लगे। पहरे पर खड़े सिंघों ने जाकर उनको पकड़ लिया। इस तरह वे हाथापाई करने लगे। महंत के आदमियों ने सिंघों से शस्त्र छीनने की कोशिश की, सिंघों ने हल्ला बोलकर उनको अच्छी तरह से सोधा। वे सिंघों से मार खाकर दौड़ गए। बाहर पुलिस खड़ी थी। बाबा निहाल सिंघ जी एवं एक अन्य सिंघ बाहर गए और पुलिस को ताड़ना की कि पुलिस एक कदम भी

आगे न बढ़े। हां, अगर कोई इंस्पेक्टर अंदर आकर बात करना चाहता है तो वो सादी वर्दी में आकर बात कर सकता है। एक इंस्पेक्टर सादी वर्दी में अंदर आया तो उसको सारी बात समझाई गई कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में शराब पीकर आने वाले बदमाशों को रोकना गुरु की फ़ौज का फ़र्ज है। बाबा जी की बातें सुनकर इंस्पेक्टर मान गया कि महंत का कसूर है। महंत के जो आदमी अपने साइकिल तथा जूते छोड़कर भाग गए थे, पुलिस इंस्पेक्टर उन सब को इकट्ठा करके एवं बोरी में डालकर थाने ले गया।

बाबा जी ने पाउंटा साहिब की पवित्रता के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के १०१ अखंड पाठ साहिब की शृंखला आरंभ कर दी। पाठ आरंभ हो जाने के बाद कुछ देर तक अंदर कोई न आया, पुलिस की गार्द बाहर घेरा डाले बैठी रही।

डिप्टी कमिश्नर के साथ समय-समय पर बातचीत होती रहती थी। पूरी बात पता चलने पर उसने महंत को बुलाकर कहा कि तूने अमृत छककर इनकी जत्थेबंदी का सिंघ सजा था तथा तू इनके उसूलों को भंग किया है। तू इनके पास अपनी भूल बख्शाकर इनको मना ले, इसी में तेरी भलाई है। जब महंत ने डिप्टी कमिश्नर की बात भी न मानी तो उसने कह दिया कि हम धार्मिक मसले में कोई दख़ल नहीं दे सकते, इसलिए तू अपना मामला खुद ही निपट।

महंत हर तरफ से लाचार हो रहा था। उसने एक और चाल चली कि तीन लाख रुपये बैंक में से निकलवाकर आहला अफ़सरों में बांट दिए तथा उन्हें अपने साथ मिलाकर अपने एक भरोसेयोग्य कशमीरा सिंघ को गुरुद्वारा साहिब का रिसीवर नियत कर लिया, परंतु सिंघों ने उसको कब्ज़ा देने से इन्कार कर दिया।

२२ अखंड पाठों का भोग पड़ चुका था तथा २३ वां अखंड पाठ आरंभ हो चुका था। माझ राग चल रहा था। २२ मई, १९६४ ई को मंगलवार वाले दिन सुबह तहसीलदार ने आकर कहा कि डिप्टी कमिश्नर आर. के. चंडेल ने सलाह-मशविरा करने के लिए बाबा हरभजन सिंघ जी को नाहन बुलाया है। उस समय कुछ सिंघ पंजाब आये हुए थे। जत्थेदार हरभजन सिंघ जी सरकार की खोटी नीयत को समझ चुके थे कि हिमाचल सरकार बातचीत का बहाना करके उन्हें गिरफ़्तार करना चाहती है। बाबा जी ने नाहन जाने से मना कर दिया। डिप्टी कमिश्नर ने थोड़े समय के बाद फिर संदेशा भेजा कि वो पाउंटा साहिब ही आ रहा है, इसलिए बाबा जी १० मिनट के लिए रैस्ट हाऊस में आ जायें। बाबा जी ने मिलने के लिए हां कर दी। जाने से पहले बाबा हरभजन सिंघ जी ने सारे सिंघों को इकट्ठा करके कहा कि सरकार की नीति का कोई पता नहीं, इसलिए सभी सिंघों ने हर समय तैयार-बर-तैयार रहना है। गुरु महाराज के दरबार की पवित्रता हर हाल में कायर रहनी चाहिए, अखंड पाठ साहिब भंग नहीं होना चाहिए, चाहे इस लिए सिंघों को अपना बंद-बंद कटवाना पड़ जाये। इतने में तहसीलदार भी डिप्टी कमिश्नर के आने का संदेश लेकर आ गया। बाबा जी अकेले ही डिप्टी कमिश्नर को मिलने जाना चाहते थे परंतु एक सिंघ महिंदर सिंघ जिद करके बाबा जी के साथ चला गया।

उस समय बाबा निहाल सिंघ जी अपने आसन पर आये तथा कमरकस्सा करके शस्त्र-वस्त्र सजा लिए। एक ग्रंथी बाबा गुरबचन सिंघ चिट्ठी लिख रहा था। बाबा निहाल सिंघ जी ने

उसको रोककर कहा कि बाबा हरभजन सिंघ जी कहकर गये हैं कि आप लोग दरबार में जायें तथा तैयार-बर-तैयार रहें, फ़ौज ने ढीले नहीं रहना।

बाबा हरभजन सिंघ जी रैस्ट हाऊस में पहुंचे तो डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि महंत गुरदिआल सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध लिखकर दे दिया है, आप भी इस पर हस्ताक्षर कर दें। आप दोनों दल अदालत में जाकर केस लड़ें, जो जीतेगा वही गुरुद्वारा साहिब की संभाल करेगा, उतनी देर के लिए गुरुद्वारा साहिब ख़ाली कर दें। बाबा हरभजन सिंघ जी ने डिप्टी कमिश्नर को समझाया कि महंत को कोई हक नहीं कि वह गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध किसी को लिखकर दे। गुरुद्वारा साहिबान खालसा पंथ के हैं। अगर महंत ने इस तरह कुछ लिखकर दिया है तो हमने उसकी तरह कुछ भी लिखकर नहीं देना। बाकी रही गुरुद्वारा साहिब ख़ाली करने की बात, हमने गुरुद्वारा साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ किए हुए हैं। जितनी देर १०१ श्री आखंड पाठ साहिब का भोग नहीं डाला जाता उतनी देर हम कहीं नहीं जायेंगे।

बाबा हरभजन सिंघ जी की बात सुनकर पुलिस की गार्द बाबा जी के इर्द-गिर्द इकट्ठी होकर घेरा डालकर खड़ी हो गई। तीन-चार मील दूर खड़ी पुलिस को भी बुला लिया गया तथा उनको हुक्म किया गया कि गुरुद्वारा साहिब को घेरा डाल लिया जाये। इस तरह हिमाचल प्रदेश प्रशासन ने बाबा हरभजन सिंघ जी को समझौता करने के बहाने रैस्ट हाऊस में बुलाकर गिरफ़्तार कर लिया तथा पुलिस को गुरुद्वारा साहिब को घेरा डालने का हुक्म दे दिया।

सवेरे साढ़े ग्यारह बजे का समय था। कुछ सिंघ परशादा छकने के लिए लंगर की ओर जा रहे थे, कुछ सिंघ पंगत में बैठे थे, कुछ सिंघ घोड़ों को जल छका रहे थे। वे निशान साहिब के पास ही पहुंचे थे कि दरबार साहिब की ड्योढ़ी में पहरा दे रहे सिंघ ने हांक मारकर शीघ्र ही दरबार साहिब के अंदर आने के लिए कहा, क्योंकि उसने बाबा निहाल सिंघ जी के पीछे पुलिस को आते देख लिया था। जब बाबा निहाल सिंघ जी ने पीछे मुड़कर देखा तो उनके पीछे पुलिस से भरी गाड़ियां खड़ी थीं।

पुलिस के सिपाही गाड़ियों से छलांगें लगाकर जूतों समेत गुरुद्वारा साहिब में चले गए। गुरुद्वारा साहिब के अंदर के सिंघों ने दरवाज़े-खिड़कियां अंदर से बंद कर लिए। अंदर लगभग १५ सिंघ थे। पुलिस ने पहले बाहर वाले सिंघों को पकड़ने की ठानी। एक-एक सिंघ को दस-दस, बीस-बीस पुलिस वाले पड़ गए और उन्हें काबू कर लिया। दर्शनी ड्योढ़ी के साथ लगते ऊपर एक कमरे में चार सिंघ थे। उन्होंने हमला किया तथा पत्थरों से मुकाबला करते रहे। आखिर में उनको भी काबू कर लिया तथा उनको एक-एक को बांधकर नीचे फेंका गया, टागों से पकड़कर घसीटा गया तथा बाद में थाने ले गए।

दरबार साहिब के अंदर मौजूद सिंघों ने गुरमता किया कि जितनी देर तक शरीरों में सांस हैं उतनी देर तक श्री अखंड पाठ साहिब भंग नहीं होने देंगे। अंदर सिंघों के पास रिवायती हथियार ही थे। वे सारे चार-चुफेरे पहरे पर खड़े हो गए। बाबा निहाल सिंघ उस समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब महाराज की हजूरी में चंवर (चौर) कर रहे थे।

पुलिस ने अंदर आने के लिए लोहे की राडों से दरवाजे-खिड़कियां तोड़ने शुरू कर दिए

परंतु सिंघों ने उनको अंदर दाख़िल होने से रोके रखा। जब पुलिस ने अंदाज़ा लगा लिया कि अंदर सिंघों के पास रिवायती हथियारों के अलावा और कुछ नहीं है तो बाहर से स्पीकर लगाकर सिंघों को श्री अखंड पाठ साहिब बंद करके गिरफ़्तार होने के लिए कहा। सारे सिंघ बाणी का जाप करने लग गए तथा बड़ी सावधानी से पहरा देते रहे। साढ़े बारह बजे के लगभग डिप्टी कमिश्नर द्वारा दोबारा चेतावनी दी गई। एक तरफ से दरवाज़ा टूटा हुआ था। वहां से तीन सिपाहियों ने एक सिंघ को हाथ डालने की कोशिश की कि घसीटकर बाहर निकाल सकें, किंतु सिंघ भी पूरे तैयार-बर-तैयार थे, इसलिए सिपाहियों से वह सिंघ न बाहर खींचा गया और न ही पुलिस अंदर दाख़िल हो सकी। डिप्टी कमिश्नर का हुक्म होने की देर थी कि पुलिस ने बूटों समेत ही गुरुद्वारा साहिब के अंदर दाख़िल होकर तथा श्री अखंड पाठ साहिब कर रहे सिंघों पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। उस समय गुरुद्वारा साहिब के अंदर स. दरशन सिंघ, स. धंना सिंघ, स. हरभजन सिंघ, स. मंगल सिंघ, स. प्रीतम सिंघ, स. उदै सिंघ तथा कुछ यात्रा करने आये यात्री मौजूद थे। गुरुद्वारा साहिब की दीवारें छलनी हो गईं। ग्यारह सिंघ मौके पर शहीद हो चुके थे। अन्य सिंघ बुरी तरह से ज़ख़्मी हो गए थे। ग्रंथी सिंघ भाई धंना सिंघ के पेट के बाईं ओर गोली लगी। वे वहीं मौके पर ही शहीदी पा गए। बाबा निहाल सिंघ जी के बायें हाथ, कंधे तथा जांघ पर गोलियां लगीं, जिसके कारण उनका शरीर सुन्न हो गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पावन स्वरूप खून से लथपथ हो गया था। बरसती गोलियों में भी सिंघ बारी-बारी श्री अखंड पाठ साहिब को खंडित होने से बचाने के लिए पूरा ज़ोर लगाते रहे। इस तरह बारी-बारी से तीन सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिआ में बैठे शहीदी पा गए। गुरुद्वारा साहिब में शहीद होने वाले स. प्रीतम सिंघ जी निहंग सिंघ बजरौर के, स. हरभजन सिंघ जी निहंग सिंघ चौहड़ा के रहने वाले थे। स. धंना सिंघ जी निहंग सिंघ भदौड़ के रहने वाले थे। वे जो कि उस समय पाठ कर रहे थे। उनके पेट में गोली लगी तथा वे पावन मर्यादा को निभाते हुए वहीं शहीदी पा गया। स. संतोख सिंघ जी निहंग सिंघ अमृतसर के, स. लाभ सिंघ जी निहंग सिंघ फिरोज़पुर के, स. दलीप सिंघ जी निहंग सिंघ कांगड़ा के, स. उदै सिंघ जी निहंग सिंघ मत्तेवाल, एक नामधारी सिंघ (यात्री), बाबा सूबेदार जी (यात्री) तथा एक अन्य यात्री, जो एक दिन पहले आया था, सारे पुलिस की गोलियों से शहीद हो गए। गुरुद्वारा साहिब के साथ लगता चौबच्चा सिंघों के खून से भर गया।

भाई अजीत सिंघ जी कक्षा ग्यारह के इम्तिहान देकर अपने नाना-नानी के पास श्री पाउंटा साहिब में आया हुआ था। इनके नाना जी फरले वाले नित्तनेमी सिंघ थे। भाई अजीत सिंघ जी उनके साथ ही गुरुद्वारा साहिब में आए हुए थे। सबसे ज्यादा समय भाई अजीत सिंघ जी अस्पताल में रहे। उनकी एक टांग छोटी हो गई तथा वे चौकड़ा (पालथी) भी नहीं लगा सकते।

डिप्टी कमिश्नर का ड्राइवर सिक्ख था। उसको अंदर भेजा गया, जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब महाराज के स्वरूप को रुमालों समेत उठाकर पता नहीं कहां ले गया। बाबा निहाल सिंघ जी का शरीर निढाल (सुन्न) पड़ा था किंतु वे आंखों से सब देख रहे थे। शाम को ६ बजे के लगभग ज़ख़्मी एवं शहीद हुए सिंघों

के शरीर बाहर निकाले गए। निशान साहिब की तरफ दो गाड़ियां खड़ी की गई थीं जिनमें से एक गाड़ी में शहीद हुए सिंघों के शरीर तथा जख़्मी सिंघों को और दूसरी गाड़ी में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का खून से लथ-पथ हुआ स्वरूप, बिछौना, रुमाले, दरियां आदि रखी गई थीं। दो सिंघों की शहादत गाड़ी में ही हो गई। जब ये गाड़ियां बाज़ार में से निकल रही थीं कि लोगों ने अपने घरों की छतों से देख लिया कि लाशों में कई शरीर जख़्मी भी हैं। संगत ने शोर मचा दिया कि जख़्मियों को यहां ही अस्पताल में दाख़िल करवाया जाये। संगत के ज़ोर डालने से जख़्मियों को पाउंटा साहिब के सरकारी अस्पताल में दाख़िल करवाया गया, पुलिस के पहरे में ही डॉक्टर दवा देते थे।

सिर्फ तीन शहीद सिंघों के मृतक शरीर ही संगत को दिए गए। जिनका अंतिम संस्कार २४ मई, १९६४ ई को यमुना नदी के किनारे पर किया गया।

बाबा निहाल सिंघ जी की हालत बहुत खराब थी। बाईं तरफ तो शरीर पूरी तरह से जख़्मी हुआ था। डॉक्टर की तरफ से इनको पानी देने से मना किया गया था।

पुलिस ने इस तरह के प्रबंध कर दिए थे कि कोई भी व्यक्ति शहर की ख़बर बाहर न दे सके, तार न दे सके, टेलीफोन न कर सके। डॉकघरों एवं टेलीफ़ोन एक्सचेंज पर पहरा बिठा दिया गया था, किंतु दो सिंघों ने यमुना नदी पार करके एक ने देहरादून और एक ने दिल्ली जाकर सिक्ख संगत को इस समस्त घटना के बारे में बता दिया। इस घटना को सुनकर सिक्ख जगत के हृदय आहत हुए। जिस-जिस शहर तथा जिस-जिस गांव में यह ख़बर पहुंचती गई वहां की संगत पाउंटा साहिब की ओर चल पड़ी। जिन सिंघों को गोलियों लगी हुई थीं, दूसरे दिन ऑप्रेशन करके निकाली गईं। बाहर ख़बर चहुं तरफ पहुंच चुकी थी, चारों तरफ हाहाकार मच चुकी थी, लीडर पाउंटा साहिब की ओर आ रहे थे। ज्ञानी गुरबचन सिंघ जी भिंडरावाले पांच सिंघों समेत आए। उन्होंने आकर जख़्मी सिंघों का हाल-चाल पूछा और शहीद सिंघों के नमित्त दो श्री अखंड पाठ साहिब करवाये। तीसरे दिन मास्टर तारा सिंघ, जत्थेदार संतोख सिंघ जी भी दिल्ली से पहुंच गए। उन्होंने अस्पताल में आकर जख़्मी सिंघों से साके की सारी घटना सुनी। संत फतहि सिंघ जी एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए श्री अमृतसर से चल कर ७ जून, १९६४ ई को पाउंटा साहिब पहुंच गए। उन्होंने यहां आकर शहीदी कान्फ्रेंस में भाग लिया। इस कान्फ्रेंस में ४०,००० के लगभग संगत ने हिस्सा लिया। कान्फ्रेंस में इस घटना की घोर निंदा की गई।

७ जून वाले दिन एक ११-सदस्यीय एक्शन कमेटी बनाई गई जिसने केसों की पैरवी करनी थी। गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध के लिए २१-सदस्यीय प्रबंधक कमेटी बनाई गई। मुख्यमंत्री पंजाब जस्टिस गुरनाम सिंघ ने प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री से मिलकर सारी घटना के बारे में बताया। प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध चुनी हुई कमेटी को सौंप दिया। बाबा हरभजन सिंघ जी तथा अन्य गिरफ़्तार सिघों को निजी मुचलके पर रिहा कर दिया गया। गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध के लिए चुनी गई कमेटी में गुरुद्वारा हरीआं वेलां के उप जत्थेदार बाबा बिशन सिंघ जी निहंग सिंघ तथा बुड्ढा दल के निहंग सिंघ बाबा करतार सिंघ जी को सदस्य बनाया गया।

बाहर से जो लीडर जाते थे वे पता करना

चाहते थे कि गुरुद्वारा साहिब में क्या हुआ था, इसलिए उनको बाबा निहाल सिंघ जी से ही संपर्क करना पड़ता था। बाबा निहाल सिंघ जी के माता-पिता को जब इस दुखदायक घटना का पता चला तो वे भी पाउंटा साहिब में पहुंच गये। उधर अस्पताल की हालत यह थी कि बाबा निहाल सिंघ जी से कोई सिंघ दरवाज़े के पास खड़ा होकर तो बातचीत कर सकता था परंतु उनके पास कोई नहीं जा सकता था। अस्पताल के जिस कमरे में बाबा निहाल सिंघ जी को रखा गया था उस कमरे में से श्री दरबार साहिब, पाउंटा साहिब के दर्शन होते थे तथा बाणी सुनती रहती थी। इससे इन ज़ख़्मी सिंघों का मन शांत रहता था। अस्पताल में एक सिक्ख बीबी थी। वह इन सिंघों की बहुत सेवा करती रही। सरकार को भय होने लगा कि संगत ज़ख़्मी सिंघों को मिलने जरूर आएगी तथा उसे यहां के सारे हालात इन ज़ख़्मी सिंघों से पता चल जायेंगे। सरकार ने इन सबसे बचने के लिए इन ज़ख़्मी सिंघों को पाउंटा साहिब से नाहन अस्पताल में बदलने की सलाह बना ली। ६ जून की रात को सारे ज़ख़्मी सिंघों को नाहन के अस्पताल में ले गए। ज़ख़्मी सिंघों के बार-बार मना करने पर भी पहले उनको २० दिन नाहन अस्पताल में और फिर शिमला अस्पताल ले गए।

पुलिस ने इन्कवायरी (पूछ-ताछ) शुरू कर दी। यह इन्कवायरी इलाहाबाद हाईकोर्ट का जज ख़हिरा कर रहा था। यह मात्र दिखावा ही था। जब इन्कवायरी पूरी ही गई तो फैसला सिर्फ एक लाइन में ही दिया गया कि पुलिस को गोली चलाने की जरूरत पड़ी तो ही गोली चलाई गई। इस फैसले से सिंघ दोषी बन गए तथा इन पर १३-१३ केस दर्ज कर दिए गए।

शिमला अस्पताल से ठीक होने के बाद बाबा निहाल सिंघ जी पाउंटा साहिब आ गए। पाउंटा साहिब आकर बाबा जी ने तीन माह दरबार साहिब की सेवा की। वे यहां से ही पेशी भुगतने जाते रहे। पेशी भुगतने के लिए लगभग ३८ सिंघ जाते थे। ये सारे पाउंटा साहिब ही रह रहे थे। इलाके की संगत ने साके से पहले एवं बाद में भी इन सिंघों का बहुत साथ दिया।

१८ सिंघों पर १३-१३ केस थे। चार सिंघ, जिनमें बाबा हरभजन सिंघ, बाबा निहाल सिंघ जी, भाई महिंदर सिंघ जी तथा भाई दया सिंघ जी शामिल थे, को सामने रखा जाता था। इन चारों सिंघों पर चार-चार केस और बनाकर इनके वारंट जारी किए गए। इनको दोबारा गिरफ़्तार कर लिया गया। इनको साढ़े पांच माह के लिए फिर जेल में भेज दिया गया। बाबा निहाल सिंघ जी के पिता के एक दोस्त प्रो. भगत सिंघ जी थे। उनका एक दोस्त वकील था। उस वकील ने इन सिंघों के केस की पैरवी की, जिससे साढ़े पांच माह के बाद इनकी ज़मानत हुई। अदालत में तारीखों का सिलसिला शुरू हो गया। जब सिंघों की पेशी होती तो जज ने बाबा जी को कोई अच्छे वकील द्वारा पैरवी करने को कहा, नहीं तो एक-एक केस में दस-दस वर्ष की कैद होने का डर बता दिया। बाबा जी ने अपने केस का फैसला अकाल पुरख की मर्जी पर छोड़ दिया तथा रज़ा में रहना प्रवान कर लिया। लगभग चार माह तक इस प्रकार पेशियां होती रहीं। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. जसवंत सिंघ परमार ने कह दिया था कि जब तक केस वापिस नहीं होता उस समय तक पेशियां भुगतते रहना है। कुछ समय बाद तारीख़ों का सिल-सिला तेज़ हो गया तथा तारीखें जल्दी-जल्दी पड़ने लग गईं। चाहे डॉ. जसवंत सिंघ परमार

ने रिहाई के आर्डर तो कर दिए थे परंतु कार्यवाही होते हुए कुछ समय और लग गया।

बाबा निहाल सिंघ जी तथा बाबा महिंदर सिंघ जी, संत बाबा फतहि सिंघ जी को मिलने के लिए श्री अमृतसर गए तथा उनको विनती की कि उनके केस की कोई चाराजोई की जाये। उन्होंने इन दोनों सिंघों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष संत चंनण सिंघ जी के पास भेज दिया। संत चंनण सिंघ शांतचित्त स्वभाव के मालिक थे। उन्होंने सिंघों की सारी घटना सुनी तथा पंजाब के मुख्यमंत्री जस्टिस गुरनाम सिंघ जी के साथ सारी बातचीत की। उन दिनों में जस्टिस गुरनाम सिंघ जी की सिंघणी अकाल चलाणा कर गई थी। उन्होंने सिंघों को श्री अखंड पाठ साहिब के भोग वाले दिन आने के लिए कहा। जस्टिस गुरनाम सिंघ जी तथा हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. जसवंत सिंघ परमार जी का आपस में भाइयों जैसा प्यार था। जस्टिस गुरनाम सिंघ जी ने भी इन सिंघों की सारी आप-बीती सुनी तथा उनके सामने ही डॉ. जसवंत सिंघ परमार को कहा कि पहले भी आपने ज्यादती की और अब भी आप ज्यादती करके जख्मों पर नमक छिड़क रहे हो। अगर भला चाहते हो तो केस वापिस ले लो और इनको रिहा कर दो। इस तरह जस्टिस गुरनाम सिंघ जी ने प्रभाव प्यार से सिंघों को पूरी तरह से बरी करवा दिया और सारे केस वापिस हो गए।

१९६४ ई के खूनी साके के बाद पाउंटा साहिब का प्रबंध ११-सदस्यीय कमेटी के पास आ गया। इस कमेटी का अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का अध्यक्ष ही होता है।

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें। *-संपादक।*

आज़ाद भारत के श्रमिक वर्ग का खसता हाल क्यों?

*-स. सुरिंदर सिंघ निमाणा**

वैसे तो विशाल तथा गहरे अर्थों में परमात्मा द्वारा सृजित सभी जीव-जंतु ही कार्यरत रहते हैं परंतु श्रम (किरत) की अवधारणा मुख्यत: मनुष्य-मात्र से जुड़ी हुई है। यह बात अलग है कि अति बुद्धिमान मनुष्य जीव-जंतुओं को अपने वश में करके उनसे ऐसे-ऐसे काम लेता है जिनको मनुष्य द्वारा की जाने वाली किरत भी माना जा सकता है और उन जीव-जंतुओं द्वारा की जाने वाली किरत भी। उदाहरणत: श्रमिकों द्वारा वन-क्षेत्र में लकड़ी के काटे गये भारी लट्ठों को बैलगाड़ी में लादकर निश्चित स्थल पर पहुंचाना; मदारी द्वारा शिक्षित किये भालू या बंदर-बंदरिया द्वारा विभिन्न प्रकार के खेल दिखाकर एकत्रित लोगों का मनोरंजन करना आदि। इसके बावजूद एक श्रम वो भी है जिसमें श्रमिक को बहुत जान मारनी पड़ती है, जिसको करते हुए वह सिर से पांव तक पसीने से तर-ब-तर हो जाता है। कृषक का श्रम भी बहुत सख़्त है, विशेषत: उन कृषकों का जो अभी भी परंपरागत साधनों के द्वारा कृषि का व्यवसाय कर रहे हैं। श्री गुरु नानक देव जी को भी कृषि-श्रम की गहरी अनुभूति थी। आपने बाल्य-काल में तो शायद भैंसें ही चरायी होंगी जो कि कृषि के व्यवसाय का एक सहायक धंधा है, लेकिन दशकों के कालांतर में फैली अपनी लंबी सत्य-प्रचार-यात्राओं के पश्चात आप जी द्वारा दरिया रावी के किनारे 'करतारपुर' नगर बसाकर वहां लगभग अठारह वर्ष कृषि-कार्य करना, रूहानी महापुरुषों की परिपाटी में शायद उन्हीं के ही हिस्से आया है।

भाई लहिणा जी स्वयं दुकानदारी (छोटे स्तर की) का काम किया करते थे। श्री गुरु नानक देव जी को कृषि-कार्य करते हुए देखकर वे पहले हैरान हुए, तत्पश्चात सम्मोहित होते हुए विस्माद की मनोस्थिति में चले गए। फिर शिष्य बनकर गुरु-चरणों के साथ जुड़ जाने के पश्चात् गुरु जी ने भाई लहिणा जी से कृषि का काम भी करवाया। श्री गुरु अमरदास जी भी श्रम करते रहे। श्री गुरु रामदास जी श्रमिक के संरक्षक तथा बहुत बड़े हमदर्द थे। तभी तो उन्होंने अपने द्वारा बसायी नगरी 'रामदासपुर' अथवा 'श्री अमृतसर' में बावन प्रकार के व्यवसायियों को देश के विभिन्न क्षेत्रों से लाकर बसाया। गुरु जी ने अपने बाल्य-काल में एक अनाथ बालक होने की विवशता वाली स्थिति में घूम-फिर कर उबले हुए चने बेचने का श्रम करके कमाई की थी। उनके इस श्रमपूर्ण कार्य एवं बेहद ईमानदाराना दृष्टि व साफ़-स्वच्छ व्यवहार को देख-जांच कर ही तीसरे पातशाह जी ने उन पर विशेष कृपा-दृष्टि डाली थी। ये उदाहरण देने का अंतिम निष्कर्ष यही है कि सभी सिक्ख गुरु साहिबान या तो स्वयं भी जीवन के विभिन्न पड़ावों में श्रम में लगे रहे या उन्होंने श्रमिकों के साथ गहरा मेल-मिलाप रखा। गुरु नानक साहिब ने ईमानदार श्रमिक भाई लालो (बढ़ई) को विशेष सम्मान बख़्शा। इससे भी अधिक ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि जिस नगर का रहने वाला श्रमिक भाई

**मुख्य संचालक, ऐवरग्रीन साइंस एण्ड स्पोर्टस स्कूल, अच्चल साहिब, बटाला (गुरदासपुर), मो. ८८७२७-३५१११*

लालो था उसी नगर के रहने वाले श्रमिकों के शोषक मलिक भागो द्वारा आमंत्रित तथाकथित ब्रह्मभोज का बहिष्कार करते हुए, गुरु जी ने उसमें परसे जा रहे विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजनों को पाप की कमाई कहकर स्वयं श्रम न करने वालों तथा दूसरों के श्रम पर पलने वालों को नकारा। इससे अधिक श्रम तथा श्रमिक का सम्मान और क्या हो सकता है?

वैसे भारतीय व्यवस्था में प्राचीन काल से मनु द्वारा निर्धारित सामाजिक विधान में सर्वाधिक सख़्त श्रम करने वालों का अपमान होता चला आ रहा था। यह अमानवीय तथा शोषण पर आधारित व्यवस्था के विरुद्ध कुछ भी कहना बहुत दूर की बात थी अर्थात् सब कुछ चुपचाप सहन् किया जा रहा था। इस व्यवस्था के विरुद्ध बोलकर जन-साधारण का आक्रोष देश के शासकों-प्रशासकों को दिखाने का काम करना केवल गुरु नानक साहिब जैसे अपूर्व महापुरख के ही हिस्से आया। इसी लिए तो अलामा इकबाल ने कहा है :

फिर उठी आखिर सदाअ तैहीद की पंजाब से।
हिंद को इक मर्दे-कामिल ने जगाया ख़्वाब से।

श्री गुरु नानक देव जी ने रूहानी गुणों के संचार का निर्मल उपदेश कृषि-कार्य के साथ जुड़े उपकरणों के माध्यम से जिस प्रकार दिया वह भी श्रम को ऊपर उठाता हुआ हमारे दृष्टिगोचर होता है :

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥
(पन्ना ५९८)

विश्व स्तर पर व्यापक रूप में सामंतवादी व्यवस्था में हलवाह कृषकों तथा कुदाली चलाने वाले श्रमिकों का बेदर्दी के साथ शोषण होता आया है। उदाहरणत: रूस में ज़ारशाही व्यवस्था में कृषकों तथा श्रमिकों का अत्यधिक शोषण होता रहा, जिसके ख़िलाफ १९१७ में महान् क्रांति आई तथा आर्थिक-सामाजिक समानता पर आधारित समाजवादी व्यवस्था स्थापित हुई, जिसमें श्रमिक वर्ग की प्रधानता में एक अच्छी व्यवस्था कायम हुई। वो लगभग सात दशकों तक सफलता के साथ चली भी, लेकिन फिर बीसवीं सदी के अंतिम दशक के आरंभ में उसको पूंजीवादी व्यवस्था ने भारी पड़कर बिखेर दिया। इसके परिणामस्वरूप सोवियत संघ टूट गया और समाजवादी व्यवस्था की जगह पूंजीवादी राजनैतिक प्रबंध कायम हुआ। आज विश्व स्तर पर पूंजीवादी व्यवस्था का मुख्य अगुआ अमेरिका बना हुआ है और समाजवादी व्यवस्था के तत्वों वाले चीन में भी पूंजीवादी प्रबंध के तत्व अधिक प्रबल हो रहे हैं। इसमें किसी न किसी रूप में श्रम तथा श्रमिक की लूट-खसूट तय है। आज विश्व स्तर पर पब्लिक सेक्टर कमज़ोर पड़ रहा है और निजी सेक्टर भारी। आज के मशीनी युग में अथवा कंप्यूटर युग में दिमागी श्रमिकों की संख्या बहुत तीव्रता से बढ़ रही है। इन सबके बावजूद सर्वाधिक ध्यान देने योग्य वर्ग आज भी हाथों से काम करने वाला श्रमिक वर्ग ही है। विकसित देशों में स्थिति इतनी दयनीय नहीं है। वहां श्रमिक वर्ग यदि काम करता है तो उसे उसका योग्य फल भी प्राप्त करता है और वह अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति बड़ी आसानी से कर लेता है। हमारे देश में हाथों से काम करने वाले श्रमिक वर्ग की स्थिति अधिक अच्छी नहीं है। नि:संदेह कुछ कानून श्रमिक तथा कृषक वर्ग की बेहतरी का ख़्याल करते हुए बने हैं परंतु उनका नेक नीयति तथा पूर्ण रूप से पालन किया जाना अभी बहुत दूर की बात लगती है।

हमारे देश में बहुत बड़ी संख्या में श्रमिक बेकारी की चक्की में पिस रहे हैं। हरेक नगर-

उपनगर के विशेष चौक ऐसे हैं जहां श्रमिक दिहाड़ी लग जाने की आशा में प्रात: काल आ खड़े होते हैं। इनमें से कइयों को १०-११ बजे तक भी किसी के द्वारा काम पर ले जाने वाले की प्रतीक्षा रहती है। इस प्रतीक्षा के उपरांत भी उन्हें प्राय: उदास-निराश रूप में घर लौटना पड़ता है, भले ही उन्होंने दिहाड़ी लगाकर, मेहनताना पल्ले बांधकर ही आटा-दाल-सब्ज़ी आदि ले जाकर परिवार का पेट भरना होता है। कितने खेद की बात है कि इतनी मानव-शक्ति देश में यूं ही व्यर्थ जा रही है। इसका यदि सही रूप में उपयोग हो सके तो हमारा देश भी विकसित देशों की श्रेणी में आ सकता है। मानव-शक्ति का बहुत कम उपयोग हो सकने के कारण हमारा देश अब भी घोर गरीबी, दरिद्रता, बेकारी, सुस्त विकास गति, अनपढ़ता, अज्ञानता तथा भुखमरी की दलदल में ही धंसा हुआ है, जिसमें सबसे बुरी स्थिति स्पष्ट रूप से श्रमिक वर्ग की है। वैसे आज़ादी के इन बीते दशकों में हमारी संसद तथा राज्य विधान सभाओं ने श्रमिक वर्ग के कल्याण को सामने रखकर कुछ अच्छे कानून भी बनाये हैं, परंतु अभी उनमें कई खामियां नज़र आती हैं। जितने कानून बने भी हैं उनको सही रूप में लागू भी नहीं किया गया। यदि पहले ही बन चुके कानूनों को सही रूप से लागू कर लिया जाए तो भी स्थिति में काफी सुधार की आशा की जा सकती है। इसके लिए दृढ़ इच्छा-शक्ति की आवश्यकता है। हमारे देश की कार्यपालिका जो अभी भी अपने आपको सारे देश की सेवक न मानकर मालिक समझने की भ्रांति का शिकार है, उसमें और विदेशी अंग्रेजी काल की रही शासन-प्रशासन व्यवस्था में अंतर कम ही दिखाई देता है। श्रमिक की जितनी दिहाड़ी (दिन में आठ घंटे काम करने के बदले में मिलने वाला मेहनताना अथवा पारिश्रमिक) कानूनन निश्चित की गई है, यदि उसको ही सही रूप में हमारी कार्यपालिका लागू करा दे तो यह एक बहुत बड़ी बात होगी। व्यवहारिक रूप में ठेकेदार श्रमिक वर्ग का बहुपसारी शोषण बेरोक-टोक किये जा रहे हैं, चूंकि वे लेबर इंस्पेक्टरों को धनराशि या नज़रानों के साथ खुश तथा क्रियाहीन कर देते हैं। अच्छी बात यह भी है कि कुछ समय से जनसाधारण देश में व्याप्त भ्रष्टाचार का विरोध करने के लिए जागा है।

परिश्रमी किसान वर्ग को और भी अधिक संघर्ष करना पड़ता है। सरकारें उनकी अनपढ़ता तथा उनकी अल्पज्ञता के कारण उनको वाज़िब अधिकार देने में आनाकानी करती हुई उनके साथ अन्याय करना जारी रखती हैं। यह आश्चर्य की बात है कि जिस श्रमिक वर्ग के कंधों पर देश की मूल जरूरतें पूरी करने का सर्वाधिक बोझ है वो सारा दिन काम करके भी रात को भूखा सोये।

देश में गत चार दशकों से जनसाधारण के द्वारा रोष-प्रदर्शनों में प्रकट रूप से वृद्धि देखी जा सकती है। हमारे शासक-प्रशासक इन्हें 'लाअ एण्ड आर्डर' का मसला ऐलान करते हुए प्राय: पुलिस बल के प्रयोग से दबाने का यत्न करते हैं। वे प्रदर्शनकारियों की मुनासिब मांगों को भी मानने में आनाकानी करते हैं और यदि मानते भी हैं तो तब, जब कइयों की जाने चली जाती हैं। वस्तुत: देश में अब तक हुए बड़े-बड़े राष्ट्रीय अभियानों का मूल कारण जन-साधारण में व्याप्त गरीबी और बेकारी है। यदि इन दोनों अलामतों पर काबू पाने की दिशा में अभी भी संजीदा प्रयास होने लग जाएं तो आगामी दो-तीन दशकों में ही भारत सचमुच एक भव्य विश्व-शक्ति के रूप में उभर सकने के योग्य हो सकता है।

देश की वर्तमान सत्ताधारक पार्टियों को

यह चाहिए कि वे श्रमिक वर्ग के बारे में अच्छी नीतियां बनाने तथा लागू करने की दिशा में कुछ संजीदा कदम अवश्य उठायें। कम से कम हर वर्ष वे १ मई को मई दिवस (मजदूर दिवस) के अवसर पर कुछ अच्छे फैसले लें तथा उनको लागू करें। शायद हमारे शासक 'मई दिवस' का इतिहास भूल चुके हैं। यह दिवस श्रमिकों की कुर्बानियों का स्मरण करने वाला बहुत ही महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दिवस है। सन् १८८६ ई में शिकागो में हेअमार्केट में श्रमिकों का भारी कत्लेआम हुआ था। पुलिस ने एक जन-सभा को छिन्न-भिन्न किया था। किसी अज्ञात व्यक्ति ने पुलिस पर एक डाईनामाईट बम फेंक दिया जिसके विरुद्ध यह कत्लेआम किया गया।

इस दिन को मनाते वक्त भी कई घटनाएं घटित हुईं, जिनमें अपने अधिकारों को मांगते शांतमयी प्रदर्शनकारियों को अपनी जानें कुर्बान करनी पड़ीं। उदाहरणत: १८९४ ई के 'मई डे रोइट्स' हुए। प्रथम कत्लेआम की भावना भरपूर स्मृति और इस दिन को मज़दूरों के अधिकारों की उचित मांग वाले दिन के रूप में स्वीकार कराने हेतु भी विभिन्न देशों में एक व्यापक संघर्ष करना पड़ा। मूल संघर्ष का एक बहुत बड़ा मुद्दा मजदूरों की आठ घंटे तक की दिहाड़ी की सीमा को प्राप्त करना था, जो आज विश्व में व्यापक रूप से स्वीकृत है। हमें इस दिन कम से कम विश्व के सभी श्रमिकों के प्रति उनके द्वारा हम सबके लिए किये जाने वाले काम और संसार की प्रगति में मुख्य योगदान के लिए प्यार-सत्कार का भाव अवश्य रखना चाहिए और उनकी अपने देश में बेहतर स्थिति बनाने में अपने स्तर पर कुछ न कुछ करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

पंजाबी गीत

पूरा करना जे सोहणिआ, तूं जीण दा है चाअ।
लै सांभ शहिर आपणे दा, पाणी ते हवा।
खोरा जिंदगी नूं लाउणा, इस धुएं ते तेजाबां।
छेती कूच कर जाणा, बहुते नड़िआं नवाबां।
जित्थे हो गिआ लोकां नूं, इह पैसे दा शुदाअ। पूरा करना जे सोहणिआ . . .
तेरा होण सरमाइआ, साफ़ सुथरीयां हवावां।
जिउण पिता जिहे रुक्ख अते मावां जिहीआं छावां।
साडी पउण है गुरु ते पाणी है पिता। पूरा करना जे सोहणिआ . . .
लम्मी सोच अते पक्किआं, इरादिआं दी लोड़।
तेरे शहिर नूं है तेरे, पक्के वादिआं दी लोड़।
बण उद्दमी तूं रहिमतां, देवेगा खुदा। पूरा करना जे सोहणिआ . . .
मां धरत नूं तुहाडे जिही, जवानीआं 'ते माण।
अज्ज आ गई है जिन्हां नूं, आपे दी पछाण।
तुहाडे उद्दमां लई 'कोमल', है करदा दुआ। पूरा करना जे सोहणिआ . . .

-स. सतिनाम सिंघ कोमल, २४८, अरबन इस्टेट, लुधियाना-१४१०१०, मो. ९८७२६-०९९२१

भगत तेरै मनि भावदे . . .

-स. रमेश सिंघ *

१७०८ ई. में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परलोक गमन से पूर्व एक क्रांतिकारी और ऐतिहासिक फैसला लिया जब उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर सिक्खों का सदीवी गुरु बना दिया। वस्तुत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब समस्त मानवता के गुरु हैं क्योंकि इनमें अंकित उपदेशों और आदेशों का पालन कर संसार का कोई भी प्राणी अपने जीवन का लक्ष्य 'प्रभु-मिलन' हासिल कर सकता है :

कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥
कहु कबीर संसा नही अंति परम गति पाइ ॥
(पन्ना ३३५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब गुरु होने के साथ-साथ भारत की आध्यात्मिक धरोहर भी हैं क्योंकि इनमें गुरु साहिबान, भक्त साहिबान आदि की बाणी सम्मिलित है जो देश के विभिन्न प्रदेशों, विभिन्न धर्मों, विभिन्न भाषाओं, विभिन्न जातियों व विभिन्न वर्गों से संबंधित हैं, पर इस विभिन्नता में भी उनकी एकता अनुपम है, निराली है, क्योंकि इस एकता का आधार 'एक' है और वे सभी एक स्वर से पुकार-पुकार कर सारी मानवता को 'एक' का संदेश देते हैं :

--एको है भाई एको है ॥
साहिबु मेरा एको है ॥ (पन्ना ३५०)
--एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ (पन्ना १३४९)
--सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥ (पन्ना १३५०)
--सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥ (पन्ना ९८८)
--कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥
कारण करण करीम ॥
किरपा धारि रहीम ॥ (पन्ना ८८५)

आईए आगे बढ़ने से पहले उन विभूतियों को जान लें जो समस्त भेदभाव भुलाकर एक के प्रेम से ओत-प्रोत होकर, 'एक' मंच से, 'एक' स्वर से, 'एक' का संदेश देने के लिए 'एक रूप' (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) हो गये हैं। गुरु नानक साहिब से जब पूछा गया कि आपका गुरु कौन है? तो उनका उत्तर था, "सबद गुरू सुरति धुनि चेला ॥" "सबद" (शबद) मेरा गुरु है तथा 'सुरति' का उसमें टिकना चेला है। श्री गुरु रामदास जी ने भी कहा, *"बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥ गुरबाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतरे ॥"* अर्थात् गुरु की बाणी, गुरु का उपदेश ही गुरु है। शरीत तो नश्वर है, मगर उपदेश अमर है, उपदेश में प्रभु के समस्त गुण निहित हैं। जो भी गुरु-उपदेश को जीवन में ढाल लेगा, इस बाणी की सत्यता उसके जीवन में प्रकट हो जायेगी। व्यक्ति कितना भी महान क्यों न हो, 'To err is human' के अनुसार कहीं न नहीं, कभी न कभी भटक सकता है, अटक सकता है, उसकी पूर्णता में कमी हो सकती है, पर

*C-131, Sonari West, Jamshedpur-831011 (Jharkhand), Mo. 96318-21636

उपदेश में यह कमी नहीं, उपदेश तो पूर्ण है। यही आशय रहा होगा उस ग्रंथ को गुरु का दर्जा प्रदान करने के पीछे जिसको तैयार करने में २३९ साल लगे (१४६९ ई में गुरु नानक साहिब के आगमन से लेकर १७०८ ई श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के परलोक गमन तक)। इस काल में दस गुरु साहिबान ने इस पावन ग्रंथ में अंकित एक-एक वाक्य को अपने जीवन में ढाल कर दुनिया के सामने इस बाणी की सत्यता व सार्थकता को उजागर कर दिखाया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिजब में जिन छः गुरु साहिबान की बाणी है उनमें से किसी ने भी अपना नाम नहीं लिखा, सबने इसे गुरु नानक साहिब की बाणी कहा और गुरु नानक साहिब ने कहा यह बाणी मेरी नहीं, प्रभु की बाणी है : *"जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो ॥"* गुरु जी अपने अनन्य शिष्य भाई लालो से कह रहे हैं, जैसी बाणी मेरे खसम (मालिक) की ओर से मेरे अंतःकरण में प्रकट हो रही है, वह मैं लोगों को सुना रहा हूं। कहने का तात्पर्य यह कि प्रभु का उपदेश ही 'गुरु' है। भक्त कबीर जी ने भी इसी सिद्धांत की पुष्टि करते हुए कहा है : *कहु कबीर मै सो गुर पाइआ जा का नाउ बिबेकुो ॥ (पन्ना ७९३)*

अर्थात् गुरु के उपदेश में निहित विवेक ही मेरा गुरु है। गुरु नानक साहिब ने अपनी प्रचार-यात्रओं के समय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले प्रेमा-भक्ति में लीन संत-जनों की बाणी एकत्र की और कुछ बाणी उनके बाद के गुरु साहिबान ने। कालांतर में गुरु साहिबान की बाणी व अन्य एकत्र बाणी का संकलन व संपादन किया। पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने 'आदि ग्रंथ' के रूप में इसे पूर्णता प्रदान की एवं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'गुरु' घोषित किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रभु-प्राप्ति की जो विधि सुझाई गई है वो है--ज्ञान, ध्यान व सिमरन की युक्ति। जब हम गुरु की बाणी को ध्यान से सुनकर उसका आत्म-मंथन करते हैं तो समझ (ज्ञान-प्राप्ति) आती है। प्रभु के खेल में एक ओर तो माया-जाल है, जिसमें जीव अज्ञानता के कारण स्वतः फंस जाता है और दुख का भागी बनता है, तो दूसरी ओर है गुरु की शिक्षा, जिस पर चलकर इस माया-जाल से बचा जा सकता है। सारे भक्त-जनों का जीवन इस तथ्य का साक्षी है कि उन्होंने प्रभु-प्रेम (और प्रभु-प्रेम का अर्थ है प्रभु के उपदेश से प्रेम, प्रभु की आज्ञा को सर्वोपरि मानना और उस पर अमल करना) को जीवन का आधार बनाकर तमाम दुखों-तकलीफों और आर्थिक-सामाजिक चुनौतियों के बावजूद हर हाल में सुख, शांति, सहज, आनंद के साथ जीना सीख लिया और अपने जीवन द्वारा हमारे सामने उदाहरण प्रस्तुत किया जिसका अनुसरण कर हम भी अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं।

आईए! भक्त नामदेव जी के एक शबद जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है, के विचार द्वारा देखें कि कैसे उन्होंने एक पूर्णतः प्रतिकूल परिस्थिति को गुरु-उपदेश (प्रभु-प्रेम) द्वारा पूर्णतः अनुकूल बना लिया और बड़े ही सहज आनंद-भाव से उसमें से पार हो गये। भक्त नामदेव जी फरमान करते हैं (यह शबद मुख्यतः फारसी भाषा में है):

हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जाउं ॥
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥१॥रहाउ॥
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥
द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥१॥
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥

द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥२॥
चंदी हजार आलम एकल खानां ॥
हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥३॥
असपति गजपति नरह नरिंद ॥
नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥ (पन्ना ७२७)

भक्त नामदेव जी प्रभु को संबोधन करते हुए कहते हैं, अरे मेरे यार! मेरे साजन! मेरे मित्र! अपनी प्रसन्नता की खबर दो, अपना हाल-चाल बताओ, मैं तुम्हें मिलकर बहुत प्रसन्न हूं, तुम पर कुर्बान जाता हूं, तुम्हारी बेगार मुझे बहुत प्रिय है। तुम्हारा नाम महान है। तुम कहां से आ रहे हो, कहां गये थे और इस वक्त किधर जा रहे हो? यह पवित्र नगरी है, यहां कोई झूठ नहीं बोलता। तुम्हारी पगड़ी बहुत सुंदर है और तुम्हारे वचन बहुत मधुर हैं। ऐ मेरे नायक और मुक्तिदाता! तुम्हीं अश्वपति सूरज हो, तुम्हीं गजपति इंद्र हो और तुम्हीं नरपति (नरह नरिंद) हो।

भक्त नामदेव जी का यह शबद हमें विपरीत परिस्थितियों को भी गुरु के उपदेश की साक्षी बनाकर उन्हें अपने अनुकूल बनाने की विधि सिखाता है :

१) सब मनुष्यों को प्रभु का रूप जानें।
२) हमारे लिए गुरु का उपदेश ही प्रभु तक पहुंचने का साधन है। इस पर अमल द्वारा ही हम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं।
३) गुरु के उपदेश से प्यार करें और उसे अपना जीवन बनायें। यही गुरु/प्रभु से प्यार करना है।
४) प्रभु से प्यार करने पर हमारे अंदर प्रभु की शक्ति पैदा हो जाती है।
५) विपरीत परिस्थितियां भी प्रभु की देन हैं, इन्हें भी प्रभु का प्रसाद मानकर ग्रहण करना चाहिये।
६) प्रतिकूल हालात (प्रभु का प्रसाद होने के कारण) हमें धैर्य, सहन-शक्ति, रजा में राजी रहना, दया करना, माफ़ करना, आज्ञाकारी बनना सिखाते हैं।
७) प्रभु हमारे माता-पिता हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चों में सद्गुण पैदा हों, वे सदाचारी बनें, इसलिए हमारे हित के लिए वे अनुकूल हालात पैदा कर देते हैं।
८) गुण सदैव सुख-शांति प्रदान करते हैं हमारे अवगुण ही हमारे दुखों का कारण हैं।
९) प्रभु सत्य का स्रोत है, समस्त गुणों का सागर है, इसी लिए वो सुखसागर है परमानंद है, प्यार से भरपूर है, शांति और सहज का दाता है।
१०) प्रभु में कोई अवगुण नहीं, इसलिए प्रभु को कोई दुख नहीं।
११) जैसे-जैसे हम अवगुणों का त्याग कर गुणों को अपनाते जायेंगे, हमारे दुखों का अंत होना शुरू हो जायेगा और हमारे अंदर सुख-शांति का संचार होने लगेगा।
१२) हमारे इर्द-गिर्द जो भी हो रहा है, प्रभु के बनाये कानून के तहत हो रहा है। इस सिस्टम में एक रास्ता माया का है तो दूसरा गुरु-उपदेश का।
१३) माया का रास्ता चुनने वाला जीव, समस्त दुनियावी पदार्थों को पाकर भी सदैव दुखी जीवन व्यतीत करता है क्योंकि माया अवगुणों की जननी है। वहीं दूसरी ओर गुरु-उपदेश का धारणी मनुष्य दुनियावी सुख-सुविधाओं से वंचित होने के बावजूद सुखी रहता है और सद्गुणों से भर जाता है।
१४) गुरु-मार्ग पर चलने वाला मन में कोई शिकायत नहीं पनपने देता। वह हर हाल

में, हर काल में, हर देश में, हर वेश में नित्यप्रति प्रभु का धन्यवाद करता है।

१५) जहां शिकायत है वहां दुख है, जहां शुक्रिया है वहां सुख है। किसी ने क्या खूब कहा है :

हर हाल में दाता का, जो शुक्र मनाते हैं।
उनके घर खुशियों की, होती बरसातें हैं।

गुरु के उपदेश में वो शक्ति है कि इंसान की सोच को पूरी तरह बदलकर उसे एक पल में देवता समान बना सकती है, जैसा कि भक्त नामदेव जी के कहा है :

नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥
नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई ॥ *(पन्ना ८७३)*

तथा भक्त नामदेव जी का कथन भी इसी बात की पुष्टि करता है :

सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥
जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ *(पन्ना ११९५)*

अर्थात् मैं अपने गुरु/प्रभु पर बलिहार जाता हूं जिसके उपदेश ने मेरे मन से सारे भ्रम दूर कर दिये हैं। (माया का काम ही है हमें भ्रम-जाल में फंसाना)। अब मुझे हर तरफ प्रभु की ही लीला दिखाई देती है।

भक्त-जनों ने प्रभु के उपदेश को अपने जीवन में ढाल कर, तमाम विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाकर दुख को भी सुख में तबदील कर लिया तथा इस प्रक्रिया में हमारे लिए वो मापदंड तैयार कर दिये जिसको अपनाकर कोई भी दुखी जीव सुखी हो सकता है। ऐसे भक्त-जनों को प्यार करते हुए, उन्हें अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए गुरु नानक साहिब जी ने फरमान है :

भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ *(पन्ना ४६८)*

अर्थात् हे प्रभु! तुम्हें अपने भक्त-जन बहुत प्रिय हैं और वे तुम्हारे दर पर बैठे तुम्हारी कीर्ति गाते हुए बहुत अच्छे लगते हैं।

कविता

ज़िंदगी बिन मोल जाये

मोल तुम करते सभी का, ज़िंदगी बिन मोल जाये।
किसलिए क्या सोचकर ये, फालतू समां जुटाये?
एक दिन कुछ न रहेगा, नाज़ है जिन पर तुम्हें,
जोड़ते क्या चीज़ ऐसी, जो तुम्हारे साथ जाये?
यूं करूं तो ये मिलेगा, यूं करूंगा वो मिलेगा,
कौन-सा लम्हा था जिसमें, प्रभु-गीत तुमने गाए?
मौत से तुम भागते या ज़िंदगी से जूझते,
जंग जिसका अर्थ कोई, कब भला तुम जीत पाए?
मैं फ़क़त इस बात से हैरान हूं, ग़मगीन हूं,
बीज तुम जिस पेड़ के, गुल क्यों नहीं उसके खिलाए?

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो : ०९४११६०७६७२

नशों के सेवन के घातक प्रभाव

*-स. सुरजीत सिंघ**

यह कटु सत्य है कि युद्ध, अकाल, महामारी से मानव जाति को इतना अधिक नुकसान नहीं पहुंचा जितना कि नशे से। यह कहना सर्वथा तर्कसंगत होगा कि नशे का अधिक सेवन ही अकाल मृत्यु को आमंत्रण देने के समान है। नशे के सेवन से होने वाले कुप्रभावों को देखकर अब सर्वत्र कहा जाने लगा है-- "तंबाकू पर लगनी चाहिए, पूरी तरह पाबंदी। नशाखोर तो अंधे हैं, सरकारें भी हुई हैं अंधी।" नशा एक ऐसी बुरी आदत है जो कुछ समय पश्चात न चाहते हुए भी मनुष्य को अपनी पकड़ में जकड़ लेता है। अक्सर देखने में आया है कि क्षणिक आनंद पाने के लिए, दिखावे अथवा कुसंगत के परिणामस्वरूप प्रारंभ हुई नशे की लत से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाता है; कभी-कभी तो यह मृत्यु का कारण तक बन जाता है।

'पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥
हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥"

यह पंक्तियां किसी पुस्तक, पत्रिका अथवा अखबार से नहीं ली गई अपितु वास्तव में पावन श्री गुरु गंथ साहिब के पन्ना ७२६ से उद्धृत हैं। तंबाकू के सेवन से समाज, संस्कृति, मानवता पर पड़ने वाले भयंकर कुप्रभावों से सुचेत करने हेतु लगभग ५०० वर्ष पूर्व ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यह आशय दर्ज हो गया था, जो मेडिकल साइंस आज विभिन्न परीक्षणों के उपरांत समस्त विश्व को तंबाकू से होने वाली महामारियों का ॥हवाला देकर सावधान रहने को कह रहा है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के अनुसार यह सत्य है कि विश्व के कई देशों में तंबाकू-सेवन पर पूर्ण अथवा आंशिक रूप से पाबंदी लगाई जा चुकी है, जो सुखद प्रारूप है। 'विश्व धूम्रपान निषेध दिवस' ३१ मई, २००९ से भारत सरकार ने बीड़ी-सिगरेट के हर पैकेट के ऊपर चेतावनी-स्वरूप तंबाकू से होने वाली घातक बीमारियों के चित्र रेखांकित करना अनिवार्य कर दिया है ताकि इनका सेवन करने से पहले पैकेट को हाथ में लेने पर व्यक्ति सोचने पर मजबूर हो जाये।

चाहे छोटे से छोटा गांव हो अथवा बड़े से बड़ा शहर किंतु कोई भी स्थान नशे की महामारी से बचा हुआ नहीं है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' की रिपोर्टों के अनुसार विश्व के किसी भी भाग में प्रति ८ सेकंड में एक व्यक्ति की मृत्यु तंबाकू के किसी भी रूप में सेवन से हो रही है एवं प्रति वर्ष विश्व में तंबाकू जनित रोगों के कारण कम से कम ४० लाख व्यक्ति अकाल मृत्यु के मुंह में धकेले जा रहे हैं जो अपने आप में रिकार्ड है। अफ़सोस कि तंबाकू-जनित रोगों के प्रसार से मरने वालों की संख्या कम होने के स्थान पर प्रति वर्ष निरंतर बढ़ती ही जा रही है। तंबाकू, गुटखा, जर्दा, पान, बीड़ी-सिगरेट, अफीम, चरस, गांजा इत्यादि नशे के सेवन से मुंह में या गले में घातक रोग कैंसर हो जाता है, दांत पायरियाग्रस्त हो जाते हैं एवं जबड़ों की हड्डी तेजी से गलने-सड़ने लगती

**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)-३२४००७; मो. ९४१३६-५१९१७*

है। तंबाकू चबाने से दांत कमज़ोर होकर घिसने के साथ-साथ टूटने का शिकार भी हो जाते हैं, मुंह बंद होने के कगार पर पहुंच जाता है, जिससे भोजन करने-चबाने में कठिनाई का आभास होने लगता है, क्योंकि तब जबड़ों का खुलना ही मुश्किल हो जाता है।

तंबाकू हमारे स्वास्थ्य के लिए जानलेवा धीमे ज़हर का कार्य करते हुए दिल दहला देने वाले रोगों को अनायास ही आमंत्रण दे डालता है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' की रिपोर्ट के अनुसार प्रतिदिन अस्सी हज़ार से एक लाख तक व्यक्ति निकोटीन ज़हर के आदी होते जा रहे हैं जो आश्चर्यजनक एवं चिंतनीय है। जरा सोचो, सार्वजनिक स्थानों पर वाहन चालकों से लेकर यात्रियों तक, कार्यालयों में अधिकारी से लेकर चपरासी तक, विद्यालयों में अध्यापक से लेकर विद्यार्थियों तक, दुकानों में मालिक से लेकर कर्मचारी तक एवं घर में पिता से लेकर पुत्र तक अर्थात् हर स्तर पर, हर पल, हर क्षण तंबाकू का किसी न किसी रूप में सेवन हो रहा है, जो किसी अकाल विभीषिका से कम नहीं है। नशा तो मनुष्य के स्वास्थ्य, धन, परिवार पर एक साथ डाका डालते हुए तब तक पीछा नहीं छोड़ता जब तक कि मनुष्य रोगग्रस्त होकर मृत्यु तक नहीं पहुंच जाता अर्थात् हर तरफ नुकसान ही नुकसान।

बीड़ी-सिगरेट अथवा सिगार के धुएं में कई प्रकार के घातक रासायनिक तत्व, गैसें होती हैं, जिनमें निकोटीन मुख्य है। निकोटीन सफेद रंग का अत्यंत ज़हरीला तत्व होता है। कहा जाता है कि यदि निकोटीन की शुद्ध एक बूंद भी किसी मनुष्य के शरीर में इंजेक्शन द्वारा प्रवेश करा दी जाए तो अकाल मृत्यु भी हो सकती है। जो लोग प्रतिदिन बहुत अधिक संख्या में बीड़ी-सिगरेट पीने के आदी हो जाते हैं, धूम्रपान से निकली ज़हरीली निकोटीन स्वत: उनके शरीर में समाहित हो जाती है, जो भयंकर रोगों का मुख्य कारण है। धूम्रपान करने वाले की तत्काल मृत्यु नहीं होती, क्योंकि एक बार एक ही समय निकोटीन की जितनी मात्रा वह ग्रहण कर रहा होता है, घातक सीमा से बहुत कम होती है, किंतु स्वास्थ्य पर कुप्रभाव निरंतर बढ़ता चला जाता है। सिगरेट का धुआं मनुष्य की श्वास-प्रणाली को अवरुद्ध कर देता है। निकोटीन ज़हर के अतिरिक्त धूम्रपान से छोड़े गये धुएं में विषैली गैसें एवं हानिकारक तत्व, जैसे कार्बन मोनो-ऑक्साइड, हाइड्रोजन साईनाइड, पाईरीडन, अमोनिया, एल्डेहाइड आदि विद्यमान होते हैं। ज़हरीला धुआं मुंह, गले से होते हुए शरीर की वायु नलियों द्वारा फेफड़ों में प्रवेश कर विष जमा करने का कार्य करता है, जिससे फेफड़ों का कैंसर होने की संभावना अधिक हो जाती है। धूम्रपान करने वालों की संतान जन्म लेने से पूर्व ही कई रोगों से ग्रसित हो जाती है। तंबाकू से होने वाली घातक बीमारियों के भीषण परिणाम निम्नांकित हैं :

१. तंबाकू, पान, जर्दा, गुटखा चबाने से मुंह में, जुबान, भोजन-नली एवं वायु-नली में कैंसर होने की संभावना सदैव बनी रहती है।

२. धूम्रपान करने से भयानक रोग काली खांसी आ घेरती है। ज़हरीले धुएं से फेफड़ों में जीवन-रक्षक वायु के प्रभाव में अवरोध उत्पन्न हो जाता है जिससे फेफड़ों की वायु-नलियां क्षतिग्रस्त होने लग जाती हैं। कहा जाता है कि यह जानलेवा बीमारी मनुष्य का जीवन भर साथ नहीं छोड़ती।

३. धूम्रपान करने से सिरदर्द होना, हाथ-पैर टूटना, नींद न आना, चिड़चिड़ापन रहना

स्वाभाविक प्रक्रिया है। धूम्रपान की अधिकता से आंखों की ज्योति एवं कानों से सुनने की शक्ति क्षीण होती चली जाती है।

४. धूम्रपान से हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। तंबाकू-विष 'निकोटीन', जो धुएं में विद्यमान रहता है, हृदय की मांसपेशियों को, रक्त पहुंचाने वाली नलिकाओं को कठोर एवं मोटा कर देता है। परिणामस्वरूप रक्त-वाहिनी नलिकाओं का लचीलापन एवं नम्रता समाप्त होती चली जाती है। रक्त-संचार में इस प्रकार बाधा पड़ने से ब्लड रूप से प्रेशर बढ़ जाने के अतिरिक्त हृदय को मिलने वाली ऑक्सीजन की आपूर्ति कम होने लगती है, जिससे हृदय भारी हो जाता है। रोग अधिक बढ़ने से हृदय सुचारू रूप से कार्य करने में असमर्थ हो जाता है जो हृदयाघात से अकाल मृत्यु का कारण बन सकता है।

५. वैज्ञानिक परीक्षणों के प्राप्त आंकड़ों से प्रमाणित हो चुका है कि धूम्रपान से मनुष्य की आयु कम होने लगती है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि मात्र एक सिगरेट के सेवन से ही आयु के ६ मिनट तक कम हो जाते हैं अर्थात् 'जितना अधिक तंबाकू-सेवन, उतनी कम जीवन आयु।'

६. तंबाकू, पान, गुटखा खाने से भूख कम हो जाती है, मुंह का स्वाद खराब होने लगता है, सुनने की शक्ति कमज़ोर होने से लेकर मुंह से दुर्गंध आने लगती है।

यह प्रमाणित सत्य है कि तंबाकू-सेवन किसी भी प्रकार से स्टेट्स सिंबल नहीं है और आगे भी नहीं हो सकता, अपितु शरीर को अंदर ही अंदर कमजोर, खोखला एवं छलनी करने का साधन-मात्र अवश्य है। हमें प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष धूम्रपान से सदैव बचते रहना चाहिए। घर, परिवार, सिनेमा हॉल, सभा-स्थल, भीड़भाड़ वाले क्षेत्र, बस-रेल के डिब्बे इत्यादि में यदि कोई धूम्रपान करता है तो उसके आस-पास बैठे व्यक्ति स्वाभाविक ही 'पैसिव स्मोकिंग' के माध्यम से कई जानलेवा बीमारियों का शिकार हो जाते हैं जिसमें हृदयाघात ३३ प्रतिशत, ब्लक कैंसर ४० प्रतिशत, फेफड़ों की बीमारी ५० प्रतिशत, बाल-मृत्यु दर ३३ प्रतिशत एवं नव शिशु के कमज़ोर पैदा होने की २५ प्रतिशत तक की संभावना बनी रहती है।

भारत में संभवतया जन्मा हुक्का जब अमेरिका, यूरोप एवं अरबियन देशों से घूमकर भारत आया तो आज इसे साहूकारी अंदाज़ में बैठकर गुड़गुड़ाते कई युवाओं एवं वृद्धों को सामूहिक रूप से देखा जा सकता है। ऐसा अनुमान है कि हुक्के का जन्म-स्थल कम से कम पांच सौ वर्ष पूर्व भारत, ईरान, मिडिल ईस्ट इत्यादि देश रहे हैं। भ्रमवश सिगरेट की तुलना में हुक्के को कम हानिकारक एवं निरापद मान लिया जाता है, किंतु वास्तविकता तो इसके बिलकुल विपरीत है। एक घंटे तक हुक्का गुड़गुड़ाने से लगभग ५० सिगरेट के बराबर का ज़हरीला धुआं स्वत: ही फेफडों में पहुंच जाता है। शहरों-नगरों में द्रुत गति से हुक्का बार एवं रेस्तरां खुलते जा रहे हैं, जहां जाने वालों में बड़ी संख्या में नशे की लत पाले किशोर, युवक एवं वृद्ध शामिल हैं। आश्चर्य है कि कहीं-कहीं तो महिलाएं भी इसका शिकार हैं।

अकेले अमेरिका में ही छोटे-बड़े मिलाकर लगभग ५०० हुक्का कैफे हैं। इसी प्रकार से ब्रिटेन, रूस, फ्रांस, मिडिल ईस्ट, अरबियन कन्ट्रीज़-- पाकिस्तान, बंगला देश इत्यादि अनेक देशों में बड़ी संख्या में हुक्का बार संचालित हैं और इसमें निरंतर वृद्धि हो रही है। हुक्के में चूंकि पानी होता है, इसलिए अधिक शक्ति से इसे खींचना पड़ता है। आश्चर्य है कि उतनी ही

तेज़ी से ज़हरीला धुआं भी शरीर के अंदर प्रवेश करता चला जाता है। हुक्के में प्रयुक्त होने वाले तंबाकू में कहीं-कहीं हानिकारक लोमहर्षक तत्वों का मिश्रण भी मिलाया जा रहा है।

हुक्का गुड़गुड़ाने में जितनी अधिक उर्जा और समय लगता है उतनी ही तेज़ी से पनपने लगती हैं जानलेवा बीमारियां एवं भयंकर रोग। सिगरेट की तुलना में हुक्का-स्मोक में आर्सेनिक, लेड, निकेल जैसी हानिकारक धातुओं का उच्च स्तर रहता है।

हुक्का-सेवन से मुख, फेफड़े, पेट एवं शरीर के अन्य अंग प्रभावित होते हैं। फलस्वरूप कैंसर, हृदय-रोग, फेफडों का गलना, मसूड़ों-दांतों की बीमारियों का खतरा सदैव मंडराता है है। हुक्के में एक ही माउथपीस रहता है जिसका सामूहिक रूप से एकमात्र इस्तेमाल होते रहने से विभिन प्रकार के संक्रामक रोग भी हो जाते हैं। हुक्के के धुएं में कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोजन साइनाइड, पाईरीडन, अमोनिया, एल्डेहाइड इत्यादि विषैले तत्व विद्यमान रहते हैं।

नशे से होने वाले कुप्रभाव पर गंभीरता से विचार कर निर्णय लें (जो कि सर्वथा हमारे हाथ में है) कि हमें स्वास्थ्य चाहिए या बीमारी? सुख चाहिए अथवा दुख? जीवन चाहिए अथवा मृत्यु? यदि हम सब धूम्रपान विरोधी हैं तो आओ, हो जाएं तैयार और आज से ही छोड़ दें समस्त नशों का सेवन तथा सुख-समृद्धि के लिए *"नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात"* का एकमात्र अनुसरण कर, अपना जीवन सुखमय बनाते हुए परिवार, समाज एवं देश का भला करें!

कविता

रक्त दान करो रक्त दान!

रक्त दान करो रक्त दान! है यह महा पुन्य का काम।
बचा लो किसी की डूबती सांसें, सर्वोत्तम है यह महादान।
जीवन दे दो नया किसी को, उत्तम कार्य है महान।
रक्त दान करो रक्त दान!
खुशियां बांट दुआएं ले लो, जग में किसी के आओ काम!
कर लो प्रसन्न प्रभु को, करके खुश उसकी संतान।
रक्त दान करो रक्त दान!
काम वक्त पे आओ किसी के, दे दो यह जीने का दान!
परउपकारी कहलाओगे, होगा मान, बढ़ेगी शान!
रक्त दान करो रक्त दान!
हर प्राणी है अंश प्रभु का, सब में बसते दाता महान।
बे-झिझक 'जीत' कर सेवा, फल देंगे तुझको भगवान।
रक्त दान करो रक्त दान! है यह महा पुन्य का काम।

-स. बिकरमजीत सिंघ 'जीत', sethigem@yahoo.com

गुर सिखी बारीक है . . . १३

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

कोई किसी से प्रेम क्यों करता है? हर किसी के मन में कुछ विचार होते हैं, कुछ आशाएं होती हैं। अपने विचारों को साकार होते देखना सबको भला लगता है। सांसारिक मनुष्य इसके लिए अपनी संतान, परिवार, मित्रों की ओर देखता है और अन्य उन सभी की ओर जो उसकी आशाओं को साकार करने में उसके सहायक हो सकते हैं। इस आदान-प्रदान में जो भावना उत्पन्न होती है उसे प्रेम का नाम दे दिया जाता है, जबकि यह प्रेम का छदन् रूप है, मोह-माया का छलावा है। हर वो कर्म या विचार, जिसमें ईश्वरीय तत्व उपस्थित नहीं हैं, माया का ही खेल हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिस प्रेम की बात की गई है उसके केंद्र में मात्र परमात्मा है। जो परमात्मा से प्रेम करते हैं वे परमात्मा की रची हुई संपूर्ण सृष्टि से प्रेम करते हैं, उसकी उत्पन्न की हुई हर अवस्था से हर अवस्था में प्रेम करते हैं और स्वीकार करके आनंद प्राप्त करते हैं। अपनी संतान, परिवार, मित्रों से किया गया प्रेम क्योंकि वस्तुत: प्रेम नहीं होता, इसीलिए घटता-बढ़ता रहता है, कभी हर्ष, कभी शोक का कारण बनता है, किंतु परमात्मा से किये गये प्रेम में, जो वास्तव में प्रेम है, सदैव वृद्धि होती रहती है और निरंतर आनंद बढ़ता जाता है। भाई गुरदास जी कहते हैं कि परमात्मा से प्रेम परमपद देने वाला है:

चरण कवल मकरंदु रसि होइ भवरु लै वासु लुभावै।
इड़ा पिंगुला सुखमना लंघि त्रिबेणी निज घरि आवै।
साहि साहि मनु पवण लिव सोहं हंसा जपै जपावै।
अचरज रूप अनूप लिव गंध सुगंधि अवेसु मचावै।
सुखसागर चरणारबिंद सुख संपट विचि सहजि समावै।
गुरमुखि सुखफल पिरम रसु देह बिदेह परम पदु पावै।
साध संगति मिलि अलखु लखावै ॥

(वार ६:११)

गुरमुख जब परमात्मा से प्रेम करता है तो भंवरे की तरह फूल की सुगंध लेने के लिये सदा उसके आस-पास ही मंडराता रहता है। यह सुगंध (प्रेम) उसे सांसारिक मोह-वासनाओं से ऊपर उठाकर ध्यान को मन के भीतर केंद्रित करने की समझ देती है और मन उस सुगंध (प्रेम) के आनंद से महक उठता है। परमात्मा, क्योंकि आनंद का उद्‌गम है इसलिए उससे प्रेम होते ही गुरमुख भरपूर सुख की अवस्था में जीने लगता है और जीवन की उस उच्चता-श्रेष्ठता तक जा पहुंचता है जिससे उसका जीवन सिद्ध और सफल हो जाता है। ऐसा प्रेम तब उपजता है जब गुरमुख परमात्मा को और स्वंय को भी जान पाता है। जिन सांसारिक लोगों से हम प्रेम (मोह) के सम्बंध स्थापित करते हैं या तो उनके गुणों से प्रभावित होते हैं या फिर उनसे आशाएं

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३

रखते हैं। ऐसे प्रेम में जिससे प्रेम किया जा रहा है, वो भी विद्यमान रहता है और जो प्रेम कर रहा है वह भी। परमात्मा से प्रेम में जो कि वास्तविक प्रेम है, एक गुरमुख परमात्मा को जितना जानता और समझता जाता है उतना ही उसका 'स्व' समाप्त होता जाता है। 'स्व' का समाप्त हो जाना ही परमपद पाना है जिसका उल्लेख भाई गुरदास जी ने किया है। ऐसा गुरमुख भाग्यवान है जिसने प्रेम और मोह के अंतर को समझकर प्रेम का वरण किया है।

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥१॥
बाबा माइआ साथि न होइ ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ *(पन्ना ५९५)*

एक गुरसिक्ख अपने 'स्व' को मिटा देता है, अपने अंदर दीन भाव को दृढ़ करता है, क्योंकि उसे ज्ञान हो जाता है कि कुछ भी उसकी सामर्थ्य में नहीं है, जो उसके जीवन को सफल बना सके। वह अपने मन की भूमि इस तरह साफ-सुथरी और उपजाऊ बनाता है जिसमें परमात्मा के प्रेम की फसल अच्छी तरह से उग सके। वह पूरी भावना से अपने मन को प्रेम की भरपूर फसल के लायक बनाता है जिसके लिये उसे श्रम करना पड़ता है। यह कार्य वह बड़े धैर्य से करता है। वह संयम और संतोष को अपना प्रमुख गुण बना लेता है और यह भली-भांति जान जाता है कि माया-मोह से उसका कोई भला नहीं होने वाला। पारमात्मा का प्रेम और उससे उत्पन्न सद्गुण ही साथ चलने में सहायक हैं।

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥
खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥
निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥
(पन्ना ५९५)

गुरसिक्ख वो है जो परमात्मा से जुड़ने में, उसके प्रेम में लीन होने में तनिक भी विलंब नहीं करता, क्योंकि इससे ही उसे भरपूर सुख मिलने हैं, इसी में जीवन का लक्ष्य प्राप्त होना है, इसलिए गुरमुख परमात्मा के प्रेम को, उसके सिमरन को अपना पहला कर्त्तव्य बना लेता है। गुरसिक्ख जानता है कि परमात्मा के बिना वह कुछ भी नहीं है।

मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अंम्रितु मुखि चोइ ॥ *(पन्ना ६०५)*

जिससे हम प्रेम करते हैं जब वह हमें उपकृत करता है तो हम आनंद से भर उठते हैं। परमात्मा तो है ही दया का सागर, उसकी दयालुता तो सदैव ही गुरसिक्ख को प्राप्त है। जब गुरसिक्ख यह मान ले कि वह परमात्मा के बिना कुछ भी नहीं है तो परमात्मा के प्रेम के बिना गुरसिक्ख को और कुछ भी दिखाई नहीं देता है।

गुर सिखी दा रूपु देखि इकस बाझु न होरस देखै।
गुर सिखी दा चखणा लख अंम्रित फल फिकै लेखै।
गुर सिखी दा नादु सुणि लख अनहद विसमाद अलेखै।
गुर सिखी दा परसणा ठंढा तता भेख अभेखै।
गुर सिखी दी वासु लै तुइ दुरगंध सुगंध सरेखै।
गुर सिखी मर जीवणा भाइ भगति भै निमख नमेखै।
अलिप रहै गुर सबदि विसेखै ॥ (वार २८:८)

भाई गुरदास जी की उपरोक्त वार उस अवस्था का वर्णन करती है जो परमात्मा के प्रेम

में रंगे हुए एक गुरसिक्ख की है। गुरसिक्ख प्रेम में इस तरह लीन होता है कि सांसारिक चकाचौंध से एकदम विरक्त हो जाता है, सभी सांसारिक रस उसे फीके लगने लगते हैं, परमात्मा की बात ही उसे अच्छी लगती है, सारे संवेगों से वह ऊपर उठ जाता है, परमात्मा में ही उसे शोभा, प्रतिष्ठा और आकर्षण दिखता है। अपने आप को मिटाकर परमात्मा के प्रेम को पा लेने के आगे उसे सब कुछ तुच्छ लगता है, इसलिये वह परमात्मा के प्रेम को सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि मानता है।

इस प्रेम को प्राप्त करने के लिये जिस 'देह बिदेह' की बात भाई गुरदास जी अपनी छठी वार की ग्यारहवीं पउड़ी में करते हैं वह सरलता से प्राप्त होने वाली नहीं है। मनुष्य सबसे पहले अपने आप पर भरोसा करता है, फिर अपने परिवार, सम्बंधियों, मित्रों पर। वह परमात्मा पर भरोसा तो करता है, फिर भी अपने आप पर, अपनी बुद्धि, चतुराई पर भरोसा करना नहीं छोड़ता। यही बात उसे परमात्मा के निकट आने और प्रेम करने से रोकती है। पूरा संसार माया के प्रभाव में इस तरह आ गया है कि सत्य का कोई स्थान ही नहीं रहा।

कालु नाही जोगु नाही सत का ढबु ॥
थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥
(पन्ना ६६२)

धर्म के नाम पर अधर्म ने स्थितियों को इतना विकट कर दिया है कि मनुष्य को अंत तक समझ नहीं आता कि वह किन विकारों में फंसा हुआ है और ऐसे ही उसकी सारी उम्र चली जाती है।

बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥
पकरि केस जमि उठारिओ तद हो घरि जावै ॥१॥
लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥
खिन भंगुना कै मनि माते असुर जाणाहि नाही ॥१॥रहाउ॥
बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥
निपटि बाजी हारि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥२॥
डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥
जेंह कारजि रहै ओल्हा सोइ कामु न करिआ ॥३॥
(पन्ना ४०८)

उपरोक्त वचन में संसार की अवस्था का बड़ा ही सटीक वर्णन किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि इतनी विषम परिस्थितियां हैं कि परमात्मा की ओर उन्मुख होना, उसके प्रेम में लीन होना कितना कठिन कार्य है। उपरोक्त वचन में गुरु साहिब ने माया-मोह में लिप्त लोगों को असुर की संज्ञा दी है जो उम्र भर ऐसा कोई काम नहीं करते जिससे उनका जीवन संवर सके। विकारों-दुष्कर्मों में लोग इस तरह उलझ जाते हैं कि उनमें विवेक बुद्धि ही शेष नहीं रहती, सदाचार और परमात्मा की बात उनके कानों तक ही नहीं पहुंच पाती और वही चीजें उन्हें लुभाती रहती हैं जो पल भर में नष्ट हो जाने वाली हैं। जब सब कुछ हाथ से निकल जाता है तब ऐसे लोगों के हाथ पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं लगता। एक गुरसिक्ख सतिगुरु की कृपा से मोह-माया के इस फरेब और दुखदायी अंत को जान लेता है इसलिए सारे भटकाव से बच जाता है। वह अपने मन को सतिगुरु के चरणों में ले जाता है।

मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥
हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥
रंगि रलीआ माणु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥
गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥
(पन्ना ४५१)

सतिगुरु की शरण में जाने से मन में परमात्मा से मिलन की प्रबल कामना उत्पन्न होने लगती है और परमात्मा में ही उसे जीवन का सुख दिखने लगता है। जिसका मन परमात्मा के प्रेम में परमात्मा से मिलने के लिये विकल है, वही गुरसिक्ख है। मोह-माया में उलझा मनुष्य पल भर के लिए भी उस जाल से निकल नहीं पाता, इसी तरह सतिगुरु की शरण में गया गुरसिक्ख हर पल परमात्मा को याद करता है।

प्रीतम प्रेम भगति के दाते ॥
अपने जन संगि राते ॥
जन संगि राते दिनसु राते
इक निमख मनहु न वीसरै ॥
गोपाल गुण निधि सदा संगे
सरब गुण जगदीसरै ॥
मनु मोहि लीना चरन संगे
नाम रसि जन माते ॥
नानक प्रीतम क्रिपाल सदहूं
किनै कोटि मधे जाते ॥ *(पन्ना १२७८)*

जब गुरसिक्ख परमात्मा से जुड़ता है तो वह स्वयं ही गुरसिक्ख के मन को अपने प्रेम से भर देता है और गुरसिक्ख को अपनी शरण में ले लेता है, उसका सहायक बन जाता है। अपने भक्त के मन में वह सहज ही आकर्षण भर देता है और गुरसिक्ख उसके प्रेम से सराबोर हो जाता है। परमात्मा प्रेम का दाता है, इसलिये उपरोक्त वचन में ही नहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बार-बार परमात्मा को 'प्रीतम' कहकर सम्बोधित किया गया है। परमात्मा के इस नवल और सत्य स्वरूप को लाखों-करोड़ों में कोई एक ही जान पाता है क्योंकि वह एक ही अपने 'स्व' को मिटा पाता है। सतिगुरु अंधे कुएं में डूबे हुए अर्थात् माया के जाल में फंसे हुए को निकाल लेता है, भवजल से पार ले जाता है।

बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥
ताते बिनसी दुरमति दूरी ॥
ऐसी गुरमति पाईअले ॥
बूडत घोर अंध कूप महि
सिकसिओ मेरे भाई रे ॥१॥रहाउ॥
महा अगाह अगनि का सागरु ॥
गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥ *(पन्ना ३७७)*

परमात्मा सारी विषम परिस्थितियों से उबार लेने वाला है, दुर्बुद्धि का विनाश करके ज्ञान का प्रकाश देने वाला है। ज्ञान प्राप्त होने के कारण ही गुरसिक्ख उसके प्रेम में लीन हो जाता है और पल भर के लिये उसे विस्मृत नहीं करता। वही शुभ अवसर है जब गुरसिक्ख परमात्मा के प्रेम में लीन है। परमात्मा के प्रेम को जीवन का आधार बनाने से सारे दुखों का नाश हो जाता है।

सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥
दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥
बाह पकड़ि [illegible] काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥३॥
(पन्ना ४४)

गुरबाणी चिंतनधारा : ५८

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

अनिक भाति माइआ के हेत ॥
सरपर होवत जानु अनेत ॥
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥
जो दीसै सो चालनहारु ॥
लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥
बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥
ता कउ हाथि न आवै केह ॥
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥
करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥

पांचवीं असटपदी की तीसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने माया की अस्थिरता एवं नश्वरता का वर्णन करते हुए प्राणी मात्र को सर्व-सुखों के निधान प्रभु के चरणों में ही अर्थात् उसके नाम में ही सच्चा सुख समाहित है यह दिशा-निर्देश देते हुए सदैव कायम रहने वाले प्रभु से जुड़ने की प्रेरणा देते हुए यह भी स्पष्ट किया है कि हरि-नाम उसकी रहमत से ही प्राप्त हो सकता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि माया के अनेक सुंदर स्वरूप हैं अर्थात् माया का यह आकर्षक एवं सुहावना स्वरूप अनेक तरह से मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करता रहता है। यह सब (माया का मनमोहक स्वरूप) नाशवंत है अर्थात् सदा कायम रहने वाला नहीं है। अगर कोई मनुष्य वृक्ष की छाया से प्रीति करता है, परिणामस्वरूप उस पेड़ की छाया ने अन्ततः विनिष्ट हो जाना है और फिर जीव के पास केवल पछतावा ही शेष रह जाना है। यह समस्त दृश्यमान संसार नाशवंत है। महामूढ़ जीव इन नश्वर पदार्थों को कसकर पकड़े बैठा है। अतः गुरु पातशाह जीव को नश्वर पदार्थों के मोहपाश से बचने हेतु प्रेरित करते हैं कि जो जीव मुसाफिर से प्यार करते हैं उन्हें पछताना ही पड़ता है, उनके हाथ कुछ भी नहीं लगता। अंत में गुरु पचम् पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि स्थायी सुख ही सच्चा सुख दे सकता है। मन को प्रबोधते हुए गुरु साहिब ने सदा कायम रहने वाले परिपूर्ण परमेश्वर से ही सच्ची प्रति जोड़ने हेतु मार्गदर्शन किया है। साथ ही यह तथ्य भी स्पष्ट कर दिया है कि यह प्रीति (प्रभु-चरणों का प्रेम) प्रभु-कृपा से ही नसीब होती है।

प्रभु-चरणों की प्रीति ही सदा कायम रहने वाली है क्योंकि प्रभु काल से परे है। उस सच्चे परमेश्वर से ही सच्चा एवं स्थायी सुख नसीब हो सकता है। मायिक पदार्थों का सुख अस्थिर है, इसलिए वह दुखों का कारण ही बनता है। त्रिगुणी माया का सर्वग पसारा है, इसी में ग्रसित हुआ मनुष्य सदैव दुखी रहता है क्योंकि परमेश्वर के नाम बिना कहीं सुख नहीं है। सांसारिक या क्षणिक सुख का आभास तो हमें इन पदार्थों में होता है लेकिन वास्तविक सुख की प्राप्ति का मूलाधार प्रभु का नाम ही है। इसके बिना दुख ही दुख है, यथा गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

त्रै गुण बिखिआ जनमि मरीजै ॥
राम नाम बिनु दूखु सहीजै ॥ (पन्ना ९०५)

संसार में विरले जन हैं जिन्हें गुरु-कृपा से नाम का सच्चा सुख व आश्रय मिलता है, यथा :

जिसु गुर परसादी नामु अधारु ॥
कोटि मधे को जनु आपारु ॥ (पन्ना ९०५)

बेशक माया भी उसी ईश्वर का ही पासार है लेकिन उसी की ही रहमत से ही इसके दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है।

मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइसा ॥
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥
मिथिआ राज जोबन धन माल ॥
मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥
मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥
मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥
मिथिआ द्रोह मोह अभिमानु ॥
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥
असथिरु भगति साध की सरन ॥
नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु साहिब जीव को सुचेत करते हुए समझाते हैं कि यह संसार, इसके समस्त पदार्थ, दुनियावी संबंध और सभी रिश्ते-नाते नश्वर हैं। यहां तक कि तन-मन-धन सब मिथ्या है अर्थात् सदैव कायम रहने वाला नहीं है। कायम रहने वाला तो केवल प्रभु का नाम है। प्रभु की भक्ति ही वास्तविक जीवन-युक्ति है, इसलिए जीव को हमेशा प्रभु की भक्ति ही करनी चाहिए।

गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि हे जीव! तेरा शरीर, धन-वैभव तथा सारा परिवार नाशवंत है। तेरी मैं-मेरी, अहंकार, मोह-ममता अर्थात् पदार्थों की मलकियत (स्वामित्व) तथा परिवार का अभिमान सब झूठा है। राजपाट, रूप-यौवन, धन-माल सब मिथ्या हैं। इन पदार्थों एवं सम्बंधों से उत्पन्न काम तथा क्रोध भी झूठा है अर्थात् व्यर्थ है। रथ, हाथी, घोड़े तथा सुंदर वस्त्र भी मिथ्या हैं। जीव का माया के रंग-तमाशों में गलतान होना अर्थात् इन मायिक पदार्थों में लीन होकर आनंदित होना भी झूठा है। किसी से विश्वासघात करना, मोह, गरूर (अभिमान) तथा स्वयं पर गर्व करना आदि भी मिथ्या है। परमेश्वर की भक्ति तथा सत्पुरुषों की शरण में आना ही केवल सदा स्थिर रहने वाले कर्म हैं अर्थात् भले पुरुषों की संगति तथा प्रभु-सिमरन ही श्रेष्ठतम् एवं पुनीत कार्य हैं जो सदा कायम रहने वाले हैं। श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि प्रभु की बदौलत ही जीव का जीवन कायम है।

दुनियावी पदार्थों का अभिमान व्यर्थ है। यह तन-मन-धन नश्वर है। गुरबाणी में सदैव कायम (स्थिर) रहने वाले परमेश्वर की शरण में, आने उसका नाम जपने एवं उसी पर नाज़ करने की प्रेरणा दी गई है। झूठे पदार्थों का मोह तथा अभिमान भी झूठा है। पूर्ण गुरु की शरण में आकर संसार रूपी भवसागर से पार उतरा जा सकता है। सच्चा गुरु ही मार्गदर्शन कर जीवन-युक्ति समझा कर प्रभु-सिमरन के माध्यम से सर्वत्र में प्रभु के दीदार कराने में सक्षम है। गुरबाणी आशयानुसार :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुर बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारै ॥ (पन्ना ९८२)
मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥
मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥
मिथिआ तन नही परउपकारा ॥
मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥
बिनु बूझे मिथिआ सभ गए ॥
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह मानव जीवन के मनोरथ को समझाते हुए फरमान करते

हैं कि जीव की कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों की सार्थकता जिस कार्य में है, अगर उस उद्देश्य को सिद्ध न किया तो यह शरीर व्यर्थ है; मनुष्य जीवन, यह दुर्लभ देह तथा इसका प्रत्येक अंग व्यर्थ है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि मनुष्य के कान व्यर्थ हैं अगर उनसे केवल पराई निंदा ही सुनी जा रही है। हाथ व्यर्थ हैं अगर उनसे पराया धन चुराया जा रहा है। नेत्र व्यर्थ हैं अगर उनसे पराई स्त्री का रूप आदि देखने की गुस्ताखी जा रही है। निष्फल है ऐसी जीभ जो केवल भोजन आदि झूठे रसों में गलतान है। दूसरों के काम बिगाड़ने हेतु अर्थात् दूसरों को नुक़सान पहुंचाने हेतु दौड़-भाग करने वाले पैर व्यर्थ हैं। यह मन भी व्यर्थ है अर्थात् इसकी भी कोई कीमत नहीं अगर यह केवल पराये पदार्थों के लालच में ग्रसित है। परोपकार की भावना से रहित शरीर भी व्यर्थ है। विकारों में ग्रसित अर्थात् विकारों की सुंगधि लेने वाला नाक भी निष्फल है। विवेक रहित इस शरीर का प्रत्येक अंग निष्फल है। केवल परमेश्वर की बंदगी करने वाला अर्थात् प्रभु का नाम जपने वाला शरीर ही सफल है।

पराई निंदा, पराये धन-रूप का लोभ मनुष्य हेतु नर्क के द्वार हैं लेकिन अज्ञानतावश निरंतर जीव इनकी ओर अग्रसर होता जाता है। गुरबाणी में तो यहां तक समझाया गया है कि पराई निंदा दूसरों के पाप की गठरी को अपने सिर पर ढोने तथा दूसरों की मैल धोने के समान है। साथ ही निंदा को असाध्य रोग मानते हुए गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

अवखध सभे कीतिअनु निंदक का दारू नाहि ॥
आपि भुलाए नानका पचि पचि जोनी पाहि ॥
(पन्ना ३१५)

यही नहीं, दुर्गम स्थानों पर सेंध लगाने वाले, परायी स्त्रियों के रूप को छिप कर देखने वाले, शराब को मीठा समझकर पीने वाले अपने इन दुष्ट कर्मों के कारण मौत के फरिश्ते द्वारा कोल्हू में तिलों की तरह कुचले-मसले जायेंगे, क्योंकि गुरबाणी कर्म-फिलासफ़ी पर ज़ोर देती है, प्रत्येक जीव को अपने कर्मों का लेखा-जोखा भुगतना ही पड़ेगा, यथा :

तै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥
तकहि नारि पारईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥
संन्ही देन्हि बिखंम थाइ मिठा मदु माणी ॥
करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥
अजराईलु फरेसता तिल पीड़े छाणी ॥
(पन्ना ३१५)

अत: गुरबाणी निर्मल करनी एवं संयमित एवं संतोष वृत्ति अपनाकर परार्थ हित जीने की कला सिखाती है। सादा जीवन एवं उच्च विचार सर्वत्र के साथ प्रेम का व्यवहार ऐसे उच्चतम जीवन-आदर्श एवं परामार्थ हेतु मार्ग-दर्शन करती पावन बाणी का सुंदर उपदेश :

सेव कीती संतोखीई जिन्ही सचो सचु धिआइया ॥
ओन्ही मदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ . . .
वडिआई वडा पाइआ ॥ (पन्ना ४६६-६७)

वस्तुत: ऐसा जीवन वाहिगुरु की रहमत सदका ही मुमकिन है।

बिरथी साकत की आरजा ॥
साच बिना कह होवत सूचा ॥
बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥
मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥
बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥
मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥
गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥
जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥
धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह साकत अर्थात् नास्तिक व्यक्ति के जीवन की दयनीय स्थिति का बिम्ब प्रस्तुत करते हैं कि ईश्वर से

बेमुख जीव का जीवन ठीक वैसे ही बर्बाद हो जाता है जैसे कि वर्षा के बिना खेती बर्बाद हो जाती है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति का सारा जीवन ही व्यर्थ है। उसे चाहे जितनी भी श्वासों की पूंजी प्राप्त हुई हो वह सारी बर्बाद हो जाती है। सत्य के बिना अर्थात् परमेश्वर के नाम के बिना साकत (प्रभु से बेमुख व्यक्ति) कैसे पवित्र जीवन वाला हो सकता है? अर्थात् कदाचित नहीं हो सकता। प्रभु-नाम विहीन अंधे साकत का तन भी व्यर्थ है क्योंकि ऐसे बेमुख व्यक्ति के मुख से सदैव विकारों (निंदा आदि) कुकर्मों की दुर्गंध आती है। प्रभु-सिमरन से रहित व्यक्ति के दिन-रात वैसे ही व्यर्थ चले जाते हैं जैसे वर्षा के बिना खेती सूख जाती है। परमेश्वर की बंदगी के बिना जीव के समस्त कार्य वैसे ही व्यर्थ हैं जैसे कंजूस व्यक्ति की जमा की हुई धन-दौलत व्यर्थ जाती है

गुरु पातशाह अंतिम पंक्तियों में स्पष्ट करते हैं कि वास्तव में वे जीव धन्य हैं जिनके हृदय में परमेश्वर का नाम बसता है। गुरु साहिब ऐसे सुहृदय व्यक्तियों से बलिहार जाते हैं। भक्त कबीर जी ने तो इतना स्पष्ट कहा है :

कबीर साकत ते सूकर भला राखै आछा गाउ ॥
(पन्ना १३७२)

अत: कबीर जी ने तो साकत व्यक्ति का जीवन सूअर जैसी योनि में आए जीव से भी बदतर बताया है। साकत के अधम जीवन की ओर बाणी में अनेक उदाहरणों द्वारा संकेत किया गया है, यथा :

बिनु सिमरन ध्रिगु करम करास ॥
काग बतन बिसटा महि वास ॥
बिनु सिमरन गए कूकर काम ॥
साकत बेसुआ पूत निनाम ॥
बिनु सिमरन जैसे सीड़ छतारा ॥
बोलहि कूरु साकत मुखु कारा ॥ (पन्ना २३९)

वस्तुत: सिमरन के बिना जीव का जीवन व्यर्थ चला जाता है। जैसे कृषि हेतु वर्षा का होना जरूरी है नहीं तो खेती बर्बाद हो जाती है वैसे ही आत्मिक जीवन हेतु नाम रूपी वर्षा लाज़मी है अन्यथा जीव की आत्मिक मौत हो जाती है। साकत की आयु जितनी भी बड़ी हो लेकिन नाम के बिना उसकी बेशकीमती श्वासों की पूंजी का कोई अर्थ नहीं रह जाता जैसा कि कबीर जी जहां सतसंग में जाने हेतु सभी को प्रेरित करते हैं। गुरबाणी में मानव जीवन के प्रत्येक श्वास को सार्थक करने की प्रेरणा की गई है :

कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल ॥
पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु ॥
(पन्ना १३७१)

यही नहीं, जिस माया के लालच में बेशकीमती श्वास जीव बर्बाद करता है वह भी साथ नहीं जाती। कितना स्पष्ट समझाया है :

कबीर कउडी कउडी जोरि कै जोरे लाख करोरि ॥
चलती बार न कछु मिलिओ लई लंगोटी तोरि ॥
(पन्ना १३७२)

ईश्वर से टूटे हुए साकतों की संगति ना करने की प्रेरणा देते हुए भक्त कबीर जी स्पष्ट हिदायत करते हैं कि :

कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लगै दागु ॥
(पन्ना १३७१)

नाम जपने वालों की संगति नसीब हो, हमें भी वह परमेश्वर याद आए, इसके लिए हर पल गरीब निवाज़ दयालु प्रभु के चरणों में अरदास करनी चाहिए।

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥
जाननहार प्रभू परबीन ॥
बाहरि भेख न काहू भीन ॥
अवर उपदेसै आपि न करै ॥
आवत जावत जनमै मरै ॥
जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥

तिस की सीख तरै संसारु ॥
जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥
नानक उन जन चरन पराता ॥७॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरुदेव करनी और कथनी की असमानता का जिक्र करते हुए जीव को समझाते हैं कि जीव की सियानपें, चालाकियां यही धरी रह जाती हैं, क्योंकि इंसान यह भूल जाता है कि ईश्वर तो अंतरयामी है, वह घट-घट की जानने वाला है, उससे असल में कोई पर्दा नहीं। करनी और कथनी में समानता न होने के कारण जीव बार-बार जन्म-मृत्यु के चक्कर में ही उलझा रहता है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि मनुष्य द्वारा धारण किए गए बाहरी धार्मिक चिन्ह कुछ और हैं और उसका व्यवहारिक जीवन कुछ और ही हैं। इसके हृदय में प्रभु की प्रेमा-भक्ति नहीं है बाहर से बड़ी-बड़ी धर्म की बातें करता हैं। जीव यह सत्य विस्मृत कर बैठता है कि परमेश्वर बहुत ही सूझवान तथा अंत:करण की जानने वाला है। परमेश्वर कदाचित किसी मनुष्य के बाहरी वेश से प्रसन्न व प्रभावित नहीं होता।

जो व्यक्ति दूसरों को उपदेश देते हैं लेकिन स्वयं उस पर अमल नहीं करते हमेशा जन्म-मरण के चक्कर में ही फंसे रहते हैं। जिस हृदय घर में निरंकार प्रभु निवास करता है उससे शिक्षा ग्रहण कर संसार भवसागर से पार उतर जाता है। गुरु पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में विनती करते हैं कि हे प्रभु जी! जो तुझे अच्छे लगते हैं, उन्होंने ही वास्तव में तुझे पहचाना है। श्री गुरु अरजन देव जी उन पर बलिहार जाते हैं।

उपरोक्त पउड़ी में कथनी और करनी की समानता पर बल दिया गया है कि प्रभु-प्रेम दिखावे का नहीं होना चाहिए अपितु सच्चा होना चाहिए क्योंकि वह प्रभु अंतरयामी है, उससे कुछ भी छिपा नहीं है। दूसरों को उपदेश देना जितना सरल है उतनी ही कठिन उस पर अमल करने की साधना है। परमेश्वर हमारे बाहरी ज्ञान, कर्मकांडों या क्रिया-कलापों को नहीं देखता अपितु हमारे हृदय को देखता है। गुरबाणी का पावन फरमान है कि वह परमेश्वर जप, तप या चतुराइयों से नहीं बल्कि भोले-भाव सहजता से मिल जाता है। भक्त कबीर जी का पावन फरमान है :

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ . . .
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥
भोले भाइ मिले रघुराइया ॥ *(पन्ना ३२४)*

वैसे भी लोकप्रचलित ख़्याल है कि वह परमेश्वर तो कण-कण में व्यापक है, केवल ज्ञान के नेत्रों की आवश्यकता है, यथा :

जर्रे जर्रे में है झांकी भगवान की।
किसी सूझ वाली आंख ने पहचान की।

जिन्हें गुरु-कृपा से ज्ञान-चक्षु प्राप्त हो जाते उनका जीवन मनन वाला, करनी-कथनी में समानता वाला हो जाता है। गुरु नानक पातशाह ने जपु जी साहिब में फरमान किया है :

मंने की गति कही न जाइ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ *(पन्ना ३)*

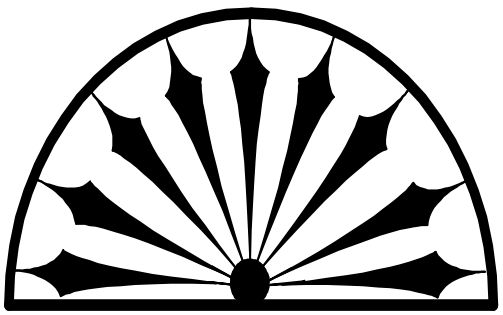

दशमेश पिता के बावन दरबारी कवि-५२

गुरु-दरबार के दीवान : भाई मनी सिंघ जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

बंद-बंद कटवाकर शहादत देने वाले महान बलिदानी भाई मनी सिंघ जी भी दशमेश पिता के बावन दरबारी कवियों में से एक थे। ज्ञानी गिआन सिंघ ने अपने ग्रंथ 'तवारीख गुरू खालसा' में भाई मनी सिंघ जी की विद्वता को बहुत सराहा है और इनकी गणना दशमेश पिता के बावन दरबारी कवियों में की है:

कवी बवंजा थे गुर पास। उनमै गनना इनकी खास ॥ (पंथ प्रकाश)

भाई मनी सिंघ जी का जन्म सुलतानपुर के निकट गांव अलीपुर में सन् १६४४ ई में हुआ। भाई साहिब का परिवार लम्बे समय से गुरु-घर की सेवा में लीन था। भाई साहिब के दादा भाई बलू राव छठम पातशाह के प्रमुख जत्थेदार थे और पिपली साहिब श्री अमृतसर की जंग में सन् १६२९ ई में शहीद हुए थे। भाई बलू के १२ पुत्र थे। इनमें से दूसरे थे-- भाई माई दास। भाई माई दास के दो विवाह हुए थे। पहली पत्नी से सात और दूसरी पत्नी से पांच पुत्र हुए। भाई मनी सिंघ जी पहली पत्नी के सात पुत्रों में से एक थे। इस प्रकार भाई साहिब १२ भाई थे और सभी ने सिक्ख-आदर्शों के लिए कुर्बानी दी।

भाई मनी सिंघ जी के बचपन का नाम 'मनी राम' था और इन्हें प्यार से 'मनीआ' कह कर बुलाया जाता था। बालक मनीआ १३ वर्ष की आयु में पिता भाई माई दास के साथ कीरतपुर साहिब में सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब के दरबार में आया। गुरु जी इस सुंदर बालक को देखकर अति प्रसन्न हुए और *"मनीआ इह गुनीआ होवेगा बीच जग सारे"* कह कर आशीर्वाद दिया। बालक मनीआ फिर गुरु दरबार में रह गया। श्री गुरु हरिराय साहिब, श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब, श्री गुरु तेग बहादर साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी चार गुरु साहिबान की छत्रछाया का सौभाग्य प्राप्त हुआ भाई मनी राम जी को।

भाई मनी सिंघ जी उच्च कोटि के कवि भी थे। पंजाबी भाषा में रचे गये आपके छंदों में गुरमति विचारधारा एवं गुरु की महिमा का वर्णन है :

सति सरूप पाहि दा सागर,
वतरि लगी भाल जिऊं भाला।
गुर गोबिंद दी रंगण रते,
थीए लाल गुलाला।
सिक्कां सिक्क सज्जण दी दिल विच,
ज़रबि अनूप बणी अति आल्हा।
'मनी राम' न काण कहीं दी,
साडा सिर परि कलगी वाला।

इसी प्रकार एक उदाहरण और देखें :

सति सरूप सति जिन जाता,
से सतिपुरख दे पिआरे।
मन बच करम अधर को डारह,
बैसहि ते जन खारे।
किचरकु अड़ै संत सिऊं साकत,
जेन केन बिधि हारे।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

'मनीराम' रुक जैं वलि संगति का,
गुरू पासा तितु वलि ढाले ॥

दशमेश पिता के आश्रय में रहकर भाई मनी राम जी एक कुशल योद्धा और विद्वान के रूप में उभरे। भाई साहिब ने सभी युद्धों में बढ़-चढ़कर भाग लिया और भंगाणी के युद्ध में विशेष वीरता दिखाई। दशमेश पिता ने प्रसन्न होकर भाई साहिब को गुरु-घर का दीवान नियुक्त किया।

सन् १६९९ ई की वैसाखी वाले दिन... खालसे की सृजना के समय भाई मनी राम जी ने दशमेश पिता से 'अमृत छका' और 'भाई मनी सिंघ' बन गये। इसी दिन भाई साहिब के १२ भाइयों और पांच पुत्रों ने भी अमृत छका। इन सभी ने बाद में शहादतें प्राप्त कीं। भाई साहिब के पांचों पुत्र चमकौर की जंग में शहीद हुए। मदमस्त हाथी को 'नागणी' के एक ही वार से मार गिराने वाला भाई बचित्तर सिंघ भी भाई मनी सिंघ जी का ही पुत्र था।

भाई मनी सिंघ जी ने गुरमति को समझने के लिए भाई गुरदास जी की वारों का अध्ययन किया। जब दशमेश पिता जी ने देखा कि भाई साहिब की रुचि अध्ययन-चिंतन की ओर अधिक है, तब आपको धर्म-ग्रंथी के अध्ययन-विश्लेषण की सेवा सौंपी गई। जल्दी ही भाई मनी सिंघ जी संस्कृत एवं फारसी के विद्वान बन गये। दशमेश पिता ने भाई साहिब की विद्वता से प्रभावित होकर उन्हें 'ज्ञानी' का खिताब बख़्शिश किया। यही नहीं, गुरु साहिब ने बाद में तलवंडी साबो में 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' की हजूरी बीड़ को लिपिबद्ध (पुनः लिखना) करने की सेवा भी आपको ही सौंपी।

दशमेश पिता के ज्योति-जोत समाने के बाद भाई मनी सिंघ जी श्री हरिमंदर साहिब का प्रबंध देखते रहे। 'बंदई खालसा' और 'तत्त खालसा' के विवाद को समाप्त कराने में भाई साहिब ने विशेष भूमिका निभाई।

सन् १७३३ ई में लाहौर का सूबेदार जकरिया ख़ान दीवाली के अवसर पर श्री हरिमंदर साहिब में एकत्र हुए सिक्खों को घेर कर खत्म करने की साजिश कर रहा था, परंतु भाई मनी सिंघ जी ने सिक्खों को इसकी सूचना पहले दे दी। दीवाली पर कोई सिक्ख संगत न आई। ज़करिया ख़ान ने झल्लाकर भाई मनी सिंघ जी को गिरफ़्तार कर लिया और लाहौर के नखास चौक में बंद-बंद काटकर शहीद कर दिया। यहां अब 'गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब' सुशोभित है।

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी द्वारा वर्ष २०१२-१३ का बजट सर्वसम्मति से पास

श्री अमृतसर : ३ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी की एकत्रता में हाज़िर सदस्य साहिबान की सहमति के उपरांत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव स. सुखदेव सिंघ भौर तथा सचिव स. दलमेघ सिंघ द्वारा वर्ष २०१२-१३ का वार्षिक अनुमानित बजट छः अरब पैंसठ करोड़ छिआलीस लाख तेईस हज़ार आठ सौ चौंतीस रुपये पेश किया गया, जो हाज़िर सदस्य साहिबान द्वारा सर्वसम्मति से जैकारे के रूप में प्रवान किया गया। इस बार का वार्षिक बजट गत वर्ष से चौरानवें करोड़ अड़तालीस लाख छः हज़ार नौ सौ तेरह रुपये ज्यादा है। कार्यकारिणी द्वारा पास किए गए अनुमानित बजट में से ३१ जुलाई, २०१२ तक के ख़र्चों को सर्वसम्मति से प्रवानगी दी गई है।

एकत्रता के उपरांत पत्रकारों से बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का आम चुनाव १८ सितंबर, २०११ को हुआ था। ५ दिसंबर, २०११ को १५ सदस्य साहिबान नामजद किये गए थे। एक महीने के भीतर नये हाऊस की पहली मीटिंग बुलाकर उसमें अध्यक्ष आदि तथा कार्यकारिणी के सदस्यों का चुनाव होना था, जो सरकार द्वारा नहीं करवाया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कामकाज को चलता रखने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में पटीशन दाख़िल की गई, जिस पर १७ फरवरी, २०१२ को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए नये चुने गए हाऊस के सदस्यों को प्रवानगी दे दी थी तथा केंद्र सरकार को छः सप्ताह के अंदर इस पर अगली कार्यवाही करने के लिए कहा, परंतु केंद्र सरकार द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कामकाज को प्रभावित होने से रोकने के लिए तथा ३१ मार्च, २०१२ तक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का वार्षिक बजट पास करने में हो रही देरी के प्रति शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में दोबारा पटीशन दायर की गई थी। माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा ३० मार्च, २०१२ को फैसला सुनाते समय १७ फरवरी, २०१२ वाले फैसले में संशोधन करते हुए नवंबर, २०१० वाली कार्यकारिणी को कामकाज की प्रवानगी दी है। उन्होंने कहा कि माननीय सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार आज शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का वार्षिक बजट वर्ष २०१२-१३ के लिए पास किया गया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अध्यक्षता में शुरू हुई एकत्रता में स. रघूजीत सिंघ वरिष्ठ उपाध्यक्ष, स. केवल सिंघ बादल कनिष्ठ उपाध्यक्ष, स. सुखदेव सिंघ भौर महासचिव, स. सूबा सिंघ डब्बवाली, स. रजिंदर सिंघ महिता, स. दिआल सिंघ कोलिआंवाली, स. निरमैल सिंघ जौलां कलां, स. करनैल सिंघ पंजोली, स. मोहन सिंघ बंगी, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला, स. रामपाल सिंघ बहिणीवाल, स. मंगल सिंघ तथा स. भजन सिंघ शामिल हुए।

इस एकत्रिता में पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. दलमेघ सिंघ, अपर सचिव- स. तरलोचन सिंघ, स. सतबीर सिंघ, स. मनजीत सिंघ स. महिंदर सिंघ तथा उप सचिव-- बलविंदर सिंघ, स. दिलजीत सिंघ, स रणजीत सिंघ के अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स की जनवरी, २०१२ में हुई परीक्षा का परिणाम घोषित

श्री अमृतसर : २६ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा सिक्ख धर्म की प्रारंभिक जानकारी घर-घर तक पहुंचाने हेतु चलाये जा रहे द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स में जिन विद्यार्थियों ने जनवरी, २०१२ में पहले वर्ष तथा द्वितीय वर्ष की परीक्षा दी थी उसका परिणाम जारी कर दिया गया है। परिणाम जारी करते हुए स. सतबीर सिंघ, अपर सचिव, धर्म प्रचार कमेटी, उप सचिव तथा डाइरेक्टर पत्राचार कोर्स स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा ने बताया कि पहले वर्ष के विद्यार्थी स. जसपालवीर सिंघ जलंधर ने ४०० में से ३४६ अंक लेकर पहला स्थान, स. करतार सिंघ सुजानपुर (उ. प्र.) ने ३४४ अंक लेकर दूसरा स्थान और स. हरमीत सिंघ फतहिगढ़ साहिब ने ३३९ अंक लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा पहले वर्ष के ३९ विद्यार्थी मैरिट सूची में आये। उन्होंने बताया कि दूसरे वर्ष के विद्यार्थियों में से बीबी परविंदर कौर बटाला ने ४०० में से ३४९ अंक लेकर पहला स्थान; बीबी कुलदीप कौर श्री मुकतसर साहिब ने ३४७ अंक लेकर दूसरा स्थान तथा बीबी गुरजीत कौर भगतपुर (गुरदासपुर) ने ३४५ अंक लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा दूसरे वर्ष के ५१ विद्यार्थी मैरिट सूची में आये।

स. सतबीर सिंघ ने बताया कि जो विद्यार्थी पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर आए हैं उनको क्रमश: ७१००, ५१००, ३१०० रुपये नकद इनाम तथा मैरिट में ८०% से ज्यादा अंक प्राप्त करने वाले पहले ५१ विद्यार्थियों को ११०० रुपये प्रति विद्यार्थी इनाम देकर धर्म प्रचार कमेटी द्वारा सम्मानित किया जायेगा। उन्होंने कहा कि जनवरी, २०१२ की परीक्षा में बैठे समूह विद्यार्थी अपना परिणाम वेबसाइट **www.sgpc.net** पर देख सकते हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान व मैरिट में आए एवं पास होने वाले विद्यार्थियों को मुबारकबाद देते हुए यह आशा प्रकट की कि इस कोर्स से जुड़े विद्यार्थी सिक्ख धर्म की सर्वपक्षीय प्रारंभिक जानकारी हासिल करके सिक्ख धर्म की विशेषता तथा विलक्षणता को विश्व स्तर पर प्रचारित एवं संचारित करने में सहायता करेंगे।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०५-२०१२